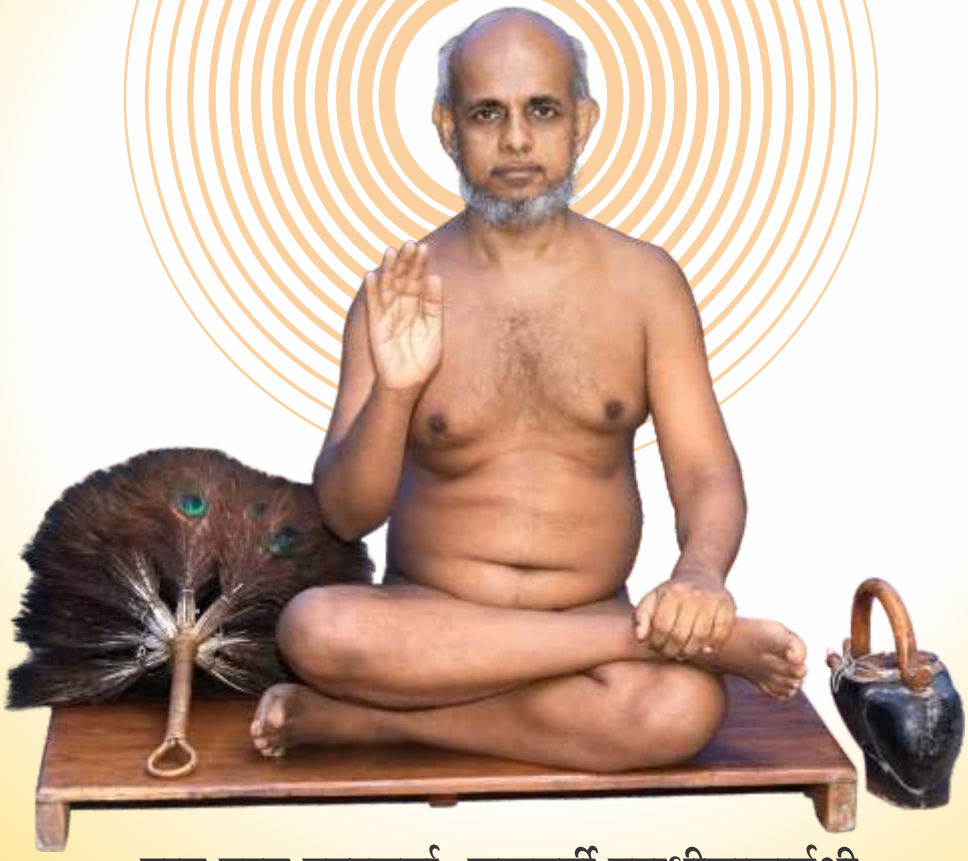

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री

सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

सुविधि–परिवार के द्वारा आयोजित

जिनवाणी-महोत्सव

सहस्रग्रन्थसंग्रह

* जन्मदिवस 19–03–1971 * मुनिदीक्षा–11–05–1989 * आचार्यपद– 20–06–2004

पट्टाधीशपद– 24–12–2010 (20–06–2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणा:–

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी–जुलाई 2004) (अक्षयज्योति–अक्तूबर 2004)

विशद पंचविधान संग्रह

कृतिकार : परम पूज्य आचार्यश्री विशदसागर जी महाराज

प्राप्ति स्थान :
विशद साहित्य केन्द्र श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, कुआँ वाला,
जैनपुरी रेवाड़ी (हरियाणा)

(परम्परानायक)

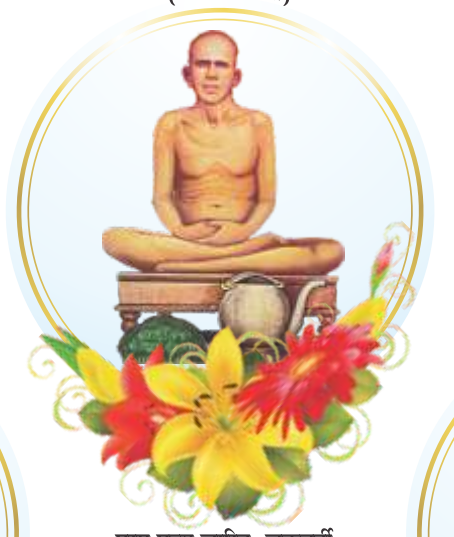

परम पूज्य चारित्र–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज
(अंकलीकर)

(द्वितीय पट्टाधीश)

परम पूज्य तीर्थभक्त–शिरोमणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

(तृतीय पट्टाधीश)

परम पूज्य सिद्धान्त–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्रायः होता है। फलतः उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें।

मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्त्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तृत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि–परिवार

विशद
पञ्च विधान संग्रह

- वाग्ज्योति स्वरूप 1008 श्री वासुपूज्य विधान
- शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान
- सर्व मंगलदायक श्री नेमिनाथ पूजन विधान
- श्री 1008 श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ विधान पूजन
- विघ्न विनाशक 1008 श्री महावीर पूजन विधान

रचयिता :

परम पूज्य क्षमामूर्ति, साहित्य रत्नाकर
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

कृति – **विशद पञ्च विधान संग्रह**

कृतिकार – **प.पू. क्षमामूर्ति, साहित्य रत्नाकर आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज**

अवसर – **बड़ी चौपड़, जयपुर पर हुई धर्म सभा के अवसर पर प्रकाशित**

संस्करण – प्रथम– मई, 2008

प्रतियाँ – 1000 प्रति

संकलन – मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज एवं
क्षुल्लक श्री 105 विसोमसागरजी महाराज

संपादन – ब्र. ज्योति दीदी, आस्था दीदी, सपना दीदी

, आरती दीदी

सम्पर्क सूत्र – मो.:9660996425, 9829127533, 9829076085

प्राप्ति स्थल – 1. जैन सरोवर समिति, निर्मलकुमार गोधा,
2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट, मनिहारों का रास्ता, जयपुर
फोन : 0141-2319907 (घर), 3294018 (आॅ.), मो.: 9414812008

2. श्री 108 विशद सागर माध्यमिक विद्यालय, बरौदिया कलाँ, जिला– सागर (म.प्र.) ● फोन : 07581-274244

3. विवेक जैन, 2529, मालपुरा हाऊस, मोतिसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर ● फोन : 2503253, मो.: 9414054624

4. श्री राजेशकुमार जैन ठेकेदार, ए-107, बुध विहार, अलवर
मो.: 9414016566

5. वीर प्रेस मनिहारों का रास्ता, जयपुर

मुद्रक : राजू ग्राफिक आर्ट (संदीप शाह)
जयपुर ● फोन : 2313339, मो.: 9829050791

अपनी बात

A_mdeH$sgKZam{ÌHo$g_`B©gmZA§Yoao H$_ao_|~¡R>mhþAmhmo Vmo Am±I~ÝXaho `m Iwbr, H$moB© \$H©$Zht nS>Vm Ÿ& Am±I|~ÝXhm| Vmo ^r A§YH$ma hmoJm Am¡a Iwbr hm| Vmo ^r A§YH$ma hr hmoJm {H$ÝVwàH$me Ûmam hmoZo na gy`©H$m CX` hmoVo hr A§YH$ma Xya hmoZo bJVm h¡& Amn Eogo gy`©H$_ao_|AnZr ap¸_m|gpàH$me {~Iocahm hmo, njr H$bad H$aZo bJ| [\$a ^r B©ÝgmZ Am±Io ~ÝX{H$E ~¡R>m aho Vmo Adí`hr \$H©$ nS>Vm h¡Ÿ& aÌVHo$ A§YH$ma _|B©gmZ H$s H$moB© {Oå_oXmar Zht Wr Š`m{H$ A§YH$ma nyU©dmVmda Wm {H$ÝVwàH$me hmoZo na ^r Am±I|Z Imobo Vmo `hCgH$r AkmZVm h¡Ÿ& ch Am±I Imob H$a àH$me H$mo mg H$Vm h¡Ÿ& new H$m Ord Vmo A§Yoar aÌVHo$ g_mZ h¡, AmË_H$s g§^mdZm Zht {H$ÝVwB©gmZ hmo H$a ^r AmË_Om¾{V Z H$a| Vmo `hXw^m©½` h¡Ÿ& h_B©gmZ h¢ Vmo h_|OmZZm h¡ Am¡a M¡VÝ` H$m {MÝVZ H$a "{dfX' MoVZm H$s AZw^y{V _| a_U H$aZm h¡Ÿ& ch OmJ¥{V Amam Ü` A©Zm go hr gå^d h¡Ÿ& AmMm`©g_§V^Ð ñdm_r Or Zo H$hm h¡ ••

देवाधिदेव चरणे, परिचरणं सर्व दुःख निर्हरणम् ।
कामदुहि कामदाहिनी, परिचिनुयादादृतो नित्यम् ।।

भावार्थ : इच्छित फल देने वाले, विषय वासना को नष्ट करने वाले देवों के देव अरिहंत देव के चरणों की पूजा सब दुःखों को नाश करने वाली है इसलिए आदर भाव सहित प्रतिदिन पूजन करना चाहिए। उसके लिए यह– **''विशद पञ्च विधान संग्रह''** जो अवश्य ही अज्ञान के अन्धकार में ज्ञान के प्रकाश का काम करेगा। निष्कांक्ष भक्ति मोक्ष मार्ग में सेतु का काम करेगी तथा मण्डल विधान कर असीम पुण्य का अर्जन करना चाहिए। जिसके लिए इन पञ्च विधानों का संग्रह ब्र. ज्योति, आस्था ने किया।

हह आचार्य विशदसागर

प्राक्कथन

चौबीस तीर्थंकरों के प्रत्येक तीर्थकाल में भगवान की दिव्यध्वनि के द्वारा प्रत्येक प्राणी को मोक्षमार्ग का उपदेश मिलता रहा। जब–जब एक तीर्थंकर से दूसरे तीर्थंकर के काल में अन्तराल पड़ा तो आम जन ने उनकी वीतराग मुद्रा से अंकित पद्मासन या खड़गासन प्रतिमा बनाकर उसकी प्रतिष्ठा की। इस प्रकार तीर्थंकरों की प्रतिमाओं के आधार पर चतुर्थकाल में भी अन्तराल के समय जीवों ने अपना कल्याण किया। भगवान महावीर के 62 वर्ष तक तो केवली के दर्शन भाग्यशालियों को उपलब्ध रहे परन्तु उसके बाद इन वर्षों में चतुर्विध संघ ने भगवान की प्रतिमाओं के आधार पर ही उनके दर्शन और पूजन स्तुति आदि करके परम्परागत गुरु–उपदेशों से ही आत्म–कल्याण किया। पंडित आशाधरजी के अनुसार ''कलौधर्म स्थिति: खलु चैत्यालय मूला।'' अर्थात् इस कलिकाल में धर्म की परम्परा चैत्यालयों (जिन मंदिरों) के आधार पर ही चलेगी। इसीलिए सर्वत्र जिनालयों की स्थापना है। आवश्यकतानुसार नये जिन मन्दिरों का निर्माण व जिनबिम्बों की प्रतिष्ठा भी होती है।

श्रावकों के लिए दान व पूजा ही पापाश्रवों के बचने का मुख्य आधार है। इसी से कल्याण का मार्ग प्रशस्त होता है। जिनेन्द्र का अभिषेक और पूजा जिनत्व के समीप आने का एक उपक्रम है। जिनालय मानो आध्यात्मिकता की एक प्रयोगशाला है। जहाँ जिनबिम्ब के सम्मुख जाकर हम अभिषेक और पूजन द्वारा स्वयं को निर्मल बनाने का प्रयोग करते हैं। अभिषेक पूजा का प्रथम अनिवार्य अंग है। अभिषेक पूर्वक ही पूजा सम्पन्न होती है।

जिनेन्द्र पूजा गहन आत्मीयता से भरकर अपने श्रद्धेय के प्रति आदर–सम्मान प्रकट करने का एक सुखद अवसर है। जिनेन्द्र पूजा काम, क्रोध, लोभ आदि विकारी भावों से चेतना को मुक्त कराने की एक प्रक्रिया है। पूजा हमारी आंतरिक पवित्रता को उद्घाटित करने का सच्चा अनुष्ठान है। अत: पूजा के दौरान भगवान के गुणों को आत्मसात कर उन जैसा बन जाने की भावना रखनी चाहिये। पूजा करते समय देव–गुरु–शास्त्र के स्वरूप का चिंतवन और

निज का आत्मावलोकन दोनों साथ-साथ चलते रहते हैं, इसीलिए पूजा आत्म विकास में सहयोगी अनेक गुणों का समन्वित रूप है। वीतरागी अर्हन्त प्रभु की पूजा करने के लिए सभी प्रकार के संकल्प-विकल्प एवम् रागद्वेष मोह आदि विकारी परिणामों को मन से हटाकर कषायों की मन्दता करते हुए भक्तिपूर्वक भगवान के गुणों का स्तवन करना चाहिए। पूजा में भक्ति की प्रमुखता है। भक्ति प्रार्थना है। भक्ति मस्तिष्क से नहीं हृदय से होती है; क्योंकि हृदय में तर्क-वितर्क नहीं अपितु दृढ़ श्रद्धा होती है। श्रद्धा ही समर्पण है।

पूज्य राष्ट्रसंत गणाचार्य 108 श्री विरागसागरजी महाराज के परम दीक्षित शिष्य पूज्य क्षमामूर्ति आचार्य 108 श्री विशदसागरजी महाराज अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी भक्त वत्सल संत हैं। सम-सामायिक विषयों पर आपका चिन्तन गहन एवम् विशद है। पूज्य आचार्य 108 श्री भरतसागरजी महाराज की सुदीर्घ दृष्टि ने आपको आचार्य पद प्रदान किया आपकी लेखनी बराबर सर्व सुलभ आगमनिष्ठ साहित्य सृजन में तल्लीन रहती हैं। सम्प्रति अनेक विधानों की सहज रचना आपकी महत्त्वपूर्ण कृतियाँ है। विघ्नहरण पार्श्वनाथ विधान पूजन की आज पूरे भारत में गूंज है। सर्वसिद्धि प्रदायक श्री भक्तामर महामण्डल विधान भी आपकी श्रेष्ठ रचना है। निरन्तर बढ़ती मांग ही इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। लम्बे समय से मूलनायक जिनबिम्ब के प्रति विशेष बहुमान के भाव से विधान पूजन की आवश्यकता प्रतीत हो रही थी। इसी से आचार्यश्री ने अनेक लघु काय विधानों की रचना कर हम पर बहुत बड़ा उपकार किया है। सम्प्रति **वासुपूज्य, मुनिसुव्रत, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ एवम् महावीर भगवान** की विधान रचनाओं का समेकित संकलन एक ही कृति में प्रकाशित करवाने की भावना व्यक्त होती रही है। फलस्वरूप परम पूज्य आचार्य 108 श्री विशदसागरजी महाराज द्वारा रचित पञ्च विधानों का एक संकलन बहुत बड़े हर्ष का विषय है।

चरणरज :

प्रतिष्ठाचार्य पं. विमलकुमार जैन (बनेठा)

कार्यालय :
5/216 मालवीय नगर, जयपुर ●98291-95197
श्री नन्दीश्वर विशद साधना केन्द्र
जैन वाटिका, पदमपुरा-जयपुर

AZwHk$ {UH$m

क्र.सं.	विवरण	पृष्ठ सं.
1	मंगलाष्टक	
2	मण्डप प्रतिष्ठा विधि	
3	मण्डप शुद्धि की संक्षिप्त विधि	
4	अभिषेक विधि	
5	विनय पाठ	
6	पूजा पीठिका	
7	पूजा प्रतिज्ञा पाठ	
8	स्वस्ति मंगल पाठ	
9	परमर्षि स्वस्ति मंगल पाठ	
10	श्री देव शास्त्र गुरु पूजन (समुच्चय)	
11	श्री पंच परमेष्ठी समुच्चय पूजन	
12	श्री नवदेवता पूजा	
13	विनायक यंत्र पूजा	
14	अर्घावली	
15	वाग्ज्योति स्वरूप 1008 श्री वासुपूज्य विधान	
16	शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान	
17	सर्व मंगलदायक श्री नेमिनाथ पूजन विधान	
18	श्री 1008 श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ विधान पूजन	
19	विघ्न विनाशक 1008 श्री महावीर पूजन विधान	
20	हवन विधि	
21	समुच्चय महार्घ	
22	शांतिपाठ (भाषा)	
23	विसर्जन	
24	प.पू. 108 आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की पूजन	
25	प.पू. 108 आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की आरती	
26	प.पू. 108 आचार्य श्री विशदसागरजी द्वारा रचित साहित्य	

मंगलाष्टक

–आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज

पूजनीय इन्द्रों से अर्हत्, सिद्ध क्षेत्र सिद्धी स्वामी।
जिन शासन को उन्नत करते, सूरी मुक्ती पथगामी।।
उपाध्याय हैं ज्ञान प्रदायक, साधु रत्नत्रय धारी।
परमेष्ठी प्रतिदिन पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।1।।

नमित सुरासुर के मुकुटों की, मणिमय कांति शुभ्र महान्।
प्रवचन सागर की वृद्धि को, प्रभु पद नख हैं चंद्र समान।।
योगी जिनकी स्तुति करते, गुण के सागर अनगारी।
परमेष्ठी प्रतिदिन पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।2।।

सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण युत, निर्मल रत्नत्रयधारी।
मोक्ष नगर के स्वामी श्री जिन, मोक्ष प्रदाता उपकारी।।
जिन आगम जिन चैत्य हमारे, जिन चैत्यालय सुखकारी।
धर्म चतुर्विध पंच पाप के, नाशक हों मंगलकारी।।3।।

तीन लोक में ख्यात हुए हैं, ऋषभादि चौबिस जिनदेव।
श्रीयुत द्वादश चक्रवर्ति हैं, नारायण नव हैं बलदेव।।
प्रति नारायण सहित तिरेसठ, महापुरुष महिमाधारी।
पुरुष शलाका पंच पाप के, नाशक हों मंगलकारी।।4।।

जया आदि हैं अष्ट देवियाँ, सोलह विद्यादिक हैं देव।
श्रीयुत तीर्थंकर के माता–पिता यक्ष–यक्षी भी एव।।
देवों के स्वामी बत्तिस वसु, दिक् कन्याएँ मनहारी।
दश दिक्पाल सहित विघ्नों के, नाशक हों मंगलकारी।।5।।

सुतप वृद्धि करके सर्वौषधि, ऋद्धी पाई पञ्च प्रकार।
वसु विधि महा निमित् के ज्ञाता, वसुविधि चारण ऋद्धीधार।।
पंच ज्ञान तिय बल भी पाये, सप्त बुद्धि ऋद्धीधारी।
ये सब गण नायक पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।6।।

आदिनाथ स्वामी अष्टापद, वासुपूज्य चंपापुर जी।
नेमिनाथ गिरनार गिरि से, महावीर पावापुर जी।।
बीस जिनेश सम्मेदशिखर से, मोक्ष विभव अतिशयकारी।
सिद्ध क्षेत्र पांचों पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।7।।

व्यंतर भवन विमान ज्योतिषी, मेरु कुलाचल इष्वाकार।
जंबू शाल्मलि चैत्य वृक्ष की, शाखा नंदीश्वर वक्षार।।
रूप्यादि कुण्डल मनुजोत्तर, में जिनग्रह अतिशयकारी।
वे सब ही पांचों पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।8।।

तीर्थंकर जिन भगवंतों को, गर्भ जन्म के उत्सव में।
दीक्षा केवलज्ञान विभव अरु, मोक्ष प्रवेश महोत्सव में।।
कल्याणक को प्राप्त हुए तब, देव किए अतिशय भारी।
कल्याणक पांचों पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।9।।

धन वैभव सौभाग्य प्रदायक, जिन मंगल अष्टक धारा।
सुप्रभात कल्याण महोत्सव, में सुनते–पढ़ते न्यारा।।
धर्म अर्थ अरु काम समन्वित, लक्ष्मी हो आश्रयकारी।
मोक्ष लक्ष्मी 'विशद' प्राप्त कर, होते हैं मंगलकारी।।10।।

।। इति मंगलाष्टकम् ।।

मण्डप प्रतिष्ठा विधि

ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः नमोऽर्हते श्रीमते पवित्रतर जलेन मण्डप शुद्धि करोमि स्वाहा (मण्डप पर जल से शुद्धि करें।)

मण्डप स्थित मंगल कलश में हल्दी सुपारी रखने का मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः मंगल कलशे मंगल कार्य निर्विघ्न परिसमाप्त्यर्थं पुंगी फलानि प्रभृति वस्तूनि प्रक्षिपामीति स्वाहा।

ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः नमोऽर्हते श्रीमते सर्व रक्ष रक्ष हूँ फट स्वाहा। (मंगल कलश में हल्दी, सुपारी, पीली सरसों, नवरत्न, सवा रुपया हाथ में लेकर सावधानीपूर्वक रख दें।)

निम्न मन्त्रपूर्वक पंचवर्ण सूत्र से मण्डप को तीन बार वेष्टित करें।

यत्पंचवर्णाक्तपवित्रसूत्रं, सूत्रोक्ततत्त्वाभमनेकमेकम्।
तेनत्रिवारं परिवेष्टयामः, शिष्टेष्टयागाश्रयमण्डपेन्द्रम्।।

मन्त्र : ॐ अनादिपरमब्रह्मणे नमो नमः। ॐ ह्रीं जिनाय नमो नमः। ॐ चतुर्मंगलाय नमो नमः। ॐ चतुर्लोकोत्तमाय नमो नमः। ॐ चतुःशरणाय नमो नमः अस्य..... (विधान का नाम) नामधेय यजमानस्य ..... (विधान कर्ता का नाम) नामधेय-याजकस्य च सुरासुरनरनृपयक्ष देवतागण गन्धर्वस्य कुलगोत्रनामदेशादिभागृहाराम-परिचारकस्यपुण्याहमंत्रैः पुण्याहं वाचयेत् (करोमि) प्रीयंतां ते कुलं, प्रीयंतां ते आयुः प्रीयंतां ते मातृपितृसुहृद् बन्धुवर्गस्य प्रीयंतां। त्वं जीव, त्वं विजयस्व, ते मांगल्यं-मांगल्यं भवतु। सपरिवार वर्धस्व-वर्धस्व विजयस्व-विजयस्व, भवतु भवतु सर्वदा शिवं कुरु।।

श्रीमण्डपाभं मिलितत्रिलोकी-श्रीमंडितंपण्डितपुण्डरीकं।
श्रीमण्डपं खण्डितपापतापं तमेनमर्घ्येण च मण्डयामः।।

मण्डपायार्घ्यं दद्यात्। (मण्डप के लिये अर्घ्य चढ़ावें।) पश्चात् पूर्वादि चारों दिशाओं में वेदी पर कुमुद आदि द्वारपालों की स्थापना-पूर्वक अर्घ्य समर्पण करें। इन्द्र चतुर्निकाय देवों को इस महोत्सव में अपने-अपने भाग-नियोग को पूर्ण करने की सूचना करता है।

मण्डप शुद्धि की संक्षिप्त विधि

नीचे लिखे मंत्र को 5 बार पढ़कर मण्डप पर जल छिड़क देवें।

ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः प्रतिष्ठा मण्डप वेदी प्रभृति स्थानानां शुद्धिं कुर्मः।

मण्डप की आठों दिशाओं में क्रमशः नीचे लिखे मंत्र पुष्प क्षेपते हुए मण्डप शुद्धि करें।

1. ॐ आं क्रौं ह्रीं नमः चतुर्णिकाय देवाः सर्व विघ्नः निवारणार्थाय... कार्य सिद्धयार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा।
2. ॐ आं क्रौं ह्रीं पूर्व दिशा के प्रतिहारी कुमुदेश्वर देवाः..... विघ्न निवारणार्थाय..... कार्य सिद्धयार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा।
3. ॐ आं क्रौं ह्रीं आग्नेय दिशा के प्रतिहारी यमेन्द्र देवाः..... विघ्न निवारणार्थाय..... कार्य सिद्धयार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा।
4. ॐ आं क्रौं ह्रीं दक्षिण दिशा के प्रतिहारी वामन देवाः..... विघ्न निवारणार्थाय..... कार्य सिद्धयार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा।
5. ॐ आं क्रौं ह्रीं नैऋत्य दिशा के प्रतिहारी नैऋतेन्द्र देवाः..... विघ्न निवारणार्थाय.....कार्य सिद्धयार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा।
6. ॐ आं क्रौं ह्रीं पश्चिम दिशा के प्रतिहारी अंजन देवाः..... विघ्न निवारणार्थाय..... कार्य सिद्धयार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा।
7. ॐ आं क्रौं ह्रीं वायव्य दिशा के प्रतिहारी वायुकुमारः देवाः.....विघ्न निवारणार्थाय..... कार्य सिद्धयार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा।
8. ॐ आं क्रौं ह्रीं उत्तर दिशा के प्रतिहारी पुष्पदन्त देवाः..... विघ्न निवारणार्थाय..... कार्य सिद्धयार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा।
9. ॐ आं क्रौं ह्रीं ईशान दिशा के प्रतिहारी ऐशानेद्र देवाः..... विघ्न निवारणार्थाय..... कार्य सिद्धयार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा।
10. ॐ आं क्रौं ह्रीं वास्तुकुमारदेवाः..... मेघकुमारदेवाः, नागकुमारदेवाः..... विघ्न निवारणार्थाय ..... कार्य सिद्धयर्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा।

झण्डारोहण

ॐ ह्रीं क्षीं भू: स्वाहा। (जल से शुद्धि)

ॐ ह्रीं अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्योऽर्घ्यम्। (अर्घ चढ़ावें)

ॐ ह्रीं सर्वोषधिद्वारा ध्वजदण्ड शुद्धि करोमि।

ॐ ह्रीं श्रीं नमोऽर्हते पवित्रजलेन ध्वजदण्ड शुद्धिं करोमि।

ॐ ह्रीं त्रिवर्ण सूत्रेण ध्वजदण्डं परिवेष्टयामि। ॐ णमो अरहंताणं स्वाहा। रत्नत्रयात्मकतयाऽभिमतेऽत्रदण्डे, लोकत्रये प्रकृत केवलबोधरूपम्। संकल्प्य पूजितमिदं ध्वजमर्च्य लग्ने, स्वारोपयामि सन् मंगल वाद्य घोषे।।

ॐ णमो अरहंताणं स्वस्ति भद्रं भवतु सर्वलोकस्य शांतिर्भवतु स्वाहा तथा ॐ ह्रीं अर्हं जिनशासन पताके सदोच्छिता तिष्ठ तिष्ठ भव भव वषट् स्वाहा।

अंगन्यास विधि

मंगलाष्टक के बाद शरीर की रक्षा और ततद दिशाओं से आने वाले विघ्नों की निर्वृति के लिए नीचे लिखे अनुसार अंगन्यास किया जावे दोनों हाथों के अंगुष्ठ से लेकर कनिष्ठकापर्यंत अंगुलियों में क्रम से अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु परमेष्ठी की स्थापना करें। पूजन, जाप या हवन में बैठने वाले महाशय सर्वप्रथम दोनों हाथों के अंगूठों को बराबर से मिलाकर सामने करें तथा मंत्र बोलने पर अपने मस्तक से स्पर्श करें।

ॐ हां णमो अरिहंताणं हां अंगुष्ठाभ्यां नम:।

यहाँ पर अपने दोनों हाथों के अंगूठों को जोड़कर मस्तक से लगाना है।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं तर्जनीभ्यां नम:।

यहाँ पर अपने दोनों हाथों की तर्जनी अंगुलियों को मस्तक से लगाना है।

ॐ हूँ णमो आयरियाणं हूँ मध्यमाभ्यां नम:।

यहाँ पर अपने दोनों हाथों की मध्यमा (बीच) की अँगुलियों को मस्तक से लगाना है।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं, अनामिकाभ्यां नम:।

यहाँ पर अपने दोनों हाथों की अनामिका अंगुलियों को मस्तक से लगाना है।

ॐ ह्र: णमो लोए सव्वसाहूणं ह्र: कनिष्ठकाभ्यां नम:।

यहाँ पर दोनों हाथों को कनिष्ठा अँगुलियों को मस्तक से लगाना है।

ॐ हां ह्रीं हूं ह्रौं ह्र: करतलाभ्यां नम:।

यहाँ दोनों गदियों को मस्तक से लगाना है।

ॐ हां ह्रीं हूं ह्रौं ह्र: कर पृष्ठाभ्यां नम:।

यहाँ पर दोनों हाथों की हथेलियों को मस्तक से लगाना है।

ॐ हां णमो अरिहंताणं हां मम शीर्ष रक्ष रक्ष स्वाहा।

यहाँ पर दाहिने हाथ से अपने सिर को स्पर्श करें।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं मम वंदनं रक्ष रक्ष स्वाहा।

यहाँ पर दाहिने हाथ से मुख का स्पर्श करना है।

ॐ हूँ णमो आयरियाणं हूँ मम हृदयं रक्ष रक्ष स्वाहा।

यहाँ पर दाहिने हाथ से हृदय स्पर्श करें।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं मम नाभिं रक्ष रक्ष स्वाहा।

यहाँ पर दाहिने हाथ से नाभि का स्पर्श करें।

ॐ ह्र: णमो लोए सव्वसाहूणं ह्र: मम पादौ रक्ष रक्ष स्वाहा।

यहाँ पर दाहिने हाथ से दोनों पैरों का स्पर्श करें।

ॐ हां णमो अरिहंताणं हां मम गात्रे रक्ष रक्ष स्वाहा।

यहाँ पर अपने शरीर का स्पर्श करना है।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं मम वस्त्रं रक्ष रक्ष स्वाहा।

यहाँ पर अपने वस्त्रों का स्पर्श करना है।

ॐ हूँ णमो आयरियाणं हूँ मम पूजा द्रव्यं रक्ष रक्ष स्वाहा।

अब अपनी पूजा की थाली का स्पर्श करें।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं मम स्थलं रक्ष रक्ष स्वाहा।

अपने आसन को देखकर मार्जन करें।

ॐ ह्र: णमो लोए सव्वसाहूणं ह्र: सर्व जगत् रक्ष रक्ष स्वाहा।

अपनी अंजली में जल लेकर चारों ओर फेंके।

ॐ ह्रीं अमृते अमृतोदभवे अमृत वर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ठ: ठ: ह्रीं स्वाहा।

अब अपनी अंजली में जल लेकर अपने सिर पर छोड़ें।

रक्षा सूत्र बंधन मंत्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्र: अ सि आ उ सा सर्वोपद्रव शांतिं कुरु कुरु ॐ नमोऽर्हते भगवते तीर्थंकर परमेश्वराय कर पल्लवे रक्षा वंधनं करोमि एतस्यं संमृद्धिरस्तु।

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नम: स्वाहा।

तिलक करण मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहत पराक्रमाय ते भवतु।

यहाँ पर सभी नौ स्थानों पर चंदन लगाएँ (मस्तक माया) सिर दोनों कान, गला, दोनों हाथ, हृदय एवं नाभि पर।

दिग्बंधन मंत्र

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां पूर्व दिशात समागतं विघ्नान् निवारय निवारय एतान् रक्ष रक्ष स्वाहा।

यहाँ पर सौधर्म इंद्र अपने दाहिने हाथ से पूर्व दिशा में पुष्प छोड़ें।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्री दक्षिण दिशात समागतं विघ्नान् निवारय निवारय एतान् रक्ष रक्ष स्वाहा।

अब दक्षिण दिशा में सभी इन्द्र पुष्प क्षेपण करें।

ॐ ह्रूँ णमो आयरियाणं ह्रूँ पश्चिम दिशात समागतं विघ्नान् निवारय निवारय एतान् रक्ष रक्ष स्वाहा।

अब पश्चिम दिशा में सभी पुष्प या पीली सरसों क्षेपण करें।

ॐ ह्रौ णमो उवज्झायाणं ह्रौ उत्तर दिशात समागतं विघ्नान् निवारय निवारय एतान् रक्ष रक्ष स्वाहा।

अब उत्तर दिशा में सभी लोग पीली सरसों या पुष्प क्षेपण करें।

ॐ ह्र: णमो लोए सव्वसाहूणं ह्र: सर्व दिशात समागतं विघ्नान् निवारय निवारय एतान् रक्ष रक्ष स्वाहा।

अब सभी समस्त एवं उर्ध्वलोक, अधोलोक, मध्यलोक में पीली सरसों क्षेपण करें।

परिणाम शुद्धि मंत्र

विधि विधातुं यजनोत्सवे डगेहादि मतूर्च्छम पनोद अनन्यचिता कृति मक्षिधमि स्वसिद्धि लक्ष्मीमपि हाप्यामि।

अब सभी लोग अपने-अपने गृहकार्यों को छोड़ दें। जब तक यह विधान चलेगा तब तक के लिए अपने गृह संबंधी सभी कार्यों से निवृत्ति होकर यह विधान करूँगा/करूँगी। मैं मन, वचन, काय से प्रतिज्ञा करता हूँ/करती हूँ।

रक्षा मंत्र

ॐ णमो अर्हते सर्व रक्ष रक्ष हूँ फट स्वाहा।

यहाँ पर पंड़ितजी सभी पात्रों पर पीली सरसों को सात बार मंत्रित करें।

शांति मंत्र

ॐ हूँ फट किरीटिं किरीटिं घातक-घातक पर विघ्नान स्फोटय स्फोटय सहस्र खण्डान कुरु कुरु पर मुद्रां छिन्द छिन्द पर मंत्रान् भिन्द भिन्द क्षां क्षं व: फट् स्वाहा।

पुष्प लेकर इस मंत्र को तीन बार पढ़कर सभी पात्रों पर पुष्प क्षेपण करें।

यज्ञोपवीत धारण मंत्र

ॐ नम: परम शांताय शांति कराय पवित्री करणायाहं रत्नत्रय चिह्न यज्ञोपवीतं दधामि मम गात्रं पवित्रं भवतु अर्हं नम: स्वाहा।

यहाँ पर सभी पात्रों को यज्ञोपवीत (जनेऊ) पहनावें (शादी-शुदा को दो जनेऊ पहनावें।)

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः ऐतेषां पात्र शुद्धि मंत्र सर्वांग शुद्धिः भवतु।

यहाँ पर पात्रों पर जल छिड़ककर पात्रों की अंतिम शुद्धि करें।

मंगल कलश स्थापना मंत्र

ॐ अद्य भगवतो महापुरुषस्य श्री मदादि ब्राह्मणो मते अस्मिन विधीयमाने श्री णमोकार महामंडल विधानकार्ये श्री वीर निर्वाण संवत्सर..... मासे .....पक्षे.....तिथौ.....वर्षे..... वासरे ..... नगरे/जैनेन्द्र मंदिरे....लग्ने भूमिं शुद्धयर्थं पात्र शुद्धयर्थं शांतयार्थं पुण्याहवाचनार्थं नवरत्न गन्ध पुष्पाक्षत श्री फलादिशोभितं शुद्ध प्रासुक तीर्थ जल पूरितं मंगल कलश स्थापनं करोमि श्रीं क्ष्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा।

नोटःह्ह यहाँ पर मंडल के उत्तर कोने में जल, अक्षत, पुष्प, सुपारी, हल्दी, 1.25 रुपया, श्रीफल और पुष्पमाला सहित मंगल कलश सौभाग्यवती महिला-पुरुष जोड़ी से स्थापना करवाएँ।

संकल्प मंत्र

ॐ जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्य खंडे.....देशे .....प्रान्ते..... नगरे श्री 1008 ..... जिनालये.....श्री वीर निर्वाण संवत्..... मासे..... पक्षे .....तिथौ..... वासरे शुभ वेलायां परमार्थानां देव शास्त्र गुरुणां सन्निधे सर्वकष्ट हरण श्री णमोकार महामण्डल विधान करिष्यामि इह संकल्पं कुर्मः। निर्विघ्न समाप्तिर्भवतु। अर्हं नमः स्वाहा।

दीपक स्थापना

रचिर दीप्तकरं शुभदीपकं सकल लोक सुखाकरमुज्वलम् ।
तिमिर जालहरं प्रकरं सदा किल धरामि सुमंगलकं मुदा ।।

(ॐ ह्रीं अज्ञान तिमिर हरं दीपकं स्थापयामि) इति स्वाहा।

आग्नेय कोण में दीपक स्थापित करें।

अभिषेक विधि

शोधये सर्व पात्राणी, पूजार्थानपि वारिभिः।
समाहितो यथाम्नाय, करोमि सकली क्रियाम्।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा नमः पवित्रतर जलेन सर्वांग शुद्धि करोमि इति स्वाहा।

श्री मज् जिनेन्द्र-मभि-वन्ध जगत त्रयेशम्।
स्याद् बाद-नायक-मनन्त-चतुष्टयार्हम ।।
श्री मूल संघ सुदृशां सुकृतैकहेतुः।
जिनेन्द्र - यज्ञ विधिरेष मयाभ्यधायि।।

ॐ ह्रीं श्री भूः स्वाहां प्रस्तावनाय पुष्पांजलि क्षिपेत।

श्री मन मंदर सुंदरे शुचि जलैः घौतः सदर भाक्षतेः।
पीठ मुक्ति वरम निघाय रचितम त्वत् पाद पद्मस्रजः।।
इंद्रोहम निज-भूषणार्थकमिदम यज्ञोपवीतं दधे।
मुद्रा कंकण शेखराण्यपि तथा जैनाभिषेकोत्सवे।।

ॐ णमो परम शान्ताय शांतिकराय पवित्रीकृतायांह रत्नत्रय स्वरूप यज्ञोपवीतं दधामि मम गात्रं पवित्रं भवतु अर्हं नमः स्वाहा।

यहाँ पर सभी पात्र आभूषण, कंकण, माला, अंगुठी, हार, मुकुट धारण करें।

आभूषण पहनने का मंत्र

सौगंध संगत मधुव्रतझङकृतेन।
संवर्ण्य मान मिव गंध मनिन्थ मादौ।।
आरोपयामि विवुधेश्वर वृन्द वन्ध।
पादारविन्द मभिवन्ध जिनोत्यमानाम ।।

ॐ ह्रीं परम पवित्राय नमः नवांगेषु चंदनानुनलेपनं करोमि।

भूमि शुद्धि मंत्र

ये संति केचिदिह दिव्य कुल प्रसूता। नागा: प्रभूत बल दर्प युता विवोधा:।।
सरंक्षणार्थममृतेन शुभेन तेषाम्। प्रक्षालयामि पुरत: स्नपनस्य भूमिम् ।।

ॐ ह्रीं जलेन भूमि शुद्धि करोमि स्वाहा।

क्षीरार्णं वस्य पयसां शुचिभि: प्रवाहै:। प्रक्षालितं सुर वरैर्यदनेक वारम।।
अत्युद्यमुद्यत महं जिनपाठपीठम। प्रक्षालयामि भव संभव तापहारि।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्र: नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर जलेन पीठ प्रक्षालनं करोमि इति स्वाहा।

श्री कार लेखन मंत्र

श्री शारदा सुमुख निर्गत बीज वर्णम।
श्री मांगलीक वरसर्व जनस्य नित्यम् ।।
श्रीमत् स्वयं क्षयति तस्य विनाश विघ्नं।
श्रीकार वर्ण लिखितं जिन भद्रपीठे ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकार लेखनं करोमि इति स्वाहा।

(यहाँ पर सिंहासन पर श्री लिखें।)

श्रीजी को विराजमान करने का मंत्र

यं पांडुकामल शिलागतमादिदेव। मस्नापयन सुरवर: सुर शैल मूर्ध्नि।।
कल्याण मीप्सुरहमक्षत तोय पुष्पै:। संभावयामि पुर एव तदीय विम्बम।।

ॐ ह्रीं श्री क्लीं ऐं अर्हं श्री धर्मतीर्थाधिनाथ भगवानइह पाण्डुक शिलापीठे स्थापनम् इति करोमि।

सत्पल्लवार्चितमुखान् कलधौतरूप्य। ताम्रारकूटघटितान पयसा सुपूर्णान्।।
सवांह्यतामिव गतांश्चतुर: समुद्रान्। संस्थापयामि कलशाञ्जिन वेदिकान्ते।।

ॐ ह्रीं चतुष्कोणेषु चतुकलश स्थापनं करोमि इति स्वाहा ।

(नीचे लिखे मन्त्र को बोलते हुए चारों कोनों पर स्थापित कलशों में जलधारा छोड़ें। पश्चात् पुष्प क्षेपण करें।)

ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्र: नमोऽर्हते भगवे श्रीमते पद्म-महापद्म-तिगिंच्छे केशरी-पुण्डरीक-महापुण्डरीक-गंगा-सिंधु-रोहित-रोहितास्या-हरित्-हरिकांता सीता-सीतोदा-नारी-नरकांता सुवर्णकूला-रूप्यकूला-रक्ता-रक्तोदा-क्षीराम्भोनिधि शुद्धजलं सुवर्णघटं प्रक्षिप्तं नवरत्न-गन्ध पुष्पाक्षताभ्यर्चितमामोदकं पवित्रं कुरु-कुरु झं झं झ्रौं झ्रौं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं असि आ उ सा नम: स्वाहा।

(नीचे लिखा श्लोक पढ़कर प्रतिमाजी के समक्ष अर्घ चढ़ावें, घण्टा, झालर आदि बजावें तथा उपस्थित जन-समुदाय जय-जयकार करें।)

आभि: पुण्याभिरद्भि: परिमल-बहुलेनामुना चन्दनेन,
श्रीदृक पेयैरमीभि: शुचिसदकचयैरूद्गमैरेभिरूद्धै:।
हृद्यैरेभिर्निवेद्यैर्मख भवनमिमैर्दीपैयदि्भ: प्रदीपै:,
धूपै: प्रायोभिरेभि: पृथुभिरपि फलैरेभिरीशं यजामि।।

ॐ ह्रीं श्रीं परमदेवाय श्री अर्हत् परमेष्ठिनेऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(नीचे लिखा श्लोक पढ़कर जल से अभिषेक करें।)

सास शुद्धि मंत्र

दूरावनम्र-सुरनाथ-किरीट-कोटी। संलग्न-रत्न किरणच्छवि धू सराङ्घ्रिम्।।
प्रस्वेद ताप मल मुक्तिमपि प्रकृष्टै:। भक्त्या जलैर्जिनपतिं बहुधाभिषिञ्चे ।।

(1) ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसन्तं श्री वृषभादिवर्धमानपर्यन्तं-चतुर्विंशति तीर्थंकर परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे..... देशे... प्रान्ते... नाम्नि नगरे... जिन चैत्यालय मध्ये अद्य वीर निर्वाण सं... मासोत्तम मासे... पक्षे... तिथौ... वासरे पौर्णाह्निक/माध्याह्निक/अपराह्निक समये मुनि-आर्यिका-श्रावक श्राविकाणां सकल कर्मक्षयार्थं जलेनाभिषिंचे नम: स्वाहा।

(2) ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं झं झं झ्वीं झ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा।

अर्घ ह्रह्र **उदक चन्दन ..... जिननाथ महंयजे।**

ॐ ह्रीं अभिषेकान्ते वृषभादिवीरान्तेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिधारा

ॐ नमः सिद्धेभ्यः। श्री वीतरागाय नमः। ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते, श्री पार्श्वतीर्थंकराय द्वादशगणपरिवेष्टिताय, शुक्लध्यान पवित्राय, सर्वज्ञाय, स्वयंभूवे, सिद्धाय, बुद्धाय, परमात्मने, परम सुखाय, त्रैलोक्य महीव्याप्ताय, अनंत संसार चक्र परिमर्दनाय, अनन्त दर्शनाय, अनंत वीर्याय, अनंत सुखाय, सिद्धाय, बुद्धाय, त्रैलोक्य वंशकराय, सत्य ज्ञानाय, सत्य ब्रह्मणे, धरणेन्द्र फणा मंडल मंडिताय, ऋष्यर्यिका श्रावक श्राविका प्रमुख चतुरसंघोपसर्ग विनाशाय, घाति कर्म विनाशाय, अघातिकर्म विनाशाय। अपवादं अस्माकं छिंद छिंद भिंद भिंद। मृत्यु छिंद छिंद भिंद भिंद। अति कामं छिंद छिंद भिंद भिंद। रति कामं छिंद छिंद भिंद भिंद। क्रोधं छिंद छिंद भिंद भिंद। सर्वोपसर्गं छिंद छिंद भिंद भिंद। सर्वविघ्न छिंद छिंद भिंद भिदं। अग्नि भयं छिंद छिंद भिंद भिंद। सर्वशत्रुं भयं छिंद छिंद भिंद भिंद। सर्व राजभयं छिंद छिंद भिंद भिंद। सर्व चोर भयं छिंद छिंद भिंद भिंद। सर्व दुष्ट भयं छिंद छिंद भिंद भिंद। सर्व मृग भयं छिंद छिंद भिंद भिंद। सर्व परमंत्र छिंद छिंद भिंद भिंद। सर्वात्म चक्र भयं छिंद छिंद भिंद भिंद। सर्व शूल रोगं छिंद छिंद भिंद भिंद। सर्व क्षय रोग छिंद छिंद भिंद भिंद। सर्व कुष्ठ रोग छिंद छिंद भिंद भिंद। सर्व क्रूररोगं छिंद छिंद भिंद भिंद। सर्व नरमारिं छिंद छिंद भिंद भिंद। सर्व गज मारिं छिंद छिंद भिंद भिंद। सर्वाश्व मारिं छिंद छिंद भिंद भिंद। सर्व गो मारिं छिंद छिंद भिंद भिंद। सर्व महिष मारिं छिंद छिंद भिंद भिंद। सर्व धान्य मारिं छिंद छिंद भिंद भिंद। सर्व वृक्ष मारिं छिंद छिंद भिंद भिंद। सर्व गुल मारिं छिंद छिंद भिंद भिंद। सर्वपत्र मारिं छिंद छिंद भिंद भिंद। सर्व पुष्प मारिं छिंद छिंद भिंद भिंद। सर्व फल मारिं छिंद छिंद भिंद भिंद। सर्व राष्ट्र मारिं छिंद छिंद भिंद भिंद। सर्व देश मारिं छिंद छिंद भिंद भिंद। सर्व विष मारिं छिंद छिंद भिंद भिंद। सर्व बेताल शाकिनी भयं छिंद छिंद भिंद भिंद। सर्व वेदनीयं छिंद छिंद भिंद

भिंद। सर्व मोहनीय छिंद छिंद भिंद भिंद। सर्व कर्माष्टकं छिंद छिंद भिंद भिंद। ॐ सुदर्शन महाराज चक्र विक्रम तेजो बल शौर्य शांतिं कुरु कुरु। सर्व जना नंदनं कुरु कुरु। सर्व भव्या नंदनं कुरु कुरु। सर्व गोकुला नंदनं कुरु कुरु। सर्व ग्राम नगर खेट कर्वट मंटब पत्तन द्रोणमुख संवाह नंदनं कुरु कुरु। सर्व लोकानंदनं कुरु कुरु। सर्व देशानंदनं कुरु कुरु। सर्व यजमानानंदनं कुरु कुरु। सर्व दुखं हन हन दह दह पच पच कुट कुट शीघ्रं शीघ्रं।

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु व्याधि व्यसनं वर्जितं।
अभयं क्षेमं आरोग्यं स्वस्तिरस्तु विधीयते।।

शिव मस्तु । कुल–गौत्र–धन–धान्यं सदास्तु। चंद्रप्रभु वासुपूज्य–मल्लि–वर्धमान पुष्पदंत–शीतल मुनिसुव्रत

नेमिनाथ–पार्श्वनाथ इत्येभ्यो नमः।

(इत्येनन मंत्रेण नवग्रह शान्त्यर्थं गन्धोदक धारा वर्षणम्)

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते प्रक्षीणाऽशेषकल्मशाय दिव्यतेजो मूर्तये नमः। श्री शांतिनाथाय शांतिकराय सर्वपाप प्रणाशनाय सर्व विघ्न विनाशनाय सर्वरोग उपसर्ग विनाशनाय सर्वपरक्रत क्षुद्रउपद्रव विनाशनाय सर्वक्षामडामर विनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः सर्वदेशस्य चतुर्विध संघस्य सर्व विश्वस्य तथैव मम् (नाम) सर्वशांतिं कुरु कुरु तुष्टिं पुष्टिं कुरु कुरु वषट् स्वाहा।

सपूज्यकानां प्रति पालकानां यतीन्द्र साम्राज्य तपोधनानाम्।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शांतिं भगवान जिनेन्द्रः।।

अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैः चरुसुदीप सुधूप फलार्घकैः।
धवल मंगल गानरवाकुले जिन ग्रहे जिननाथ महंयजे ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिभुवन पते शांतिधारां करोमि नमोऽर्हते अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नीचे लिखे श्लोक को पढ़कर गंधोदक अपने माथे से लगाएँ।)

निर्मलं निर्मली करणं पवित्रं पाप नाशनम्।
जिन गंधोदकं वन्दे कर्माष्टकं निवारणम्।।

● ● ●

विनय पाठ

इह विधि ठाडो होय के प्रथम पढ़ै जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम नाशे कर्म जु आठ।।1।।

अनंत चतुष्टय के धनी तुम ही हो सरताज।
मुक्ति वधु के कंत तुम तीन भुवन के राज।।2।।

तिहुँ जग की पीड़ा हरन भवदधि-शोषण हार।
ज्ञायक हो तुम विश्व के शिव सुख के करतार।।3।।

हरता अघ अंधियार के करता धर्म प्रकाश।
थिरता पद दातार हो धरता निज गुण रास।।4।।

धर्मामृत उर जलधि सों ज्ञान भानु तुम रूप।
तुमरे चरण सरोज को नावत तिहुँ जग भूप।।5।।

मैं वन्दों जिन देव को करि अति निरमल भाव।
कर्म बंध के छेदने और न कछू उपाय।।6।।

भविजन को भव कूप तें तुम ही काढन हार।
दीन दयाल अनाथ पति आतम गुण भंडार।।7।।

चिदानंद निर्मल कियो धोय कर्म रज मेल।
सरल करी या जगत् में भविजन को शिवगेल।।8।।

तुम पद पंकज पूजतैं विघ्न रोग टरजाए।
शत्रु मित्रता को धरें विष निरविषता थाय।।9।।

चक्री खगधर इंद्र पद मिलें आप तें आप।
अनुक्रम करि शिवपद लहें नेम सकल हनि पाप।।10।।

तुम बिन मैं व्याकुल भयो जैसे जलबिन मीन।
जन्म-जरा मेरी हरो करो मोहि स्वाधीन।।11।।

पतित बहुत पावन किए गिनती कौन करेव।
अंजन से तारे कुधी जय-जय-जय जिनदेव।।12।।

थकी नाव भवदधि विषें तुम प्रभु पार करेय।
खेवटिया तुम हो प्रभु जय-जय-जय जिनदेव।।13।।

राग सहित जग में रूल्यो मिले सरागी देव।
वीतराग भेट्यो अबै मेटो राग कुटेव।।14।।

कित निगोद कित नारकी कित तिर्यंच अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो पायो जिनवर थान।।15।।

तुमको पूजें सुरपति अहिपति नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो करन लग्यो तुम सेव।।16।।

अशरण के तुम शरण हो निराधार आधार।
मैं डूबत भव-सिंधु में खेव लगाओ पार।।17।।

इन्द्रादिक गणपति थके कर विनती भगवान।
अपनो विरद् निहारिकै कीजे आप समान।।18।।

तुम्हरी नेक सुदृष्टि तें जग उतरत है पार।
हा हा डूब्यो जात हों नेक निहार निकार।।19।।

जो मैं कहहूँ और सों तो न मिटे उरझार।
मेरी तो तोसों बनी तातें करौं पुकार।।20।।

वंदों पाँचों परम गुरु सुर गुरु वंदत जास।
विघ्नहरण मंगल करण पूरण परम प्रकाश।।21।।

चौबीसों जिनपद नमों नमों शारदा माय।
शिवमग साधक साधुनमि रचो पाठ सुखदाय।।22।।

मंगलमूर्ति परम पद पंच धरों नित ध्यान।
हरों अमंगल विश्व का मंगल मय भगवान।।23।।

मंगल जिनवर पद नमों मंगल अर्हत् देव।
मंगलकारी सिद्ध पद सो वन्दों स्वयमेव।।24।।

मंगल आचरज मुनि मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल करों वन्दों मन वचकाय।।25।।

मंगल सरस्वती मातका मंगल जिन वर धर्म।
मंगल मय मंगल करन हरो असाता कर्म।।26।।

या विधि मंगल करन से जग में मंगल होय।
मंगल नाथूराम यह भव सागर दृढ़ पोत।।27।।

अथ अर्हत् पूजा प्रतिज्ञायां.....।।

(इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

कार्यात्सर्गं करोमि

पूजा पीठिका

ॐ जय जय जय नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु ।
णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आयरियाणं।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्व साहूणं ।
ॐ ह्रीं अनादि मूल मंत्रेभ्यो नमः पुष्पांजलि क्षिपामि।

चत्तारि मंगलम् अरिहंता मंगलम् सिद्धा मंगलम् साहू मंगलम् केवलि पण्णतो धम्मो मंगलम्।

चत्तारि लोगुत्तमा अरिहंता लोगुत्तमा सिद्धा लोगुत्तमा साहू लोगुत्तमा केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा।

चत्तारि सरणं पव्वज्जामि अरिहंते सरणं पव्वज्जामि।

सिद्धे सरणं पव्वज्जामि साहू सरणं पव्वज्जामि केवलि पण्णत्तं धम्मं शरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा (परि पुष्पांजलि क्षिपामि)।

अपवित्रः पवित्रो वा सुस्थितो दुस्थितोपि वा।
ध्यायेत पंच नमस्कारं सर्व पापैः प्रमुच्यते।।1।।
अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाम् गतोऽपिवा।
यः स्मरेत परमात्मानम् सःवाह्याभ्यंतरे शुचिः।।2।।
अपराजित मंत्रोयम्-सर्व विघ्न विनाशनः।
मंगलेषु च सर्वेषु प्रथमम् मंगलं मताः।।3।।
एसो पंच-णमो-यारो सव्व-पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं पढ़मं हवइ मंगलं।।4।।
अर्ह-मित्यक्षरम ब्रह्म-बाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्ध चक्रस्य सद् बीजं सर्वतः प्रणमाम्यहम्।।5।।
कर्माष्टक-विनिर्मुक्तं मोक्ष लक्ष्मी निकेतनम्।
सम्यक्त्वादि गुणोपेतम् सिद्ध चक्रम् नमाम्यहम्।।6।।

विघ्नौघा: प्रलयं यांति–शाकिनी–भूत–पन्नगा: ।
विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वर: ।।7 ।

(इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

उदक चंदन तंदुल पुष्पकै चरू सुदीप सुधूप फलार्घकै: ।
धवल–मंगल–गान–रवाकुले जिन गृहे जिननाथ महंयजे ।।

ॐ ह्रीं भगवतो–गर्भ–जन्म–तप–ज्ञान निर्वाण पंचकल्याणेभ्यो अर्घं नि.स्वाहा।

उदक चंदन तंदुल पुष्पकै चरू सुदीप सुधूप फलार्घकै: ।
धवल–मंगल–गान–रवाकुले जिन गृहे जिननाथ महंयजे ।।

ॐ ह्रीं श्री अरिहन्तासिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु पंच परमेष्ठिभ्यो अर्घं नि.स्वाहा।

उदक चंदन तंदुल पुष्पकै चरू सुदीप सुधूप फलार्घकै: ।
धवल–मंगल–गान–रवाकुले जिन गृहे जिननाथ महंयजे ।।

ॐ ह्रीं भगवान जिन अष्टोत्तर सहस्त्र नामेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

उदक चंदन–तंदुल पुष्पकै चरू सुदीप सुधूप फलार्घकै: ।
धवल मंगल ज्ञान रवाकुले जिन गृहे जिन नाथ महंयजे ।।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्राणितत्वार्थ सूत्र दशाध्याय अर्घं नि.स्वाहा।

भक्तामर:–प्रणत–मौलि–मणि–प्रभाणा–
मुद्योतकं दलित–पाप–तमो–वितानम् ।
सम्यक् प्रणम्य जिने–पाद युगं युगादा–
वालम्बनं भव–जले पततां जनानाम् ।।1 ।।

स्तोत्रस्रजं तव जिनेन्द्र ! गुणै–र्निबद्धां ।
भक्त्या मया रुचिर–वर्ण–विचित्र–पुष्पाम् ।।
धत्ते जनो य इह कण्ठ–गतामजस्रं ।
तं मानतुंङ्गमवशा समुपैति लक्ष्मी: ।। 2 ।।

ॐ ह्रीं मानतुंगाचार्यकृत भक्तामर स्तोत्र काव्यम् अर्घम् निर्वापामीति स्वाहा: ।

● ● ●

पूजा प्रतिज्ञा पाठ

श्री मज्जिनेन्द्र – ममिवंध – जगत्त्रयेशं ।
स्याद् बाद नायक–मनंत–चतुष्ट–यार्हम् ।।
श्री मूल–संघ–सुदृसाम सुकृतैक–हेतु: ।
जैनेंद्र–यज्ञ–विधिरेषु मयाभ्यधायि ।।1 ।।

स्वस्ति त्रिलोक–गुरुवे जिन–पुंगवाय ।
स्वस्ति स्वभाव–महिमोदय–सुस्थिताय ।।
स्वस्ति प्रकाश–सह–जोर्जित दृंङमयाय ।
स्वस्ति प्रसन्न ललिताद–भुत वैभवाय ।।2 ।।

स्वस्त्युच्छलद–विमल बोध सुधा–प्लवाय ।
स्वस्ति स्वभाव–परभाव–विभास–काय ।।
स्वस्ति त्रिलोक–वितैक–चिदुद–गमाय ।
स्वस्ति त्रिकाल–सकलायत–विस्तृताय ।।3 ।।

द्रव्यस्य शुद्धि – मधि – गम्ययथानु रूपं ।
भावस्य शुद्धि – मधिकामधि गंतु काम: ।
आलंबनानि विविधान्यवलम्व्य बल्गन् ?
भूतार्थ – यज्ञ – पुरुषस्य करोमि यज्ञम् ।।4 ।।

अर्हंत पुराण – पुरुषोत्तम् – पावनानि ।
वस्तूनि नूनमखिलान्ययमेक एव ।।
अस्मिन् – ज्वलद् विमल – केवल बोध वह्नौ ।
पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि ।।5 ।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञप्रतिज्ञानाय जिन प्रतिमाऽग्रे परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

● ● ●

स्वस्ति मंगल पाठ

श्री वृषभो नः स्वस्ति स्वस्ति श्री अजितः।
श्री संभवः स्वस्ति स्वस्ति श्री अभिनंदनः।
श्री सुमतिः स्वस्ति स्वस्ति श्री पद्मप्रभुः।
श्री सुपार्श्वः स्वस्ति स्वस्ति श्री चंद्रप्रभुः।
श्री पुष्पदंतः स्वस्ति स्वस्ति श्री शीतलः।
श्री श्रेयांशः स्वस्ति स्वस्ति श्री वासुपूज्यः।
श्री विमलः स्वस्ति स्वस्ति श्री अनंतः।
श्री धर्मः स्वस्ति स्वस्ति श्री शांतिः।
श्री कुन्थुः स्वस्ति स्वस्ति श्री अरनाथः।
श्री मल्लिः स्वस्ति स्वस्ति श्री मुनिसुव्रतः।
श्री नमिः स्वस्ति स्वस्ति श्री नेमिनाथः।
श्री पार्श्वः स्वस्ति स्वस्ति श्री वर्द्धमानः।

इति जिनेन्द्र स्वस्ति मंगल विधानम्

(।। परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपामि ।।)

• • •

Mm¡~rgm| {OZda Z_mo, G$\{Õ Yma G$erfŸ&
_m± {OZdmUr {OZ Jwé, H$mo dŸXm¡ Ya eofŸ&&

परमर्षि स्वस्ति मंगल पाठ

(हर श्लोक के बाद पुष्प क्षेपण करें।)

नित्या–प्रकंपाद–भुत केवलौघाः। स्फुरन मनः पर्यय शुद्ध बोधाः।।
दिव्यावधिज्ञान बलप्रबोधाः। स्वस्ति क्रियासु परमर्षयोनः।।1।।

कोष्ठस्थ–धान्योपममेक–बीजम्। सभिन्न संश्रोतृ पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धि–बलं दधाना। स्वस्ति क्रियासु परमर्षयोनः।।2।।

संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरात। आस्वादन घ्राण विलोकनानि।।
दिव्यान–मतिज्ञान बलाद्वहंतः। स्वस्ति क्रियासु परमर्षयोनः।।3।।

प्रज्ञा प्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः। प्रत्येक बुद्धाः दश सर्व पूर्वैः।।
प्रवादिनोष्टांग निमित्त विज्ञाः। स्वस्ति क्रियासु परमर्षयोनः।।4।।

जङ्घा वलि श्रेणि–फलाम्बु तन्तु। प्रसून वीजांकुर चारणाह्वाः।।
नमोऽगण स्वैर विहारिणश्च। स्वस्ति क्रियासु परमर्षयोनः।।5।।

अणिम्नि दक्षाः कुशला महिम्नि। लघिम्नि शक्ताः कृतिनो गरिम्णि।।
मनो वपुः वाग्वलिनश्च नित्यम्। स्वस्ति क्रियासु परमर्षयोनः।।6।।

सकाम–रूपित्व–वशित्व मैश्यम्। प्राकाम्य मन्तर्धिमथाप्तिमाप्ताः।।
तथाऽप्रतीधात गुण प्रधानाः। स्वस्ति क्रियासु परमर्षयोनः।।7।।

दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं। घोरं तपो घोर पराक्रमस्थाः।।
ब्रह्मा परम घोर गुणारचरंतः। स्वस्ति क्रियासु परमर्षयोनः।।8।।

आमर्षः सर्वोषधयस्तथाशी। विषंविषा दृष्टि विषं विषाश्च।।
सखिल्लविऽजल्लमलौषधीशाः। स्वस्ति क्रियासु परमर्षयोनः।।9।।

क्षीरं स्त्रवंतोऽत्रघृतम स्रवन्तो। मधु स्रवन्तोप्य–मृतम् स्त्रवन्तः।।
अक्षीण संवास महानसाश्च। स्वस्ति क्रियासु परमर्षयोनः।।10।।

।। परमार्षि स्वस्ति मंगल विधानं परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

• • •

श्री देव शास्त्र गुरु पूजन (समुच्चय)

स्थापना

श्री देव शास्त्र गुरु के चरणों हम, सादर शीष झुकाते हैं।
जिन कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय, श्री सिद्ध प्रभु को ध्याते हैं।
श्री बीस जिनेन्द्र विदेहों के, अरु सिद्ध क्षेत्र जग के सारे।
हम विशद भाव से गुण गाते, ये मंगलमय तारण हारे।
हमने प्रमुदित शुभ भावों से, तुमको हे नाथ ! पुकारा है।
मम् डूब रही भव नौका को, जग में वश एक सहारा है।
हे करुणा कर ! करुणा करके, भव सागर से अब पार करो।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, बस इतना सा उपकार करो।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु समूह कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय समूह श्री अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी समूह श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकर समूह श्री सिद्ध क्षेत्र समूह अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वानन।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु समूह कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय समूह श्री अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी समूह श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकर समूह श्री सिद्ध क्षेत्र समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्र गुरु समूह कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय समूह श्री अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी समूह श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकर समूह श्री सिद्ध क्षेत्र समूह अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अष्टक

हम प्रासुक जल लेकर आये, निज अन्तर्मन निर्मल करने।
अपने अन्तर के भावों को, शुभ सरल भावना से भरने।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो: श्री कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय श्री अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकर श्री सिद्ध क्षेत्र समूह जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! शरण में आये हैं, भव के सन्ताप सताए हैं।
हम परम सुगन्धित चंदन ले, प्रभु चरण शरण में आये हैं।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।2।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो: श्री कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय श्री अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकर श्री सिद्ध क्षेत्र समूह भव ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अक्षय निधि को भूल रहे, प्रभु अक्षय निधी प्रदान करो।
हम अक्षत लाए श्री चरणों में, प्रभु अक्षय निधि का दान करो।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो: श्री कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय श्री अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकर श्री सिद्ध क्षेत्र समूह अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

यद्यपि पंकज की शोभा भी, मानस मधुकर को हर्षाए।
हम काम कलंक नशाने को, मनहर कुसुमांजलि ले लाए।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो: श्री कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय श्री अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकर श्री सिद्ध क्षेत्र समूह काम बाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ये षट् रस व्यंजन नाथ हमें, सन्तुष्ट पूर्ण न कर पाये।
चेतन की क्षुधा मिटाने को, नैवेद्य चरण में हम लाए।।

श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो: श्री कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय श्री अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकर श्री सिद्ध क्षेत्र समूह क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक के विविध समूहों से, अज्ञान तिमिर न मिट पाए।
अब मोह तिमिर के नाश हेतु, हम दीप जलाकर ले आए।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो: श्री कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय श्री अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकर श्री सिद्ध क्षेत्र समूह मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ये परम सुगंधित धूप प्रभु, चेतन के गुण न महकाए।
अब अष्ट कर्म के नाश हेतु, हम धूप जलाने को आए।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो: श्री कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय श्री अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकर श्री सिद्ध क्षेत्र समूह अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवन तरु में फल खाए कई, लेकिन वे सब निष्फल पाए।
अब विशद मोक्ष फल पाने को, श्री चरणों में श्री फल लाए।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।8।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो: श्री कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय श्री अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकर श्री सिद्ध क्षेत्र समूह मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अष्ट कर्म आवरणों के, आतंक से बहुत सताए हैं।
वसु कर्मों का हो नाश प्रभु, वसु द्रव्य संजोकर लाए हैं।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।9।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो: श्री कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय श्री अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकर श्री सिद्ध क्षेत्र समूह अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

श्री देव शास्त्र गुरु मंगलमय हैं, अरु मंगल श्री सिद्ध महन्त।
बीस विदेह के जिनवर मंगल, मंगलमय हैं तीर्थ अनन्त।।

छन्द तोटक

जय अरि नाशक अरिहंत जिनं, श्री जिनवर छियालीस मूल गुणं।
जय महा मदन मद मान हनं, भवि भ्रमर सरोजन कुंज वनं।।
जय कर्म चतुष्टय चूर करं, दृग ज्ञान वीर्य सुख नन्त वरं।
जय मोह महारिपु नाशकरं, जय केवल ज्ञान प्रकाश करं।।1 ।।

जय कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य जिनं, जय अकृत्रिम शुभ चैत्य वनं।
जय ऊर्ध्व अधो के जिन चैत्यं, इनको हम ध्याते हैं नित्यं।।
जय स्वर्ग लोक के सर्व देव, जय भावन व्यन्तर ज्योतिषेव।
जय भाव सहित पूजे सु एव, हम पूज रहे जिन को स्वयमेव।।2।।

श्री जिनवाणी ओंकार रूप, शुभ मंगलमय पावन अनूप।
जो अनेकान्तमय गुणधारी, अरु स्याद्वाद शैली प्यारी।।
है सम्यक् ज्ञान प्रमाण युक्त, एकान्तवाद से पूर्ण मुक्त।
जो नयावली युत सजल विमल, श्री जैनागम है पूर्ण अमल।। 3।।

जय रत्नत्रय युत गुरूवरं, जय ज्ञान दिवाकर सूरि परं।
जय गुप्ति समीती शील धरं, जय शिष्य अनुग्रह पूर्ण करं।।

गुरु पञ्चाचार के धारी हो, तुम जग-जन के उपकारी हो।
गुरु आतम ब्रह्म विहारी हो, तुम मोह रहित अविकारी हो।।4।।

जय सर्व कर्म विध्वंस करं, जय सिद्ध सिला पे वास करं।
जिनके प्रगटे है आठ गुणं, जय द्रव्य भाव नो कर्महनं।।
जय नित्य निरंजन विमल अमल, जय लीन सुखामृत अटल अचल।
जय शुद्ध बुद्ध अविकार परं, जय चित् चैतन्य सु देह हरं।।5।।

जय विद्यमान जिनराज परं, सीमंधर आदी ज्ञान करं।
जिन कोटि पूर्व सब आयु वरं, जिन धनुष पांच सौ देह परं।।
जो पंच विदेहों में राजे, जय बीस जिनेश्वर सुख साजे।
जिनको शत् इन्द सदा ध्यावें, उनका यश मंगलमय गावें।।6।।

जय अष्टापद आदीश जिनं, जय उर्जयन्त श्री नेमि जिनं।
जय वासुपूज्य चम्पापुर जी, श्री वीर प्रभु पावापुरजी।।
श्री बीस जिनेश सम्मेदगिरी, अरु सिद्ध क्षेत्र भूमि सगरी।
इनकी रज को सिर नावत हैं, इनको यश मंगल गावत हैं।।7।।

पूर्वाचार्य कथित देवों को, सम्यक् वन्दन करें त्रिकाल।
पञ्च गुरू जिन धर्म चैत्य श्रुत, चैत्यालय को है नत भाल।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो: श्री कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय श्री अनन्तान्त श्री सिद्ध परमेष्ठी श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकर श्री सिद्ध क्षेत्र समूह अनर्घ पद प्राप्तये पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- तीन लोक तिहुँ काल के, नमू सर्व अरहंत।
अष्ट द्रव्य से पूजकर, पाऊँ भव का अन्त।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिलोक एवं त्रिकाल वर्ती तीर्थंकर जिनेन्द्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पांजलि क्षिपेत्

कायोत्सर्गं कुरु...

श्री पंच परमेष्ठी समुच्चय पूजन

स्थापना

अर्हन्तों के वंदन से, उर में निर्मलता आती है।
श्री सिद्ध प्रभु के चरणों में, सारी जगती झुक जाती है॥
आचार्य श्री जग जीवों को, शुभ पञ्चाचार प्रदान करें।
उपाध्याय करुणा करके, सद्दर्शन ज्ञान का दान करें॥
हैं साधु रत्नत्रय धारी, उनके चरणों शत्-शत् वंदन।
हे पञ्च महाप्रभु! विशद हृदय में, करता हूँ मैं आह्वानन्॥
हे करुणानिधि! करुणा करके, मेरे अन्तर में आ जाओ।
मैं हूँ अधीर तुम धीर प्रभो! मुझको भी धीर बँधा जाओ॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्व साधु पंच परमेष्ठिभ्यो अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्व साधु पंच परमेष्ठिभ्यो अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्व साधु पंच परमेष्ठिभ्यो अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

निर्मल सरिता का प्रासुक जल, मैं शुद्ध भाव से लाया हूँ।
हो जन्म जरादि नाश प्रभु, तव चरण शरण में आया हूँ॥
अर्हंत् सिद्ध सूरि पाठक, अरु सर्व साधु को ध्याता हूँ।
हों पञ्च परम पद प्राप्त मुझे, मैं सादर शीष झुकाता हूँ॥1॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो जन्म-जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतलता पाने को पावन, चंदन घिसकर के लाया हूँ।
भव सन्ताप नशाने हेतु, चरण शरण में आया हूँ॥
अर्हंत सिद्ध सूरि पाठक, अरु सर्व साधु को ध्याता हूँ।
हों पञ्च परम पद प्राप्त मुझे, मैं सादर शीष झुकाता हूँ॥ 2॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वच्छ अखंडित उज्ज्वल तंदुल, श्री चरणों में लाया हूँ।
अनुपम अक्षय पद पाने को, चरण शरण में आया हूँ॥
अर्हंत सिद्ध सूरि पाठक, अरु सर्व साधु को ध्याता हूँ।
हों पञ्च परम पद प्राप्त मुझे, मैं सादर शीष झुकाता हूँ॥ 3॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

निज भावों के पुष्प मनोहर, परम सुगंधित लाया हूँ।
काम शत्रु के नाश हेतु प्रभु, चरण शरण में आया हूँ॥
अर्हंत सिद्ध सूरि पाठक अरु, सर्व साधु को ध्याता हूँ।
हों पञ्च परम पद प्राप्त मुझे, मैं सादर शीष झुकाता हूँ॥ 4॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

परम शुद्ध नैवेद्य मनोहर, आज बनाकर लाया हूँ।
क्षुधा रोग का मूल नशाने, चरण शरण में आया हूँ॥
अर्हंत सिद्ध सूरि पाठक अरु सर्व साधु को ध्याता हूँ।
हों पञ्च परम पद प्राप्त मुझे, मैं सादर शीष झुकाता हूँ॥ 5॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंतर दीप प्रज्ज्वलित करने, मणिमय दीपक लाया हूँ।
मोह तिमिर हो नाश हमारा, चरण शरण में आया हूँ॥
अर्हंत सिद्ध सूरि पाठक अरु, सर्व साधु को ध्याता हूँ।
हों पञ्च परम पद प्राप्त मुझे, मैं सादर शीष झुकाता हूँ॥ 6॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दश धर्मों की प्राप्ति हेतु मैं, धूप दशांगी लाया हूँ।
अष्ट कर्म का नाश होय मम्, चरण शरण में आया हूँ॥

अर्हंत सिद्ध सूरि पाठक अरु, सर्व साधु को ध्याता हूँ।
हों पञ्च परम पद प्राप्त मुझे, मैं सादर शीष झुकाता हूँ॥ 7॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस पक्व निर्मल फल उत्तम, तव चरणों में लाया हूँ।
परम मोक्ष फल शिव सुख पाने, चरण शरण में आया हूँ॥
अर्हंत सिद्ध सूरि पाठक अरु, सर्व साधु को ध्याता हूँ।
हों पञ्च परम पद प्राप्त मुझे, मैं सादर शीष झुकाता हूँ॥ 8॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम वसुधा पाने को यह, अर्घ्य मनोहर लाया हूँ।
निज अनर्घ पद पाने हेतु, चरण शरण में आया हूँ॥
अर्हंत सिद्ध सूरि पाठक अरु, सर्व साधु को ध्याता हूँ।
हों पञ्च परम पद प्राप्त मुझे, मैं सादर शीष झुकाता हूँ॥ 9॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- **जिन परमेष्ठी पाँच की, महिमा अपरम्पार।**
गाते हैं जयमालिका, करके जय-जयकार॥

जय जिनवर केवलज्ञान धार, सर्वज्ञ प्रभु को करूँ नमन।
जय दोष अठारह रहित देव, अर्हन्तों के पद में वंदन॥
जय नित्य निरंजन अविकारी, अविचल अविनाशी निराधार।
जय शुद्ध बुद्ध चैतन्यरूप, श्री सिद्ध प्रभु को नमस्कार॥
जय छत्तिस गुण को हृदयधार, जय मोक्षमार्ग में करें गमन।
जय शिक्षा दीक्षा के दाता, आचार्य गुरु को करूँ नमन॥
जय पच्चीस गुणधारी गुरुवर, जय रत्नत्रय को हृदय धार।
जय द्वादशांग पाठी महान्, श्री उपाध्याय को नमस्कार॥

जय मुनि संघ आरम्भहीन, जय तीर्थंकर के लघुनंदन।
जय ज्ञान ध्यान वैराग्यवान, श्री सर्वसाधु को करूँ नमन्॥
जय वीतराग सर्वज्ञ प्रभो! श्री जिनवाणी जग में मंगल।
जय गुरु पूर्ण निर्ग्रन्थ रूप, जो हरते हैं सारा कलमल॥
इनका वंदन मैं करूँ नित्य, हो जाए सफल मेरा जीवन।
मैं भाव सुमन लेकर आया, चरणों में करने को अर्चन॥
प्रभु भटक रहा हूँ सदियों से, मिल सकी न मुझको चरण शरण।
अत एव अनादि से भगवन्, पाए मैंने कई जनम-मरण॥
अब जागा मम् सौभाग्य प्रभु, तुमको मैंने पहिचान लिया।
सच्चे स्वरूप का दर्शन कर, जो समीचीन श्रद्धान किया॥
है अर्ज हमारी चरणों में प्रभु, हमको यह वरदान मिले।
मैं रहूँ चरण का दास बना, जब तक मेरी यह श्वाँस चले॥
तुम पूज्य पुजारी चरणों में, यह द्रव्य संजोकर लाया है।
हो भाव समाधि मरण अहा!, यह विनती करने आया है॥
क्योंकि दर्शन करके हमने, सच्चे पद को पहिचान लिया।
हम पायेंगे उस पदवी को, अपने मन में यह ठान लिया॥
अनुक्रम से सिद्ध दशा पाना, अन्तिम यह लक्ष्य हमारा है।
उस पद को पाने का केवल, जिनभक्ति एक सहारा है॥
जिनभक्ति कर जिन बनने की, मेरे मन में शुभ लगन रहे।
जब तक मुक्ति न मिल पाए, शुभ 'विशद' धर्म की धार बहे।

दोहा- **अर्हत् सिद्धाचार्य जिन, उपाध्याय अरु संत।**
इनकी पूजा भक्ति से, होय कर्म का अन्त॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो अनर्घपदप्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **परमेष्ठी का दर्श कर, हृदय जगे श्रद्धान।**
पूजा अर्चा से बने, जीवन सुखद महान्॥

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री नवदेवता पूजा

स्थापना

हे! लोक पूज्य अरिहंत नमन्, हे! कर्म विनाशक सिद्ध नमन्।
आचार्य देव के चरण नमन्, अरु, उपाध्याय को शत् वन्दन॥
हे! सर्व साधु है तुम्हें नमन्, हे! जिनवाणी माँ तुम्हें नमन्।
शुभ जैन धर्म को करूँ नमन्, जिनबिम्ब जिनालय को वन्दन॥
नव देव जगत् में पूज्य 'विशद', है मंगलमय इनका दर्शन।
नव कोटि शुद्ध हो करते हैं, हम नव देवों का आह्वानन॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

हम तो अनादि से रोगी हैं, भव बाधा हरने आये हैं।
मेरा अन्तर तम साफ करो, हम प्रासुक जल भर लाये हैं॥
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से सारे कर्म धुलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें॥1॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार ताप में जलकर हमने, अगणित अति दुख पाये हैं।
हम परम सुगंधित चंदन ले, संताप नशाने आये हैं॥

नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से भव संताप गलें।
हे नाथ ! आपके चरणों में श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

यह जग वैभव क्षण भंगुर है, उसको पाकर हम अकुलाए ।
अब अक्षय पद के हेतु प्रभू, हम अक्षत चरणों में लाए ।।
नवकोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अक्षय शांति मिले।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

बहु काम व्यथा से घायल हो, भव सागर में गोते खाये।
हे प्रभु! आपके चरणों में, हम सुमन सुकोमल ले आये।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अनुपम फूल खिलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो:कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम क्षुधा रोग से अति व्याकुल,होकर के प्रभु अकुलाए हैं।
यह क्षुधा मेटने हेतु चरण, नैवेद्य सुसुन्दर लाए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती कर सारे रोग टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मोह तिमिर ने सदियों से, हमको जग में भरमाया है।
उस मोह अन्ध के नाश हेतु, मणिमय शुभ दीप जलाया है।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चा कर ज्ञान के दीप जलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हसिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: महा मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

भव वन में ज्वाला धधक रही, कर्मों के नाथ सतायें हैं।
हों द्रव्य भाव नो कर्म नाश, अग्नि में धूप जलायें हैं।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, पूजा करके वसु कर्म जलें ।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सारे जग के फल खाकर भी, हम तृप्त नहीं हो पाए हैं।
अब मोक्ष महाफल दो स्वामी, हम श्रीफल लेकर आए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ति कर हमको मोक्ष मिले।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।8 ।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने संसार सरोवर में, सदियों से गोते खाये हैं।
अक्षय अनर्घ पद पाने को, वसु द्रव्य संजोकर लाये हैं।।

नव कोटि शुद्ध नव देवों के, वन्दन से सारे विघ्न टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

धत्ता छन्द

नव देव हमारे जगत सहारे, चरणों देते जल धारा।
मन वच तन ध्याते जिन गुण गाते, मंगलमय हो जग सारा।।
शांतये शांति धारा करोति।

ले सुमन मनोहर अंजलि में भर, पुष्पांजलि दे हर्षाएँ।
शिवमग के दाता ज्ञानप्रदाता, नव देवों के गुण गाएँ।।
दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्।

जाप्य

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो नम:।

दोहा

मंगलमय नव देवता, मंगल करें त्रिकाल।
मंगलमय मंगल परम, गाते हैं जयमाल।।

(चाल टप्पा)

अर्हन्तों ने कर्म घातिया, नाश किए भाई।
दर्शन ज्ञान अनन्तवीर्य सुख, प्रभु ने प्रगटाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि...

सर्वकर्म का नाश किया है, सिद्ध दशा पाई।
अष्टगुणों की सिद्धि पाकर, सिद्ध शिला जाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि...

पञ्चाचार का पालन करते, गुण छत्तिस पाई।
शिक्षा दीक्षा देने वाले, जैनाचार्य भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

उपाध्याय है ज्ञान सरोवर, गुण पच्चिस पाई।
रत्नत्रय को पाने वाले, शिक्षा दें भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

ज्ञान ध्यान तप में रत रहते, जैन मुनी भाई।
वीतराग मय जिन शासन की, महिमा दिखलाई।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

सम्यक् दर्शन ज्ञान चरित्रमय, जैन धर्म भाई।
परम अहिंसा की महिमा युत, क्षमा आदि पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

श्री जिनेन्द्र की ओम् कार मय, वाणी सुखदाई।
लोकालोक प्रकाशक कारण, जैनागम भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

वीतराग जिनबिम्ब मनोहर, भविजन सुखदाई।।
वीतराग अरु जैन धर्म की, महिमा प्रगटाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

घंटा तोरण सहित मनोहर, चैत्यालय भाई।
वेदी पर जिन बिम्ब विराजित, जिन महिमा गाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

दोहा

नव देवों को पूजकर, पाऊँ मुक्ती धाम।
''विशद'' भाव से कर रहे, शत्-शत् बार प्रणाम्।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

भक्ति भाव के साथ, जो पूजें नव देवता।
पावे मुक्ति वास, अजर अमर पद को लहें।।

इत्याशीर्वाद :

विनायक यंत्र पूजा

स्थापना

दोहा- **परमेष्ठी जिन पाँच हे !, मंगल आदि तीन।**
अत्र तिष्ठ मम् हृदय में, करो विघ्न सब क्षीण।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु परमेष्ठिन् मंगल लोकोत्तम शरण भूत ! अत्रावतर संवौषट् आह्ववाननम्।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु परमेष्ठिन् मंगल लोकोत्तम शरण भूत ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु परमेष्ठिन् मंगल लोकोत्तम शरण भूत ! अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

स्वच्छ जल यह तीर्थ का हम, अर्चना को लाए हैं।
जन्म, मृत्यु अरु जरा को, नाश करने आए हैं।।
पञ्च परमेष्ठी जगत् में, चार मंगल हैं महा।
चार उत्तम लोक में शुभ, शरण पाऊँ मैं अहा।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु परमेष्ठिन् मंगल लोकोत्तम शरणेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ चन्दन यह सुगन्धित, परम शीतल लाए हैं।
नाश हो भव ताप निर्मल, चित्त से हम आए हैं।।
पञ्च परमेष्ठी जगत् में, चार मंगल हैं महा।
चार उत्तम लोक में शुभ, शरण पाऊँ मैं अहा।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु परमेष्ठिन् मंगल लोकोत्तम शरणेभ्यो चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल अक्षत मोतियों सम, स्वच्छ धोकर लाए हैं।
मिले अक्षय पद हमें अब, कर्म से घबड़ाए हैं।।

पञ्च परमेष्ठी जगत् में, चार मंगल हैं महा।
चार उत्तम लोक में शुभ, शरण पाऊँ मैं अहा।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु परमेष्ठिन् मंगल लोकोत्तम शरणेभ्यो अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

विविध वर्णों के सरस शुभ, फूल जो महकाए हैं।
नाश हो मम् काम बाधा, हम चढ़ाने लाए हैं।।
पञ्च परमेष्ठी जगत् में, चार मंगल हैं महा।
चार उत्तम लोक में शुभ, शरण पाऊँ मैं अहा।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु परमेष्ठिन् मंगल लोकोत्तम शरणेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

शर्करा घृत का मनोहर, शुद्ध चरुवर लाए हैं।
क्षुधा बाधा नाश हेतु, हम चढ़ाने आए है।।
पञ्च परमेष्ठी जगत् में, चार मंगल हैं महा।
चार उत्तम लोक में शुभ, शरण पाऊँ मैं अहा।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु परमेष्ठिन् मंगल लोकोत्तम शरणेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ण रत्नों से सुसज्जित, दीप मनहर लाए हैं।
मोह का तम नाश करके, ज्ञान पाने आए हैं।।
पञ्च परमेष्ठी जगत् में, चार मंगल हैं महा।
चार उत्तम लोक में शुभ, शरण पाऊँ मैं अहा।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु परमेष्ठिन् मंगल लोकोत्तम शरणेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप अग्नि में जलाने, यह दशांगी लाए हैं।
कर्म आठों नाश करने, हम शरण में आए हैं।।

पञ्च परमेष्ठी जगत् में, चार मंगल हैं महा।
चार उत्तम लोक में शुभ, शरण पाऊँ मैं अहा।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु परमेष्ठिन् मंगल लोकोत्तम शरणेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

विविध अनुपम सरस फल यह, हम चढ़ाने लाए हैं।
मोक्ष पद हो प्राप्त हमको, भाव से हम आए हैं।।
पञ्च परमेष्ठी जगत् में, चार मंगल हैं महा।
चार उत्तम लोक में शुभ, शरण पाऊँ मैं अहा।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु परमेष्ठिन् मंगल लोकोत्तम शरणेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्यों से बनाकर, अर्घ्य हम यह लाए हैं।
पद हमें हो प्राप्त अनुपम, वन्दना को आए हैं।।
पञ्च परमेष्ठी जगत् में, चार मंगल हैं महा।
चार उत्तम लोक में शुभ, शरण पाऊँ मैं अहा।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु परमेष्ठिन् मंगल लोकोत्तम शरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

हे जिनेन्द्र! तुमने अनादि की, भव सन्तति का नाश किया।
अर्हत् पदवी को पाकर के, केवलज्ञान प्रकाश किया।।
चरण कमल में प्रभो! आपके, भाव सहित करते अर्चन।
मोक्षमार्ग के परम प्रकाशक, करते हम शत् शत् वन्दन।।

ॐ ह्रीं अनन्तचतुष्टय समवशरण लक्ष्मी विभ्रतेऽर्हत्परमेष्ठिनेऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म का नाश किए प्रभु, भाव कर्म का किए विनाश।
चित् चैतन्य स्वरूप निरत हो, निज स्वभाव में कीन्हे वास।।

जिन त्रैकालिक सिद्ध प्रभु को, भाव सहित करते अर्चन।
चरण कमल में विशद भाव से, करते हैं शत् शत् वन्दन।।

ॐ ह्रीं अष्टकर्म काष्ठगणं भस्मीकुर्वर्त सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्चाचार परायण हैं जो, शिक्षा-दीक्षा के दाता।
सप्त तत्व छह द्रव्य धर्म अरु, नय प्रमाण के हैं ज्ञाता।।
जैनाचार्य लोक में पूजित, का हम करते हैं अर्चन।
चरण कमल में विशद भाव से, करते हैं शत् शत् वन्दन।।

ॐ ह्रीं पञ्चाचार परायणाचार्य परमेष्ठिने अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य अर्थ श्रुत तत्त्व बोध के, ज्ञाता मुनिवर लोक महान्।
अध्ययन अध्यापन में रत जो, उपाध्याय सद्गुण की खान।।
द्वादशांग श्रुत को करते हैं, भाव सहित हम भी अर्चन।
चरण कमल में विशद भाव से, करते हैं शत् शत् वन्दन।।

ॐ ह्रीं द्वादशांगपठन पाठनोद्यतायोपाध्याय परमेष्ठिनेऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मरूप पर्वत के भेत्ता, द्वय प्रकार तप के धारी।
शैय्याशन जिनकी विविक्त है, निर्विकार हैं अविकारी।।
रत्नत्रय रत सर्व साधु का, भाव सहित करते अर्चन।
चरण कमल में विशद भाव से, करते हैं शत् शत् वन्दन।।

ॐ ह्रीं त्रयोदश प्रकार चारित्राराधक साधु परमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(जोगीरासा छन्द)

सुरनर विद्याधर से पूजित, अर्हत् मंगल गाये।
जल फल आदि अष्ट द्रव्य ले, हम पूजा को आये।।

मंगलमय जीवन हो मेरा, विशद भावना भाते।
तीन योग से चरण कमल में, सादर शीष झुकाते।।

ॐ ह्रीं सर्व विघ्न शांतिकर अर्हन्मंगलार्घं निर्वापामीति स्वाहा।

ध्रौव्योत्पाद विनाश रूप जो, अखिल वस्तु को जाने।
परम सिद्ध परमेष्ठी को, हम मंगलमय पहिचाने।।
मंगलमय जीवन हो मेरा, विशद भावना भाते।
तीन योग से चरण कमल में, सादर शीष झुकाते।।

ॐ ह्रीं सर्व विघ्न शांतिकर सिद्धमंगलायार्घं निर्वापामीति स्वाहा।

सद्दर्शन कृत वैभव पाए, सर्व साधु अविकारी।
रोग उपद्रव मृग मृगेन्द्र सम, दूर भागते भारी।।
मंगलमय जीवन हो मेरा, विशद भावना भाते।
तीन योग से चरण कमल में, सादर शीष झुकाते।।

ॐ ह्रीं सर्व विघ्न शांतिकर साधुमंगलायार्घं निर्वापामीति स्वाहा।

केवलज्ञानी द्वारा भव शत, जैन धर्म को जानो।
सर्व लोक में मंगलमय सु, मंगलकारी मानो।।
मंगलमय जीवन हो मेरा, विशद भावना भाते।
तीन योग से चरण कमल में, सादर शीष झुकाते।।

ॐ ह्रीं सर्व विघ्न शांतिकर केवलिप्रज्ञप्त धर्मायार्घं निर्वापामीति स्वाहा।

(गीता छन्द)

लोकोत्तम जिनराज पदाम्बुज, की सेवा सुखकारी।
ऋद्धि सिद्धी प्रदायक उत्तम, दोष नाशनहारी।।

जल फल आदि अष्ट द्रव्य ले, भाव सहित करते अर्चन।
अर्हत् गुण भागी बन जाऊँ, करता मैं शत् शत् वन्दन।।

ॐ ह्रीं सर्व विघ्न शांतिकर अर्हल्लोकोत्तमायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वदोष से च्युत होकर के, सिद्ध शिला पर कीन्हे वास।
सिद्ध लोक में उत्तम हैं जो, करते लोकालोक प्रकाश।।
जल फल आदि अष्ट द्रव्य ले, भाव सहित करते अर्चन।
अर्हत् गुण भागी बन जाऊँ, करता मैं शत् शत् वन्दन।।

ॐ ह्रीं सर्व विघ्न शांतिकर सिद्धलोकोत्तमायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र नरेन्द्र सुरेन्द्रादि से, अर्चित संयम तपधारी।
सर्वसाधु लोकोत्तम जग में, सर्व जगत् मंगलकारी।।
जल फल आदि अष्ट द्रव्य ले, भाव सहित करते अर्चन।
अर्हत् गुण भागी बन जाऊँ, करता मैं शत् शत् वन्दन।।

ॐ ह्रीं सर्व विघ्न शांतिकर साधुलोकोत्तमायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

राग–द्वेष आदि पिशाच का, जिससे होता है मर्दन।
परम केवली कथित धर्म की, भाव सहित करते पूजन।।
जल फल आदि अष्ट द्रव्य ले, भाव सहित करते अर्चन।
अर्हत् गुण भागी बन जाऊँ, करता मैं शत् शत् वन्दन।।

ॐ ह्रीं सर्व विघ्न शांतिकर केवलि प्रज्ञप्तधर्मायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हन्तों की शरण लोक में, अर्चनीय जिन श्रेष्ठ कही।
भव भयहारी अष्ट कर्म की, नाशन हारी पूर्ण रही।।
अष्ट कर्म हों शांत हमारे, अष्ट द्रव्य से कर अर्चन।
पञ्च प्रभु की शरण प्राप्त हो, करते हम शत् शत् वन्दन।।

ॐ ह्रीं सर्व विघ्न शांतिकर अर्हत शरणायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अव्याबाध आदि गुणधारी, चिदानन्द हैं अमृत रूप।
शरण प्राप्त हो सिद्ध प्रभु की, जो पा जाते आत्म स्वरूप।।
अष्ट कर्म हों शांत हमारे, अष्ट द्रव्य से कर अर्चन।
पञ्च प्रभु की शरण प्राप्त हो, करते हम शत् शत् वन्दन।।

ॐ ह्रीं सर्व विघ्न शांतिकर सिद्ध शरणायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

लौकिक सर्व प्रयोजन तजकर, सर्व साधु की मिले शरण।
सर्व चराचर द्रव्य छोड़कर, वीतरागता करूँ वरण।।
अष्ट कर्म हों शांत हमारे, अष्ट द्रव्य से कर अर्चन।
पञ्च प्रभु की शरण प्राप्त हो, करते हम शत् शत् वन्दन।।

ॐ ह्रीं सर्व विघ्न शांतिकर साधु शरणयार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

परम केवली के मुखोद्गत, धर्म जीव का हितकारी।
जैन धर्म की शरण प्राप्त हो, सर्व जगत् मंगलकारी।।
अष्ट कर्म हों शांत हमारे, अष्ट द्रव्य से कर अर्चन।
पञ्च प्रभु की शरण प्राप्त हो, करते हम शत् शत् वन्दन।।

ॐ ह्रीं सर्व विघ्न शांतिकर केवलि प्रज्ञप्त धर्म शरणायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जो संसार दुःखों के नाशी, कहे अनादि और अनन्त।
परमेष्ठी मंगल लोगोत्तम शरण, चार कहते भगवन्त।।
भक्तिभाव से पूजा करते, भक्ति के यह हैं आधार।।
सुख शान्ति के हेतु विनय से, करते वन्दन बारम्बार।।

ॐ ह्रीं अर्हदादिसप्तदशमन्त्रेभ्यः समुदायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– **परमेष्ठी जिन पञ्च हैं, मंगल उत्तम चार।**
शरण चार हैं भक्ति के, परम पूज्य आधार।।

(छन्द चौपाई)

विघ्न विनाशी आप कहाए, नर सुर के स्वामी कहलाए।
अग्रेसर जिनवर को जानो, इष्ट सभी जीवों को मानो।।
अनाद्यानन्त कहा जो भाई, जग में फैली है प्रभुताई।
मम् विघ्नों का वारण कीजे, विनती मेरी यह सुन लीजे।।
मुनियों के आधीश कहाए, गणाधीष इस जग में गाए।
स्तुति जिनकी मंगलकारी, सब विघ्नों की नाशनहारी।।
शांति प्रदायक जग में भाई, जिनवर की स्तुति अधिकाई।
कलुषित कली काल के प्राणी, मिथ्यावादी है अति मानी।।
भव्य जीव सद्दर्शन पावें, ज्ञान सुधारस सम हो जावें।
पाप पुञ्ज नश जाए सारा, जीवन मंगलमय हो प्यारा।।
यही मान्य गणराज कहाए, जिनकी भक्ति शान्ति दिलाए।
विनय आपकी जो भी धारे, वह सब दोषों को परिहारे।।
नाम आपका जो भी ध्यावे, श्रेष्ठ गुणों को वह पा जावे।
इष्ट सिद्धि हो जावे भाई, यह जिन भक्ति की प्रभुताई।।
जय-जय हो जिनराज तुम्हारी, सर्व गुणों के तुम अधिकारी।
सुर-गुरु कोटि वर्ष तक गावें, तो भी पूर्ण नहीं कह पावें।।
विशद अल्प बुद्धि के धारी, वह गुण क्या तुमरे कह पावें।

सोरठा- **तुम हो सर्व महान्, हम दोषों के कोष हैं।**
किया अल्प गुणगान, अल्पबुद्धि से आपका।।

ॐ ह्रीं अर्हदादि सप्तदश मन्त्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा- **बुद्धि अनाकुल होय, धर्म प्रीति जागे परम।**
मोक्ष प्राप्त हो सोय, जैन धर्म को धारकर।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

अर्घावली

विद्यमान बीस तीर्थंकरों का अर्घ

जलफल आठों दर्व अरघ कर प्रीति धरी है,
गणधर इन्द्र निहू-तैं थुति पूरी न करी है।
द्यानत सेवक जानके हो जगतें लेहु निकार,
सीमन्धर जिन आदि दे बीस विदेह मँझार।
श्री जिनराज हो भव तारण तरण जहाज।।

ॐ ह्रीं श्री समीन्धरादिविद्यमान विंशतितीर्थंकरेभ्योऽनर्घपद प्राप्तये अर्घं नि....स्वाहा।

अकृत्रिमा जिनबिम्बों का अर्घ

कृत्रिमाकृत्रिमचारुचैत्यनिलयान्, नित्यं त्रिलोकीगतान्,
वन्दे भावन-व्यन्तरान् द्युतिवरान्, कल्पामरा-वासगान्।।
सद्-गन्धाक्षत-पुष्पदामचरुकैः सद्दीपधूपैः फलैर्,
नीराद्यैश्च यजे प्रणम्य शिरसा, दुष्कर्मणां शान्तये।।
सात करोड़ बहत्तर लाख, सु-भवन जिन पाताल में।
मध्यलोक में चार सौ अट्ठावन, जजों अघमल टाल के।।
अब लखचौरासी सहस सत्यावन, अधिक तेईस रु कहे।
बिन संख ज्योतिष व्यन्तरालय, सब जजों मन वच ठहे।।

ॐ ह्रीं कृत्रिमाकृत्रिमजिनबिम्बेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध भगवान का अर्घ

गन्धाढ्यं सुपयो मधुव्रत-गणैः, सङ्गं वरं चन्दनं,
पुष्पौघं विमलं सदक्षत-चयं, रम्यं चरुं दीपकम्।
धूपं गन्धयुतं ददामि विविधं, श्रेष्ठं फलं लब्धये,
सिद्धानां युगपत्क्रमाय विमलं, सेनोत्तरं वाञ्छितम्।।

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सोलहकारण का अर्घ

जल फल आठों दरब चढ़ाय, द्यानत विरत करों मन लाय।
परम गुरु हो!, जय जय नाथ परम गुरु हो!।।
दरश विशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर पद पाय।
परम गुरु हो!, जय जय नाथ परम गुरु हो!।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचमेरु का अर्घ

आठ दरब मय अरघ बनाय, द्यानत पूजौं श्री जिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।।
पाँचों मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमा जी को करो प्रणाम।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।।

ॐ ह्रीं पंचमेरु संबंधी अशीति जिन चैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

नंदीश्वरद्वीप का अर्घ

यह अरघ कियो निज हेत, तुमको अरपतु हों।
द्यानत कीज्यो शिव खेत, भूमि समरपतु हों।।
नंदीश्वर श्री जिनधाम, बावन पुंज करों।
वसुदिन प्रतिमा अभिराम, आनंद भाव धरों।।
नंदीश्वर द्वीप महान्, चारों दिशि सोहें।
बावन जिन मंदिर जान, सुर नर मन मोहें।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे पूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिण द्विपंचाशज्-जिनालयस्थ जिनप्रतिमाभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दशलक्षण का अर्घ

आठों दरब संवार, द्यानत अधिक उछाह सों।
भव-आताप निवार, दस लच्छन पूजों सदा।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माङ्गाय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय का अर्घ

आठ दरब निरधार, उत्तम सो उत्तम लिये।
जनम रोग निरवार सम्यक् रत्नत्रय भजूँ।।

ॐ ह्रीं सम्यक्रत्नत्रयाय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री आदिनाथ भगवान का अर्घ

शुचि निर्मल नीरं गंध सुअक्षत, पुष्प चरु ले मन हरषाय।
दीप धूप फल अर्घ सु लेकर, नाचत ताल मृदंग बजाय।
श्री आदिनाथजी के चरण कमल पर, बलि बलि जाऊँ मन वच काय।
हे ! करुणानिधि भव दुःख मेटो, यातैं मैं पूजों प्रभु पाय।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चन्द्रप्रभ भगवान का अर्घ

सजि आठों दरब पुनीत, आठों अंग नमों।
पूजों अष्टम जिन मीत, अष्टम अवनि गमों।
श्री चन्द्रनाथ दुति चन्द्र, चरनन चंद्र लगै,
मन- वच- तन जजत अमंद, आतम जोति जगै।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री वासुपूज्य भगवान का अर्घ

जल फलदरब मिलाय गाय गुन, आठों अंग नमाई।
शिवपदराज हेत हे श्रीपति! निकट धरों यह लाई।।
वासुपूज्य वसुपूज- तनुज पद, वासव सेवत आई।
बालब्रह्मचारी लखि जिनको, शिवतिय सनमुख धाई।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शांतिनाथ भगवान का अर्घ

वसु द्रव्य सँवारी, तुम ढिंग धारी, आनंदकारी दृग प्यारी।
तुम हो भवतारी, करुणाधारी, यातै थारी शरनारी।।

श्री शान्ति जिनेशं, नुतचक्रेशं वृषचक्रेशं, चक्रेशं।
हनि अरि चक्रेशं हे ! गुणधेशं, दयामृतेशं मक्रेशं।।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पार्श्वनाथजी का अर्घ

पथ की प्रत्येक विषमता को मैं, समता से स्वीकार करूँ।
जीवन विकास के प्रिय पथ की, बाधाओं का परिहार करूँ।।
मैं अष्ट कर्म आवरणों का, प्रभुवर आतंक हटाने को।
वसुद्रव्य संजोकर लाया हूँ, चरणों में नाथ चढ़ाने को।।

ॐ ह्रीं श्री चिंतामणि पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महावीर भगवान का अर्घ

जल फल वसु सजि हिम थार, तन मन मोद धरों।
गुण गाऊँ भवदधितार, पूजत पाप हरों।।
श्री वीर महा अतिवीर, सन्मति नायक हो।
जय वर्द्धमान गुणधीर, सन्मतिदायक हो।।

ॐ ह्रीं श्री वर्द्धमान जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय चौबीसी भगवान का अर्घ

जल फल आठों शुचिसार, ताको अर्घ करों,
तुमको अरपों भवतार, भवतरि मोक्ष वरों।
चौबीसों श्री जिनचंद, आनंद कंद सही
पद जजत हरत भव फंद, पावत मोक्ष मही।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं नि...स्वाहा।

पंच बालयति का अर्घ

सजि वसुविधि द्रव्य मनोज्ञ, अरघ बनावत हैं।
वसुकर्म अनादि संयोग, ताहि नशावत हैं।।
श्री वासुपूज्य मलि नेम, पारस वीर यती।
नमूँ मन-वच-तन धरि प्रेम, पाँचों बालयति।।

ॐ ह्रीं श्री पंच बालयति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री बाहुबली स्वामी का अर्घ

हूँ शुद्ध निराकुल सिद्धों सम, भव लोक हमारा वासा ना।
रिपु रागरु द्वेष लगे पीछे, यातें शिवपद को पाया ना।।
निज के गुण निज में पाने को, प्रभु अर्घ संजोकर लाया हूँ।
हे ! बाहुबली तुम चरणों में, सुख सन्मति पाने आया हूँ।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस्वती का अर्घ

जल चंदन अक्षत फूल चरु, दीप धूप अति फल लावै।
पूजा को ठानत जो तुम जानत, सो नर ज्ञानत सुख पावै।।
तीर्थंकर की ध्वनि, गणधर ने सुनि, अंग रचे चुनि ज्ञान मई।
सो जिनवर वानी, शिवसुखदानी, त्रिभुवन मानी पूज्य भई।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वती देव्यै: अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्तर्षि का अर्घ

जल गंध अक्षत पुष्प चरुवर, दीप धूप सु लावना।
फल ललित आठों द्रव्य मिश्रित, अर्घ कीजे पावना।।
मन्वादि चारण-ऋद्धि धारक, मुनिन की पूजा करूँ।
ता करें पातक हरें सारे, सकल आनंद विस्तरूँ।।

ॐ ह्रीं श्री मन्वादिसप्तर्षिभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चा.च. प.पू. आचार्य 108 श्री शांतिसागरजी महाराज का अर्घ

पद अनर्घ्य की प्राप्ती हेतु, अर्घ्य बनाकर लाये हैं।
गुरुवर दो सामर्थ्य हमें हम, चरण शरण में आये हैं।।
शांति सिन्धु दो शांति हमें हम शांति पाने आये हैं।
विशद भाव से पद पंकज में अपना शीष झुकाये हैं।।

ॐ ह्रीं श्री चा.च. आचार्य 108 श्री शांतिसागर यतिवेरभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य 108 श्री विमलसागरजी महाराज का अर्घ्य

हे ज्ञान मूर्ति ! करुणा निधान हे धर्म दिवाकर ! करुणा कर ।
हे तेज पूञ्ज ! हे तपोमूर्ति ! सन्मार्ग दिवाकर रत्नाकर ।।
विमल सिंधु के विमल चरण से करुणा के झरने झरते ।
गुरु अष्ट गुणों की सिद्धि हेतु यह अर्घ्य समर्पण हम करते ।।

ॐ ह्रीं श्री सन्मार्ग दिवाकर वात्सल्य रत्नाकर धर्म प्रणेता आचार्य श्री विमलसागर यतिवरेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य 108 श्री विरागसागरी महाराज का अर्घ्य

जल चन्दन के कलश थाल में अक्षत पुष्प सजाये हैं।
चरुवर दीप धूप फल लेकर अर्घ चढ़ाने आये हैं।
मन मंदिर में मेरे गुरुवर हमने तुम्हें बसाया है।
विराग सिन्धु के श्री चरणों में अपना शीश झुकाया है।

ॐ ह्रीं श्री प्रज्ञा श्रमण बालयति प.पू. आचार्य श्री विरागसागगर यतिवरेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य 108 श्री भरतसागरजी महाराज का अर्घ्यं

जल चन्दन के कलश मनोहर अक्षत पुष्प चरु लाये।
दीप धूप अरु फल को लेकर अर्घ्य चढ़ाने हम आये ।
हृदय कमल में राजें गुरुवर सुन्दर सुमन बिछाते है।
भरत सिंधु के श्री चरणों में सादर शीष झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री बालयोगी प्रशान्त मूर्ति आचार्य 108 श्री भरतसागर यतिवरेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य 108 श्री विशदसागरजी महाराज का अर्घ्य

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर ले मन में भाव बनाये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु चरणों में सिर धरते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री क्षमामूर्ति आचार्य 108 श्री विशदसागरजी मुनीद्राय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

खण्ड - अ

वाग्ज्योति स्वरूप 1008

श्री वासुपूज्य विधान

मण्डल

मध्य में - ह्रीं
प्रथम वलय श्रीं -9
द्वितीय वलय क्लीं - 18
तृतीय वलय व्लूं - 36
चतुर्थ वलय - 72

रचयिता :

परम पूज्य क्षमामूर्ति, साहित्य रत्नाकर

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

वासुपूज्य स्तवन

दोहा- वासुपूज्य को पूजता, विशद भाव के साथ।
भव बन्धन मैटो मेरा, मुक्ति दो हे नाथ !

उत्सुक लोकालोक देखने, ज्ञानी जन के नेत्र स्वरूप।
प्रत्यक्षाप्रत्यक्ष ज्ञान की, स्तुति करता मैं अनुरूप।।
वासुपूज्य ने व्रत को पाकर, कर्मों का संहार किया।
केवलज्ञान प्राप्त कर प्रभु ने, समवशरण आधार लिया।।

जैन धर्म को पाने वाले, धर्म तीर्थ के नाथ हुए।
ऋषी मुनी गणधर यति आदि, समवशरण में साथ हुए।।
दिव्य देशना के द्वारा प्रभु, इस जग का कल्याण किया।
भूले भटके भव्य जनों को, सम्यक्ज्ञान प्रदान किया।।

दिव्य देशना प्रभु आपकी, जन्म-जन्म तक साथ रहे।
केवलज्ञान जगा न जब तक, झुका चरण में माथ रहे।।
'विशद' ज्ञान पाने की भगवन्, मेरे अन्दर शक्ति जगे।
देव-शास्त्र-गुरु के प्रति मन में, सम्यक् श्रद्धा भक्ति जगे।।

भक्ति की शुभ आशा लेकर यह, भक्त शरण में आया है।
श्रद्धा के यह पुष्प मनोहर, नाथ ! साथ में लाया है।।
तुच्छ भक्त की तुच्छ भेंट यह, प्रभु आप स्वीकार करो।
भव-भव की बाधाएँ नाशो, मेरे सारे कष्ट हरो।।

भक्त भावना लेकर जो भी, चरण शरण में आता है।
मन वाञ्छित फल पाता है वह, खाली कभी न जाता है।।
महिमा सुनकर नाथ ! आपकी, आज शरण में आए हैं।
जिस पद को प्रभु तुमने पाया, उसके भाव बनाए हैं।।

•••

मंगल अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य पूजन

स्थापना

हे वासुपूज्य ! तुम जगत् पूज्य, सर्वज्ञ देव करुणाधारी।
मंगल अरिष्ट शांतिदायक, महिमा महान् मंगलकारी।।
मेरे उर के सिंहासन पर, प्रभु आन पधारो त्रिपुरारी।
तुम चिदानंद आनंद कंद, करुणा निधान संकटहारी।।
जिन वासुपूज्य तुम लोक पूज्य, तुमको हम भक्त पुकार रहे।
दो हमको शुभ आशीष परम, मम् उर से करुणा स्रोत बहे।।

।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

ॐ ह्रीं भौम ग्रह अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

हम काल अनादि से जग में, कर्मों के नाथ सताए हैं।
तुम सम निर्मलता पाने को, प्रभु निर्मल जल भर लाए हैं।।
हम नाश करें मृतु जन्म जरा, हे जिनवर ! वासुपूज्य स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ति दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।1।।

ॐ ह्रीं भौम ग्रह अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय के विषय भोग सारे, हमने भव-भव में पाए हैं।
हम स्वयं भोग हो गये मगर, न भोग पूर्ण कर पाए हैं।।
हम भव तापों का नाश करें, हे जिनवर ! वासुपूज्य स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ति दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।2।।

ॐ ह्रीं भौम ग्रह अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्मल अनंत अक्षय अखंड, अविनाशी पद प्रभु पाए हैं।
स्वाधीन सफल अविचल अनुपम, पद पाने अक्षत लाए हैं।।
अक्षय स्वरूप हो प्राप्त हमें, हे जिनवर ! वासुपूज्य स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ति दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।3।।

ॐ ह्रीं भौम ग्रह अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

जग में बलशाली प्रबल काम, उस काम को आप हराए हैं।
प्रमुदित मन विकसित पुष्प प्रभु, चरणों में लेकर आए हैं।।
हम काम शत्रु विध्वंस करें, हे जिनवर ! वासुपूज्य स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ति दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।4।।

ॐ ह्रीं भौम ग्रह अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय विषयों की लालच से, चारों गति में भटकाए हैं।
यह क्षुधा रोग न मैट सके, अब क्षुधा मैटने आये हैं।।
नैवेद्य समर्पित करते हैं, हे वासुपूज्य ! जिनवर स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ति दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।5।।

ॐ ह्रीं भौम ग्रह अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन मोह महा मिथ्या कलंक, आदि सब दोष नशाए हैं।
त्रिभुवन दर्शायक ज्ञान विशद, प्रभु अविनाशी पद पाए हैं।।
मोहांधकार क्षय हो मेरा, हे वासुपूज्य ! जिनवर स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ति दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।6।।

ॐ ह्रीं भौम ग्रह अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

है कर्म जगत् में महाबली, उसको भी आप हराए हैं।
गुप्ति आदि तप करके क्षय, कर्मों का करने आये हैं।।
हम धूप अनल में खेते हैं, हे वासुपूज्य ! जिनवर स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ति दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।7।।

ॐ ह्रीं भौम ग्रह अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जग से अति भिन्न अलौकिक फल, निर्वाण महाफल पाये हैं।
हम आकुल व्याकुलता तजने, यह श्री फल लेकर आये हैं।।
हम मोक्ष महाफल पा जाएँ, हे वासुपूज्य ! जिनवर स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ति दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।8।।

ॐ ह्रीं भौम ग्रह अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में सद् असद् द्रव्य जो हैं, उन सबके अर्घ बताए हैं।
अब पद अनर्घ की प्राप्ति हेतु, हम अर्घ बनाकर लाए हैं।।
हम पद अनर्घ को पा जाएँ, हे वासुपूज्य ! जिनवर स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ति दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।9।।

ॐ ह्रीं भौम ग्रह अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक के अर्घ्य

छटवीं कृष्ण अषाढ़ की, हुआ गर्भ कल्याण।
सुर नर किन्नर भाव से, करते प्रभु गुणगान।।1।।

ॐ ह्रीं आषाढ़ कृष्ण षष्ठीयां गर्भमंगल मण्डिताय भौम ग्रह अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी, जन्मे श्री भगवान।
सुर नर वंदन कर रहे, वासुपूज्य पद आन।।2।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण चतुर्दश्यां जन्ममंगल मण्डिताय भौम ग्रह अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी, तप धारे अभिराम।
सुर नर इन्द्र महेन्द्र सब, करते चरण प्रणाम।।3।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण चतुर्दश्यां तपो मंगल मण्डिताय भौम ग्रह अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भादों कृष्ण द्वितिया तिथि, पाये केवलज्ञान।
समवशरण में पूजते, सुर नर ऋषि महान्।।4।।

ॐ ह्रीं भाद्रपद कृष्ण द्वितीयायां ज्ञानमंगल मण्डिताय भौम ग्रह अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भादों शुक्ला चतुर्दशी, प्रभु पाए निर्वाण।
पाँचों कल्याणक हुए, चंपापुर में आन।।5।।

ॐ ह्रीं भाद्रपद शुक्ल चतुर्दश्यां मोक्ष मंगल मण्डिताय भौम ग्रह अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– **वासुपूज्य वसुपूज्य सुत, जयावती के लाल।**
वसु द्रव्यों से पूजकर, करूँ विशद जयमाल।।

(छंद मोतियादाम)

प्रभु प्रगटाए दर्शन ज्ञान, अनंत सुखामृत वीर्य महान्।
प्रभु पद आये इन्द्र नरेन्द्र, प्रभु पद पूजें देव शतेन्द्र।।
प्रभु सब छोड़ दिए जग राग, जगा अंतर में भाव विराग।
लख्यो प्रभु लोक अलोक स्वरूप, झुके कई आन प्रभु पद भूप।।
तज्यो गज राज समाज सुराज, बने प्रभु संयम के सरताज।
अनित्य शरीर धरा धन धाम, तजे प्रभु मोह कषाय अरु काम।।

ये लोक कहा क्षणभंगुर देव, नशे क्षण में जल बुद-बुद एव।
अनेक प्रकार धरी यह देह, किए जग जीवन मांहि सनेह।।
अपावन सात कुधातु समेत, ठगे बहु भांति सदा दुख देत।
करे तन से जिय राग सनेह, बंधे वसु कर्म जिये प्रति येह।।
धरें जग गुप्ति समिति सुधर्म, तवै हो संवर निर्जर कर्म।
किए जब कर्म कलंक विनाश, लहे तब सिद्ध शिला पर वास।।
रहा अति दुर्लभ आतम ज्ञान, किए तिय काल नहीं गुणगान।
भ्रमे जग में हम बोध विहीन, रहे मिथ्यात्व कुतत्व प्रवीण।।
तज्यो जिन आगम संयम भाव, रहा निज में श्रद्धान अभाव।
सुदुर्लभ द्रव्य सुक्षेत्र सुकाल, सुभाव मिले नहिं तीनों काल।।
जग्यो सब योग सुपुण्य विशाल, लियो तब मन में योग सम्हाल।
विचारत योग लौकांतिक आय, चरण पद पंकज पुष्प चढ़ाय।।
प्रभु तब धन्य किए सुविचार, प्रभु तप हेतु किए सुविहार।
तवै सौधर्म 'सु शिविका' लाय, चले शिविका चढ़ि आप जिनाय।।
धरे तप केश सुलौंच कराय, प्रभु निज आतम ध्यान लगाय।
भयो तब केवल ज्ञान प्रकाश, किए तव सारे कर्म विनाश।।
दियो प्रभु भव्य जगत उपदेश, धरो फिर प्रभु ने योग विशेष।
तभी प्रभु मोक्ष महाफल पाय, हुए करुणानिधि अनंत सुखाय।।
रचें हम पूजा सुभाव विभोर, करें नित वंदन द्वयकर जोर।

(छंद घत्तानंद)

जय-जय जिनदेवं हरिकृत सेवं, सुरकृत वंदित शीलधरं।
भव भय हरतारं शिव कर्त्तारं, शीलागारं नाथ परं।।

ॐ ह्रीं भौम अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- **चम्पापुर में ही प्रभु, पाए पंच कल्याण।**
गर्भ जन्म तप ज्ञान शुभ, पाए पद निर्वाण।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

प्रथम वलय

दोहा- **प्रकट किए नव लब्धियाँ, वासुपूज्य भगवान।**
अष्ट द्रव्य से पूजकर, करते हैं गुणगान।।

।। इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

स्थापना

हे वासुपूज्य ! तुम जगत् पूज्य, सर्वज्ञ देव करुणाधारी।
मंगल अरिष्ट शांतिदायक, महिमा महान् मंगलकारी।।
मेरे उर के सिंहासन पर, प्रभु आन पधारो त्रिपुरारी।
तुम चिदानंद आनंद कंद, करुणा निधान संकटहारी।।
जिन वासुपूज्य तुम लोक पूज्य, तुमको हम भक्त पुकार रहे।
दो हमको शुभ आशीष परम शुभ, उर से करुणा स्रोत बहे।।

ॐ ह्रीं भौम ग्रह अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

नौ क्षायिक लब्धियों के अर्घ्य

ज्ञानावरणी कर्म विनाशे, केवलज्ञान जगाए हैं।
ऐसे श्री अरहंत प्रभु पद, सादर शीष झुकाए हैं।
तीन गति के जीव भाव से, भक्ति करने आते हैं।
कर्म घातिया क्षय करके प्रभु, क्षायिक लब्धि पाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं ज्ञानावरणी कर्म विनाशक भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म दर्शनावरणी नाशे, क्षायिक दर्शन पाए हैं।
क्षायिक लब्धि पाने वाले, तीर्थंकर कहलाए हैं।
तीन गति के जीव भाव से, भक्ति करने आते हैं।
कर्म घातिया क्षय करके प्रभु, क्षायिक लब्धि पाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं दर्शनावरणी कर्म विनाशक भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन मोही कर्म विनाशे, सत् सम्यक्त्व जगाए हैं।
कर्म घातिया क्षय करके प्रभु, क्षायिक लब्धि पाए हैं।
तीन गति के जीव भाव से, भक्ति करने आते हैं।
कर्म घातिया क्षय करके प्रभु, क्षायिक लब्धि पाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं दर्शन मोहनीय कर्म विनाशक क्षायिक सम्यक्त्व लब्धि प्राप्त भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चारित मोही कर्म विनाशे, क्षायिक चारित पाए हैं।
कर्म घातिया नाश किए प्रभु, तीर्थंकर कहलाए हैं।
तीन गति के जीव भाव से, भक्ति करने आते हैं।
कर्म घातिया क्षय करके प्रभु, क्षायिक लब्धि पाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं चारित्र मोहनीय कर्म विनाशक क्षायिक चारित्र लब्धि प्राप्त भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म विनाशी अन्तराय के, पाए हैं जो क्षायिक दान।
क्षायिक लब्धि पाने वाले, तीन लोक में रहे महान्।
तीन गति के जीव भाव से, भक्ति करने आते हैं।
कर्म घातिया क्षय करके प्रभु, क्षायिक लब्धि पाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं दान अन्तराय कर्म विनाशक क्षायिक दान लब्धि प्राप्त भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लाभ अन्तराय कर्म विनाशे, पाए क्षायिक लाभ महान्।
पूज्यनीय हो गये लोक में, करते हैं जग का कल्याण।
तीन गति के जीव भाव से, भक्ति करने आते हैं।
कर्म घातिया क्षय करके प्रभु, क्षायिक लब्धि पाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं लाभ अन्तराय कर्म विनाशक क्षायिक लाभ लब्धि प्राप्त भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भोग अन्तराय कर्म विनाशे, पाए हैं जो क्षायिक भोग।
तीनों योगों के धारी को, मिटे जन्म मृत्यु के रोग।
तीन गति के जीव भाव से, भक्ति करने आते हैं।
कर्म घातिया क्षय करके प्रभु, क्षायिक लब्धि पाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं भोग अन्तराय कर्म विनाशक क्षायिक भोग लब्धि प्राप्त भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्तराय कर्मों के नाशी, पाए हैं क्षायिक उपभोग।
करके योग निरोध जिनेश्वर, पाते मुक्ति का संयोग।
तीन गति के जीव भाव से, भक्ति करने आते हैं।
कर्म घातिया क्षय करके प्रभु, क्षायिक लब्धि पाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं उपभोग अन्तराय कर्म विनाशक क्षायिक उपभोग लब्धि प्राप्त भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीर्यान्तराय कर्म के नाशी, पाए क्षायिक वीर्य महान्।
क्षायिक लब्धि पाने वाले, करते हैं जग का कल्याण।
तीन गति के जीव भाव से, भक्ति करने आते हैं।
कर्म घातिया क्षय करके प्रभु, क्षायिक लब्धि पाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं वीर्यान्तराय कर्म विनाशक क्षायिक वीर्य लब्धि प्राप्त भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षायिक नौ लब्धि जो पाए, कर्म घातिया किए विनाश।
ज्ञाता दृष्टा हुए लोक में, कीन्हे निज आतम में वास।
तीन गति के जीव भाव से, भक्ति करने आते हैं।
कर्म घातिया क्षय करके प्रभु, क्षायिक लब्धि पाते हैं।।10।।

ॐ ह्रीं चतु: घातिया कर्म विनाशक क्षायिक नौ लब्धि प्राप्त भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय वलय

दोहा– **दोष अठारह से रहित, होते हैं जिनराज।**
उनकी पूजा मैं करूँ, तीन योग से आज।।

।। द्वितीय मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

स्थापना

हे वासुपूज्य ! तुम जगत् पूज्य, सर्वज्ञ देव करुणाधारी।
मंगल अरिष्ट शांतिदायक, महिमा महान् मंगलकारी।।
मेरे उर के सिंहासन पर, प्रभु आन पधारो त्रिपुरारी।
तुम चिदानंद आनंद कंद, करुणा निधान संकटहारी।।
जिन वासुपूज्य तुम लोक पूज्य, तुमको हम भक्त पुकार रहे।
दो हमको शुभ आशीष परम शुभ, उर से करुणा स्रोत बहे।।

ॐ ह्रीं भौम ग्रह अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

18 दोष रहित श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र

जो कर्म घातिया नाश किए, अरु केवलज्ञान प्रकाशे हैं।
वह तीन लोक में पूज्य हुए, अरु क्षुधा वेदना नाशे हैं।
हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, श्री जिन चरण चढ़ाते हैं।
श्री वासुपूज्य के चरण कमल में, सादर शीष झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं क्षुधा रोग विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृषा वेदना से व्याकुल, जग जीव सताते आए हैं।
जिसने जीता यह तृषा दोष, वह तीर्थंकर कहलाए हैं।
हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, श्री जिन चरण चढ़ाते हैं।
श्री वासुपूज्य के चरण कमल में, सादर शीष झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं तृषा दोष विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम जन्म मृत्यु के रोगों से, सदियों से सताते आये हैं।
जो जन्म रोग का नाश किए, वह तीर्थंकर कहलाए हैं।
हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, श्री जिन चरण चढ़ाते हैं।
श्री वासुपूज्य के चरण कमल में, सादर शीष झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं जन्म दोष विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है अर्ध मृतक सम बूढ़ापन, उससे हम पार न पाए हैं।
अब जरा रोग के नाश हेतु, जिन चरण शरण में आए हैं।
हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, श्री जिन चरण चढ़ाते हैं।
श्री वासुपूज्य के चरण कमल में, सादर शीष झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं जरा दोष विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मृत्यु का रोग भयानक है, उससे न कोई बच पाते हैं।
जो जीत लेय इस शत्रु को, वह तीर्थंकर बन जाते हैं।
हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, श्री जिन चरण चढ़ाते हैं।
श्री वासुपूज्य के चरण कमल में, सादर शीष झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं मृत्यु दोष विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कई कौतूहल होते जग में, करते हैं विस्मय लोग सभी।
जिनवर ने विस्मय नाश किया, उनको विस्मय न होय कभी।
हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, श्री जिन चरण चढ़ाते हैं।
श्री वासुपूज्य के चरण कमल में, सादर शीष झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं विस्मय दोष विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

न कोई शत्रु हमारा है, हम हैं चित् चेतन रूप अहा।
हैं अरति दोष के नाशी जिन, उन सम मेरा स्वरूप रहा।
हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, श्री जिन चरण चढ़ाते हैं।
श्री वासुपूज्य के चरण कमल में, सादर शीष झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं अरति दोष विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह जग जीवन क्षण भंगुर है, सब मोह बली की माया है।
जिनवर ने खेद विनाश किया, सच्चे स्वरूप को पाया है।
हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, श्री जिन चरण चढ़ाते हैं।
श्री वासुपूज्य के चरण कमल में, सादर शीष झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं खेद दोष विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह तन पुद्गल से निर्मित है, कई रोगों की जो खान कहा।
नाश किए हैं रोग श्री जिन, पाये पद निर्वाण अहा।
हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, श्री जिन चरण चढ़ाते हैं।
श्री वासुपूज्य के चरण कमल में, सादर शीष झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं रोग दोष विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनका कोई इष्ट अनिष्ट नहीं, जो समता भाव के धारी हैं।
वह सर्व शोक के नाशी हैं, जिन की महिमा अति न्यारी है।
जो भाव सहित जिन चरणों में, जाकर के अर्घ्य चढ़ाते हैं।
वह सर्व सिद्धियों को पाकर, सारे जग के सुख पाते हैं।।10।।

ॐ ह्रीं शोक दोष विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानादि आठ महामद हैं, जो विनय भाव को खोते हैं।
जो विजय प्राप्त करते मद पर, वह तीर्थंकर जिन होते हैं।
जो भाव सहित जिन चरणों में, जाकर के अर्घ्य चढ़ाते हैं।
वह सर्व सिद्धियों को पाकर, सारे जग के सुख पाते हैं।।11।।

ॐ ह्रीं मद दोष विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है मोह महा मिथ्या कलंक, जिससे प्राणी जग भ्रमण करे।
जो मोह महामद नाश करें, वह आतम रस में रमण करे।
जो भाव सहित जिन चरणों में, जाकर के अर्घ्य चढ़ाते हैं।
वह सर्व सिद्धियों को पाकर, सारे जग के सुख पाते हैं।।12।।

ॐ ह्रीं मोह दोष विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निद्रा देवी ने इस जग के, सब जीवों को भरमाया है।
जिसने निद्रा को जीत लिया, उसने अर्हन्त पद पाया है।
जो भाव सहित जिन चरणों में, जाकर के अर्घ्य चढ़ाते हैं।
वह सर्व सिद्धियों को पाकर, सारे जग के सुख पाते हैं।।13।।

ॐ ह्रीं निद्रा दोष विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिंता में चित्त मलीन रहे तो, चित् का चिन्तन खो जाए।
जो खो दे चिंता की शक्ति, वह शीघ्र सिद्ध पद को पाए।
जो भाव सहित जिन चरणों में, जाकर के अर्घ्य चढ़ाते हैं।
वह सर्व सिद्धियों को पाकर, सारे जग के सुख पाते हैं।।14।।

ॐ ह्रीं चिंता दोष विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म घातिया नाश किए जो, परमौदारिक तन पाए।
स्वेद रहे न उनके तन में, तीर्थंकर जिन कहलाए।
जो भाव सहित जिन चरणों में, जाकर के अर्घ्य चढ़ाते हैं।
वह सर्व सिद्धियों को पाकर, सारे जग के सुख पाते हैं ।।15।।

ॐ ह्रीं स्वेद दोष विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सारे जग से नाता तोड़ा, जो वीतरागता पाए हैं।
वह राग दोष का नाश किए, अरू तीर्थंकर कहलाए है।
जो भाव सहित जिन चरणों में, जाकर के अर्घ्य चढ़ाते हैं।
वह सर्व सिद्धियों को पाकर, सारे जग के सुख पाते हैं ।।16।।

ॐ ह्रीं राग दोष विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनको किंचित् मोह नहीं, जो निज स्वभाव में लीन रहे।
वह द्वेष भाव का नाश किए, जिन धर्म तीर्थ के नाथ कहे।
जो भाव सहित जिन चरणों में, जाकर के अर्घ्य चढ़ाते हैं।
वह सर्व सिद्धियों को पाकर, सारे जग के सुख पाते हैं ।।17।।

ॐ ह्रीं द्वेष दोष विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भय से हो भयभीत सभी जन, दु:ख अनेकों पाते हैं।
भय का नाश किए जिन स्वामी, तीर्थंकर कहलाते हैं।
भाव सहित जिन चरणों में हम, पावन अर्घ्य चढ़ाते हैं।
जिन के गुण को पाने हेतु, महिमा जिनकी गाते हैं ।।18।।

ॐ ह्रीं भय दोष विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोष अठारह कहे लोक में, इनसे जीव सताए हैं।
सर्व दोष से हीन हुए जो, वह अर्हत् कहलाए हैं।

भाव सहित जिन चरणों में हम, पावन अर्घ्य चढ़ाते हैं।
जिन के गुण को पाने हेतु, महिमा जिनकी गाते हैं ।।19।।

ॐ ह्रीं अष्टादश दोष विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय वलय

सोरठा– **आश्रव के हैं द्वार, बत्तिस घाती कर्म चउ।**
कीन्हे प्रभु निवार, केवलज्ञान जगाए हैं।।

।। तृतीय मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलि क्षिपेत् ।।

स्थापना

हे वासुपूज्य ! तुम जगत् पूज्य, सर्वज्ञ देव करुणाधारी।
मंगल अरिष्ट शांतिदायक, महिमा महान् मंगलकारी।।
मेरे उर के सिंहासन पर, प्रभु आन पधारो त्रिपुरारी।
तुम चिदानंद आनंद कंद, करुणा निधान संकटहारी।।
जिन वासुपूज्य तुम लोक पूज्य, तुमको हम भक्त पुकार रहे।
दो हमको शुभ आशीष परम शुभ, उर से करुणा स्रोत बहे।।

ॐ ह्रीं भौम ग्रह अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

32 आश्रव + 4 बन्ध विहीन श्री जिन के अर्घ्य

बली आदि हिंसा करके जो, धर्म बतावें जग के जीव।
वह विपरीत कहे मिथ्यात्वी, कर्म बन्ध जो करें अतीव।।
मिथ्या भाव त्याग सद्दर्शन, पाकर करूँ कर्म का नाश।
'विशद' ज्ञान से कर्म नशाऊँ, पाऊँ मोक्षपुरी में वास।।1।।

ॐ ह्रीं विपरीत मिथ्यात्व विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तज निश्चय व्यवहार नयों को, जाने नहीं वस्तु का भेद।
मिथ्यात्वी एकान्तवाद के, नित प्रति करते रहते खेद।।
मिथ्या भाव त्याग सद्दर्शन, पाकर करूँ कर्म का नाश।
'विशद' ज्ञान से कर्म नशाऊँ, पाऊँ मोक्षपुरी में वास।।2।।

ॐ ह्रीं एकान्त मिथ्यात्व विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रागी और विरागी मत को, मान रहे जो एक समान।
मिथ्यात्वी वैनयिक कहे वह, करते मिथ्या में श्रद्धान।।
मिथ्या भाव त्याग सद्दर्शन, पाकर करूँ कर्म का नाश।
'विशद' ज्ञान से कर्म नशाऊँ, पाऊँ मोक्षपुरी में वास।।3।।

ॐ ह्रीं विनय मिथ्यात्व विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीतराग मय धर्म सत्य या, राग सहित होता है धर्म।
मिथ्यात्वी संशय वादी कुछ, प्राप्त नहीं कर पाते मर्म।।
मिथ्या भाव त्याग सद्दर्शन, पाकर करूँ कर्म का नाश।
'विशद' ज्ञान से कर्म नशाऊँ, पाऊँ मोक्षपुरी में वास।।4।।

ॐ ह्रीं संशय मिथ्यात्व विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

योग्यायोग्य जानते न कुछ, मूढ़ हिताहित से भी हीन।
अज्ञानी मिथ्यात्वी हैं वह, आत्मज्ञान से रहे विहीन।।
मिथ्या भाव त्याग सद्दर्शन, पाकर करूँ कर्म का नाश।
'विशद' ज्ञान से कर्म नशाऊँ, पाऊँ मोक्षपुरी में वास।।5।।

ॐ ह्रीं अज्ञान मिथ्यात्व विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहीं हैं त्यागी हिंसा के जो, त्रस स्थावर दोय प्रकार।
वह हिंसा अविरत के धारी, बढ़ा रहे अपना संसार।।
सम्यक् चारित पाने हेतु, चढ़ा रहे हम चरणों अर्घ्य।
अष्ट कर्म का नाश करें अरु, प्राप्त करें हम सुपद अनर्घ।।6।।

ॐ ह्रीं हिंसाविरति विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

असत् वचन को छोड़ न पाते, सत्य से रहते कोसों दूर।
वह असत्याव्रत के धारी, पापों से रहते भरपूर।।
सम्यक् चारित पाने हेतु, चढ़ा रहे हम चरणों अर्घ्य।
अष्ट कर्म का नाश करें अरु, प्राप्त करें हम सुपद अनर्घ।।7।।

ॐ ह्रीं असत्याविरति विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर के धन का हरण करें जो, व्रत अचौर्य न जान रहे।
चौर्याव्रत के धारी हैं वह, नर हो पशु समान कहे।।
सम्यक् चारित पाने हेतु, चढ़ा रहे हम चरणों अर्घ्य।
अष्ट कर्म का नाश करें अरु, प्राप्त करें हम सुपद अनर्घ।।8।।

ॐ ह्रीं चौर्याविरति विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रह्मचर्य न धारण करते, शीलव्रतों से रहते दूर।
वह कुशील अव्रत के धारी, मोही कहे गये अतिक्रूर।।
सम्यक् चारित पाने हेतु, चढ़ा रहे हम चरणों अर्घ्य।
अष्ट कर्म का नाश करें अरु, प्राप्त करें हम सुपद अनर्घ।।9।।

ॐ ह्रीं कुशीलाविरति विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मूर्छा भाव रहा अन्तर में, संग्रह वृत्ति धार रहे।
परिग्रह अविरत के धारी वह, श्मश्रू के अवतार कहे।।
सम्यक् चारित पाने हेतु, चढ़ा रहे हम चरणों अर्घ्य।
अष्ट कर्म का नाश करें अरु, प्राप्त करें हम सुपद अनर्घ।।10।।

ॐ ह्रीं परिग्रहाविरति विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्त्री की चर्चा में लीन, अज्ञानीजन रहे प्रवीण।
यह विकथा कही जिनदेव, कर्माश्रव का कारण एव।।
हम प्रमाद से दूर रहें, भावों से भरपूर रहें।
यही भावना भाते हैं, चरणों शीष झुकाते हैं।।11।।

ॐ ह्रीं स्त्री कथा विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चोर कथा में रहते लीन, श्रेष्ठ मानते उसको दीन।
यह विकथा कही जिनदेव, कर्माश्रव का कारण एव।।
हम प्रमाद से दूर रहें, भावों से भरपूर रहें।
यही भावना भाते हैं, चरणों शीष झुकाते हैं।।12।।

ॐ ह्रीं चोर कथा विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करते भोजन कथा हमेश, धर्म कार्य न करते लेश।
यह विकथा कही जिनदेव, कर्माश्रव का कारण एव।।
हम प्रमाद से दूर रहें, भावों से भरपूर रहें।
यही भावना भाते हैं, चरणों शीष झुकाते हैं।।13।।

ॐ ह्रीं भोजन कथा विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राजा राज्य की चर्चा एव, नित्य प्रति जो करें सदैव।
यह विकथा कही जिनदेव, कर्माश्रव का कारण एव।।

हम प्रमाद से दूर रहें, भावों से भरपूर रहें।
यही भावना भाते हैं, चरणों शीष झुकाते हैं।।14।।

ॐ ह्रीं राज्य कथा विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं अष्ट कर्म स्पर्शन के, जो मन को मोहित करते हैं।
आश्रव होता करके प्रमाद, चेतन की शक्ति हरते हैं।।
हम विष सम विषयों को तजकर, निज आतम रस में रमण करें।
आश्रव के रोध हेतु भगवन्, तव चरणों में हम नमन् करें।।15।।

ॐ ह्रीं स्पर्शन इन्द्रिय विषय विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रसना के पञ्च विषय होते, जो विषयों में अटकाते हैं।
यह कर्माश्रव के कारण हैं, सारे जग में भटकाते हैं।।
हम विष सम विषयों को तजकर, निज आतम रस में रमण करें।
आश्रव के रोध हेतु भगवन्, तव चरणों में हम नमन् करें।।16।।

ॐ ह्रीं रसना इन्द्रिय विषय विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

होते हैं विषय घ्राण के दो, जो आश्रव बन्ध कराते हैं।
हैं उभय लोक दुःख के कारण, केवलज्ञानी बतलाते हैं।।
हम विष सम विषयों को तजकर, निज आतम रस में रमण करें।
आश्रव के रोध हेतु भगवन्, तव चरणों में हम नमन् करें।।17।।

ॐ ह्रीं घ्राण इन्द्रिय विषय विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चक्षु इन्द्रिय के पञ्च विषय, पाँचों पापों के हेतु हैं।
हैं उभय लोक में दुखदायी, जो कर्माश्रव के सेतु हैं।।
हम विष सम विषयों को तजकर, निज आतम रस में रमण करें।
आश्रव के रोध हेतु भगवन्, तव चरणों में हम नमन् करें।।18।।

ॐ ह्रीं चक्षु इन्द्रिय विषय विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है सप्त विषय कर्णेन्द्रिय के, जिससे होता है कर्माश्रव।
भटकाते चारों गतियों में, दुःखों के हेतु हैं भव भव।।
हम विष सम विषयों को तजकर, निज आतम रस में रमण करें।
आश्रव के रोध हेतु भगवन्, तव चरणों में हम नमन् करें।।19।।

ॐ ह्रीं कर्णेन्द्रिय विषय विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कषाय अनन्तानुबन्धी से, कर्माश्रव करते हैं जीव।
भ्रमण करें तीनों लोकों में, पावें जग के दुःख अतीव।।
सम्यक् चारित्र के द्वारा अब पाऊँ, केवलज्ञान प्रकाश।
वासुपूज्य जिन की पूजाकर, पा जाऊँ मैं मुक्ती वास।।20।।

ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धी कषाय विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अप्रत्याख्यान कषायोदय से, अणुव्रत के भाव न होते हैं।
अविरत रहकर आश्रव करते, अरु बीज कर्म के बोते हैं।।
सम्यक् चारित्र के द्वारा अब पाऊँ, केवलज्ञान प्रकाश।
वासुपूज्य जिन की पूजाकर, पा जाऊँ मैं मुक्ती वास।।21।।

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यान कषाय विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्याख्यान कषायोदय से, महाव्रती न बन पावें।
देशव्रती बन फिरें भटकते, जन्म मरण के दुःख पावें।।
सम्यक् चारित्र के द्वारा अब पाऊँ, केवलज्ञान प्रकाश।
वासुपूज्य जिन की पूजाकर, पा जाऊँ मैं मुक्ती वास।।22।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान कषाय विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदय संज्वलन का होने से, यथाख्यात न हो चारित्र।
शुद्ध ध्यान न प्राप्त होय अरु, केवलज्ञान न होय पवित्र।।
सम्यक् चारित्र के द्वारा अब पाऊँ, केवलज्ञान प्रकाश।
वासुपूज्य जिन की पूजाकर, पा जाऊँ मैं मुक्ती वास।।23।।

ॐ ह्रीं संज्वलन कषाय विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षमा भाव को तजने वाले, क्रोध करें जग के जो जीव।
भव सागर में भ्रमण करें वह, पावे जग के दुःख अतीव।।
उत्तम क्षमा भाव के द्वारा, करूँ क्रोध का पूर्ण विनाश।
पूजा कर जिन वासुपूज्य की, विशद ज्ञान का होय प्रकाश।।24।।

ॐ ह्रीं क्रोध कषाय विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विनय भाव को तजने वाले, प्राणी करते हैं जो मान।
द्वेष बैर आदि के द्वारा, पाते हैं वह दुःख महान्।।
उत्तम मार्दव के द्वारा अब, करूँ मान का पूर्ण विनाश।
पूजा कर जिन वासुपूज्य की, विशद ज्ञान का होय प्रकाश।।25।।

ॐ ह्रीं मान कषाय विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आर्जव भाव छोड़ने वाले, मायाचारी करते लोग।
छल छद्रम करके दुःख पाते, पशु गति का पाते योग।।
उत्तम आर्जव के द्वारा अब, हो माया का पूर्ण विनाश।
पूजा कर जिन वासुपूज्य की, विशद ज्ञान का होय प्रकाश।।26।।

ॐ ह्रीं माया कषाय विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शौच धर्म तज के जगवासी, लुब्धदत्त सम करते लोभ।
जोड़-जोड़ धन कर्म बाँधते, अनरक्षा में करते क्षोभ।।
उत्तम शौच धर्म के द्वारा, करूँ लोभ का पूर्ण विनाश।
पूजा कर जिन वासुपूज्य की, विशद ज्ञान का होय प्रकाश।।27।।

ॐ ह्रीं लोभ कषाय विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनोयोग की व्यर्थ क्रिया से, आश्रव कर्मों का होवे।
जीव भ्रमण करते हैं जग में, चेतन की शक्ती खोवे।।
मनो गुप्ति के द्वारा हमको, करना भाई आत्म प्रकाश।
पूजा कर जिन वासुपूज्य की, विशद ज्ञान का होय प्रकाश।।28।।

ॐ ह्रीं मन योग विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचन योग की व्यर्थ क्रिया से, कलह द्वेष आदि होवे।
कर्माश्रव होता है भारी, चेतन की शक्ति खोवे।।
वचन गुप्ति का पालन करके, करना है अब आत्म प्रकाश।
पूजा कर जिन वासुपूज्य की, विशद ज्ञान का होय प्रकाश।।29।।

ॐ ह्रीं वचन योग विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यर्थ क्रिया करने से तन की, हो कर्मों का आश्रव व्यर्थ।
तन मन की हानि होती है, हो जाते हैं कई अनर्थ।।
काय गुप्ति के द्वारा हमको, करना भाई आत्म प्रकाश।
पूजा कर जिन वासुपूज्य की, विशद ज्ञान का होय प्रकाश।।30।।

ॐ ह्रीं काय योग विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रम अरु खेद को करने दूर, निद्रा लेते हैं भरपूर।
यह प्रमाद कहलाता है, आश्रव पूर्ण कराता है।।
हम प्रमाद से दूर रहें, भावों से भरपूर रहे।
यही भावना भाते हैं, चरणों शीष झुकाते हैं।।31।।

ॐ ह्रीं निद्रा प्रमाद विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्त्री पुत्रादि से हो नेह, आश्रव बन्ध के कारण येह।
यह प्रमाद कहलाता है, भव में भ्रमण कराता है।।
हम प्रमाद से दूर रहें, भावों से भरपूर रहें।
यही भावना भाते हैं, चरणों शीष झुकाते हैं।।32।।

ॐ ह्रीं प्रणय (स्नेह) प्रमाद विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानावरण आदि कर्मों का, है स्वभाव नाम अनुसार।
प्रकृति बन्ध होय जीवों को, जिससे बढ़ता है संसार।।
रत्नत्रय के द्वारा अपने, कर्म बन्ध का करूँ विनाश।
पूजा कर जिन वासुपूज्य की, विशद ज्ञान का होय प्रकाश।।33।।

ॐ ह्रीं प्रकृति बन्ध विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानावरण आदि कर्मों की, स्थिति होती कई प्रकार।
स्थिति बन्ध होय जीवों की, कर्मों की प्रकृति अनुसार।।
रत्नत्रय के द्वारा अपने, कर्म बन्ध का करूँ विनाश।
पूजा कर जिन वासुपूज्य की, विशद ज्ञान का होय प्रकाश।।34।।

ॐ ह्रीं स्थिति बन्ध विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानावरण आदि कर्मों का, भिन्न भिन्न होता अनुभाग।
हो अनुभाग बन्ध जीवों का, अत: कर्म संवर में लाग।।
रत्नत्रय के द्वारा अपने, कर्म बन्ध का करूँ विनाश।
पूजा कर जिन वासुपूज्य की, विशद ज्ञान का होय प्रकाश।।35।।

ॐ ह्रीं अनुभाग बन्ध विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानावरण आदि कर्मों के, होते संख्यातीत प्रदेश।
हो प्रदेश का बन्ध जीव को, कहते हैं यह जिन तीर्थेश।।
रत्नत्रय के द्वारा अपने, कर्म बन्ध का करूँ विनाश।
पूजा कर जिन वासुपूज्य की, विशद ज्ञान का होय प्रकाश।।36।।

ॐ ह्रीं प्रदेश बन्ध विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बत्तिस द्वार कहे आश्रव के, दु:ख के कारण कहलाए।
भव-भव भ्रमण कराते हैं जो, उनसे पार नहीं पाए।।
रत्नत्रय के द्वारा अपने, कर्म बन्ध का करूँ विनाश।
पूजा कर जिन वासुपूज्य की, विशद ज्ञान का होय प्रकाश।।37।।

ॐ ह्रीं द्वात्रिंशत् आश्रव द्वार एवं चतु बन्ध विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थ वलय

सोरठा- **समवशरण में शोभते, मूलगुणों के साथ।**
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, दश धर्मों के नाथ।।

।। मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

स्थापना

हे वासुपूज्य ! तुम जगत् पूज्य, सर्वज्ञ देव करुणाधारी।
मंगल अरिष्ट शांतिदायक, महिमा महान् मंगलकारी।।
मेरे उर के सिंहासन पर, प्रभु आन पधारो त्रिपुरारी।
तुम चिदानंद आनंद कंद, करुणा निधान संकटहारी।।
जिन वासुपूज्य तुम लोक पूज्य, तुमको हम भक्त पुकार रहे।
दो हमको शुभ आशीष परम शुभ, उर से करुणा स्रोत बहे।।

ॐ ह्रीं भौम ग्रह अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

10 जन्म के अतिशय

दश अतिशय जनमत जिन पाय, पूजत सुर नर हर्ष मनाय।
स्वेद रहित जिनवर तन पाय, उन जिन पद हम अर्घ्य चढ़ाय।।1।।

ॐ ह्रीं स्वेद रहित सहजातिशयधारक भौम ग्रह अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मल नहिं होय प्रभु तन मांहि, निर्मल रही देह सुख दाई।
जन्म लेत यह अतिशय पाय, उन जिन पद हम अर्घ्य चढ़ाय।।2।।

ॐ ह्रीं निहार रहित सहजातिशयधारक भौम ग्रह अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम चतुष्क संस्थान जो पाय, हीनाधिक तन होवे नाय।
जन्म लेत यह अतिशय पाय, उन जिन पद हम अर्घ्य चढ़ाय।।3।।

ॐ ह्रीं सम चतुष्क संस्थान सहजातिशयधारक भौम ग्रह अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संहनन वज्र वृषभ जो होय, अद्भुत शक्ति धारे सोय।
जन्म लेत यह अतिशय पाय, उन जिन पद हम अर्घ्य चढ़ाय।।4।।

ॐ ह्रीं वज्रवृषभनाराच संहनन सहजातिशयधारक भौम ग्रह अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परम सुगंधित पाते देह, भव्य जीव सब पावें स्नेह।
जन्म लेत यह अतिशय पाय, उन जिन पद हम अर्घ्य चढ़ाय।।5।।

ॐ ह्रीं सुगंधित तन सहजातिशयधारक भौम ग्रह अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशयकारी सुंदर रूप, फीके पड़ें जगत् के भूप।
जन्म लेत यह अतिशय पाय,उन जिन पद हम अर्घ्य चढ़ाय।।6।।

ॐ ह्रीं अतिशय रूप सहजातिशयधारक भौम ग्रह अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लक्षण एक सहस है आठ, सहस नाम जो पढ़ते पाठ।
जन्म लेत यह अतिशय पाय, उन जिन पद हम अर्घ्य चढ़ाय।।7।।

ॐ ह्रीं सहस्राष्ट शुभ लक्षण सहजातिशयधारक भौम ग्रह अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्वेत रक्त प्रभु के तन होय, वात्सल्य महिमा युत सोय।
जन्म लेत यह अतिशय पाय, उन जिन पद हम अर्घ्य चढ़ाय।।8।।

ॐ ह्रीं श्वेत रक्त सहजातिशयधारक भौम ग्रह अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हित मित प्रिय वचन सुखदाय, सुनकर हर प्राणी सुख पाय।
जन्म लेत यह अतिशय पाय, उन जिन पद हम अर्घ्य चढ़ाय।।9।।

ॐ ह्रीं प्रियहित वचन सहजातिशयधारक भौम ग्रह अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बल अतुल्य पाये जिनदेव, जग के जीव करें पद सेव।
जन्म लेत यह अतिशय पाय, उन जिन पद हम अर्घ्य चढ़ाय।।10।।

ॐ ह्रीं अतुल्य बल सहजातिशयधारक भौम ग्रह अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञान के 10 अतिशय

(अडिल्ल छंद)

अतिशय जिनवर केवलज्ञान के दश कहे।
योजन शत् इक में सुभिक्षता ही रहे।
केवलज्ञान का अतिशय जिनवर पाए हैं।
सुर नर पशु चरणों में शीष झुकाए हैं।।11।।

ॐ ह्रीं गव्यूति शत् चतुष्टय सुभिक्षत्व घातिक्षय जातिशय धारक भौम ग्रह अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवल ज्ञानी होय, गमन नभ में करें।
प्रभु चले जिस ओर, देवगण अनुसरें।
केवलज्ञान का अतिशय जिनवर पाए हैं।
सुर नर पशु चरणों में शीष झुकाए हैं।।12।।

ॐ ह्रीं आकाश गमन घातिक्षय जातिशय धारक भौम ग्रह अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर का हो गमन, सदा हितदाय जी।
तिस थानक नहिं, कोय मारने पाय जी।।
केवलज्ञान का अतिशय जिनवर पाए हैं।
सुर नर पशु चरणों में शीष झुकाए हैं।।13।।

ॐ ह्रीं उदयाभाव घातिक्षय जातिशय धारक भौम ग्रह अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर नर पशु जड़ कृत उपसर्ग चऊ कहे।
इनकी बाधा प्रभु के ऊपर नहीं रहे।
केवलज्ञान का अतिशय जिनवर पाए हैं।
सुर नर पशु चरणों में शीष झुकाए हैं।।14।।

ॐ ह्रीं उपसर्गाभाव घातिक्षय जातिशय धारक भौम ग्रह अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा आदि की पीड़ा से जग दुःख सह्यो।
सो जिन कवलाहार जान सब पर हर्‌यो।
केवलज्ञान का अतिशय जिनवर पाए हैं।
सुर नर पशु चरणों में शीष झुकाए हैं।।15।।

ॐ ह्रीं कवलाहाराभाव घातिक्षय जातिशय धारक भौम ग्रह अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण में श्री जिनवर स्थित रहे।
पूर्व दिशा मुख हो चतुर्दिक दिख रहे।।
केवलज्ञान का अतिशय जिनवर पाए हैं।
सुर नर पशु चरणों में शीश झुकाए हैं।।16।।

ॐ ह्रीं चतुर्मुख घातिक्षय जातिशय धारक भौम ग्रह अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राकृत संस्कृत सकल देश भाषा कही।
सब विद्या अधिपत्य सकल जानत सही।
केवलज्ञान का अतिशय जिनवर पाए हैं।
सुर नर पशु चरणों में शीष झुकाए हैं।।17।।

ॐ ह्रीं सर्व विद्येश्वरत्व घातिक्षय जातिशय धारक भौम ग्रह अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मूर्तिक तन पुद्‌गल अणु से बन रह्यो।
पड़े नहीं छाया, महा अचरज भयो।
केवलज्ञान का अतिशय जिनवर पाए हैं।
सुर नर पशु चरणों में शीष झुकाए हैं।।18।।

ॐ ह्रीं छाया रहित घातिक्षय जातिशय धारक भौम ग्रह अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर के नख केश, नाहिं वृद्धि करें।
ज्यों के त्यों ही रहें, प्रभु यह गुण धरें।
केवलज्ञान का अतिशय जिनवर पाए हैं।
सुर नर पशु चरणों में शीष झुकाए हैं।।19।।

ॐ ह्रीं समान नख केशत्व घातिक्षय जातिशय धारक भौम ग्रह अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेत्रों में टिमकार, केश भौं नहिं हिलें।
दृष्टि नाशा रहे, कोई हेतु मिलें।
केवलज्ञान का अतिशय जिनवर पाए हैं।
सुर नर पशु चरणों में शीष झुकाए हैं।।20।।

ॐ ह्रीं अक्षस्पंद रहित घातिक्षय जातिशय धारक भौम ग्रह अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

14 देवकृत अतिशय

अतिशय देवों कृत कहे, चौदह सर्व महान्।
सर्व जीव को सुख करे, अर्धमागधी बान।।21।।

ॐ ह्रीं सर्वार्धमागधीय भाषा देवोपनीतातिशय धारक भौम ग्रह अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवों में मैत्री रहे, जहँ जिन की थिति होय।
देव निमित्तक जानिए, अतिशय जिनके जोय।।22।।

ॐ ह्रीं सर्व जीव मैत्रीभाव देवोपनीतातिशय धारक भौम ग्रह अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फूल फलें षट् ऋतु के, जहँ जिन की थिति होय।
देवों का तो निमित्त है, अतिशय जिनका सोय।।23।।

ॐ ह्रीं सर्वर्तुफलादि तरु परिणाम देवोपनीतातिशय धारक भौम ग्रह अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्पणवत् भूमी रहे, जहँ जिन करें विहार।
अतिशय देवों कृत रहा, होय मंगलाचार।।24।।

ॐ ह्रीं आदर्शतल प्रतिमा रत्नमही देवोपनीतातिशय धारक भौम ग्रह अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंद सुगंधित शुभ सुखद, पुनि-पुनि चले बयार।
अतिशय श्री जिनदेव का, करता मंगलकार।।25।।

ॐ ह्रीं सुगंधित विहरण मनुगत वायुत्व देवोपनीतातिशय धारक भौम ग्रह अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व जीव आनंदमय, होवे मंगलकार।
अतिशय होवे यह परम, प्रभु का होय विहार।।26।।

ॐ ह्रीं सर्वानंद कारक देवोपनीतातिशय धारक भौम ग्रह अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय से जिनदेव के, भूगत कंटक होय।
ये अतिशय भी जहाँ में, देव निमित्तक सोय।।27।।

ॐ ह्रीं वायुकुमारोपशमित धूलि कंटकादि देवोपनीतातिशय धारक भौम ग्रह अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गंधोदक की वृष्टि हो, अतिशय करते देव।
महिमा यह जिनदेव की, सेवा करें सदैव।।28।।

ॐ ह्रीं मेघकुमार कृत गंधोदक वृष्टि देवोपनीतातिशय धारक भौम ग्रह अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव रचें पद तल कमल, गगन गमन जब होय।
अतिशय श्री जिनदेव का, देव निमित्तक सोय।।29।।

ॐ ह्रीं चरण कमल तल रचित स्वर्ण कमल देवोपनीतातिशय धारक भौम ग्रह अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुखकारी सब जीव को, निर्मल दिश आकाश।
देव करें भक्ति विमल, अतिशय जिन सुख राश।।30।।

ॐ ह्रीं गगन निर्मल देवोपनीतातिशय धारक भौम ग्रह अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धूम मेघ वर्जित सुभग, सब दिश निर्मल होय।
देव करें भक्ति परम, अतिशय जिन को जोय।।31।।

ॐ ह्रीं सर्व दिशा निर्मल देवोपनीतातिशय धारक भौम ग्रह अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्ति के वश देव शुभ, करते जय-जयकार।
पृथ्वी से आकाश तक, होवे मंगलकार।।32।।

ॐ ह्रीं आकाशे जय-जयकार देवोपनीतातिशय धारक भौम ग्रह अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वाण्ह यक्ष आगे चले, धर्म चक्र धर शीष।
अतिशय श्री जिनदेव का, चरण झुकें शत् ईश।।33।।

ॐ ह्रीं धर्म चक्र चतुष्टय देवोपनीतातिशय धारक भौम ग्रह अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगल द्रव्य वसु देवगण, लेकर चलते साथ।
अतिशय कर सुर नर सभी, चरण झुकाते माथ।।34।।

ॐ ह्रीं अष्ट मंगल द्रव्य देवोपनीतातिशय धारक भौम ग्रह अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट प्रातिहार्य

सोरठा

तरु अशोक सुखदाय, शोक निवारी जानिए।
प्रातिहार्य कहलाय, समवशरण की सभा में।।35।।

ॐ ह्रीं तरु अशोक सत्प्रातिहार्य सहिताय भौम ग्रह अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ सिंहासन होय, रत्न जड़ित सुंदर दिखे।
अधर तिष्ठते सोय, उदयाचल सों छवि दिखे।।36।।

ॐ ह्रीं सिंहासन सत्प्रातिहार्य सहिताय भौम ग्रह अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पवृष्टि शुभ होय, भांति-भांति के कुसुम से।
महा भक्तिवश सोय, मिलकर करते देव गण।।37।।

ॐ ह्रीं पुष्पवृष्टि सत्प्रातिहार्य सहिताय भौम ग्रह अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्य ध्वनि सुखकार, सुने पाप क्षय हो भला।
पावै सौख्य अपार, सुर नर पशु सब जगत के।।38।।

ॐ ह्रीं दिव्य ध्वनि सत्प्रातिहार्य सहिताय भौम ग्रह अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौंसठ चंवर ढुराय, प्रभु के आगे देवगण।
भक्ति सहित गुण गाय, अतिशय महिमा प्रकट हो।।39।।

ॐ ह्रीं चतु:षष्टि चंवर सत्प्रातिहार्य सहिताय भौम ग्रह अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्त सुभव दर्शाय, भामण्डल निज कांति से।
महा ज्योति प्रगटाय, कोटि सूर्य फीके पड़ें।।40।।

ॐ ह्रीं भामण्डल सत्प्रातिहार्य सहिताय भौम ग्रह अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव दुंदुभि नाद, करें देव मिलकर सुखद।
करें नहीं उन्माद, समवशरण में जाय के।।41।।

ॐ ह्रीं देव दुंदुभि सत्प्रातिहार्य सहिताय भौम ग्रह अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जड़ित सुनग तिय छत्र, तीन लोक के प्रभु की।
दर्शाते सर्वत्र, महिमाशाली है कहा।।42।।

ॐ ह्रीं छत्र त्रय सत्प्रातिहार्य सहिताय भौम ग्रह अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंत चतुष्टय के अर्घ्य

तीन काल अरु तीन लोक की, सर्व वस्तु के ज्ञाता हैं।
एक साथ सब कुछ दर्शायक, ज्ञानी आप विधाता हैं।।
ज्ञानावरणी का क्षय करके, केवलज्ञान को पाया है।
गुण अनंत की प्राप्ति हेतु, चरणों शीष झुकाया है।।43।।

ॐ ह्रीं अनन्त ज्ञान गुण प्राप्ताय भौम ग्रह अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व लोक के द्रव्य चराचर, उन सबके दर्शायक हैं।
दर्श अनंत के धारी प्रभुवर, सर्व जगत में लायक हैं।।
कर्म दर्शनावरणी क्षय कर, दर्श अनंत उपजाया है।
गुण अनंत की प्राप्ति हेतु, चरणों शीष झुकाया है।।44।।

ॐ ह्रीं अनन्त दर्शन गुण प्राप्ताय भौम ग्रह अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंत रहित अंतर से वर्जित, सुख अनंत को पाया है।
'विशद' गुणों को पाने हेतु, आतमध्यान लगाया है।।
महामोह का क्षय कर प्रभु ने, इन्द्रियातीत सुख पाया है।
गुण अनंत की प्राप्ति हेतु, चरणों शीष झुकाया है।।45।।

ॐ ह्रीं अनन्त सुख गुण प्राप्ताय भौम ग्रह अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आतम बल से प्रभु तुमने, बल अनंत प्रगटाया है।
जो बल पाया है प्रभु तुमने, उसका शुभ भाव बनाया है।।
अंतराय का छेदन करके, वीर्य अनंत उपजाया है।
गुण अनंत की प्राप्ति हेतु, चरणों शीष झुकाया है।।46।।

ॐ ह्रीं अनन्त वीर्य गुण प्राप्ताय भौम ग्रह अरिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण की चतुर्दिशा में, मान स्तम्भ बने हैं चार।
चैत्य प्रसाद भूमि है पहली, उनके आगे अति मनहार।
शोभित होते समवशरण में, तीर्थंकर जिन मंगलकार।
उनके चरणों वन्दन करते, विशद भाव से बारम्बार।।47।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित चतुर्दिग मानस्तंभ चैत्य प्रसाद भूमि स्थित जिनबिम्ब सहित भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चारों ओर खातिका है शुभ, जलचर जीवों से संयुक्त।
जल कल्लोलों से शोभित है, फूल खिले होकर उन्मुक्त।
शोभित होते समवशरण में, तीर्थंकर जिन मंगलकार।
उनके चरणों वन्दन करते, विशद भाव से बारम्बार।।48।।

ॐ ह्रीं खातिका भूमि स्थित जिनबिम्ब सहित भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प जलाशय से पूरित है, लता भूमि शुभ रही महान्।
अतिशय महिमाशाली है जो, उसका कौन करे गुणगान।
शोभित होते समवशरण में, तीर्थंकर जिन मंगलकार।
उनके चरणों वन्दन करते, विशद भाव से बारम्बार।।49।।

ॐ ह्रीं लता भूमि स्थित जिनबिम्ब सहित भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फल पुष्पों से शोभित तरुवर, उपवन भूमी में मनहार।
छटा निराली अनुपम जिसकी, जलती जिसमें मंद बयार।
शोभित होते समवशरण में, तीर्थंकर जिन मंगलकार।
उनके चरणों वन्दन करते, विशद भाव से बारम्बार।।50।।

ॐ ह्रीं उपवन भूमि स्थित जिनबिम्ब सहित भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्वज भूमि में ध्वज पवित्र शुभ, दश प्रकार चिह्नों से युक्त।
भवि जीवों को प्रमुदित करके, करती रोग शोक से मुक्त।
शोभित होते समवशरण में, तीर्थंकर जिन मंगलकार।
उनके चरणों वन्दन करते, विशद भाव से बारम्बार।।51।।

ॐ ह्रीं ध्वज भूमि स्थित जिनबिम्ब सहित भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनुपम हैं सिद्धार्थ वृक्ष शुभ, समवशरण में चारों ओर।
कल्पवृक्ष भूमि है अनुपम, करती सबको भाव विभोर।
शोभित होते समवशरण में, तीर्थंकर जिन मंगलकार।
उनके चरणों वन्दन करते, विशद भाव से बारम्बार।।52।।

ॐ ह्रीं कल्पवृक्ष भूमि स्थित जिनबिम्ब सहित भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भवन भूमि में भवन बने हैं, चतुर्दिशा में कई प्रकार।
देव इन्द्र क्रीड़ा करते हैं, स्तूपों में आनन्दकार।
शोभित होते समवशरण में तीर्थंकर जिन मंगलकार।
उनके चरणों वन्दन करते, विशद भाव से बारम्बार।।53।।

ॐ ह्रीं भवन भूमि स्थित जिनबिम्ब सहित भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मण्डप भूमि में द्वादश, कोठे होते सर्व महान्।
उसके ऊपर गंध कुटी में, कमलाशन पर श्री भगवान।
शोभित होते समवशरण में, तीर्थंकर जिन मंगलकार।
उनके चरणों वन्दन करते, विशद भाव से बारम्बार।।54।।

ॐ ह्रीं श्री मण्डप भूमि स्थित जिनबिम्ब सहित भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दश धर्म

उत्तम क्षमा प्राप्त करके जो, तीर्थंकर पद पाए।
वासुपूज्य की भक्ति करके, भक्त चरण में आए।
तीर्थंकर जिन वासुपूज्य की, महिमा विस्मय कारी।
उनके चरणों विशद भाव से, अतिशय ढोक हमारी।।55।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमा धर्म सहित भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम मार्दव धारण करके, उत्तम पद को पाए।
वासुपूज्य जिन चम्पापुर में, केवलज्ञान जगाए।
तीर्थंकर जिन वासुपूज्य की, महिमा विस्मय कारी।
उनके चरणों विशद भाव से, अतिशय ढोक हमारी।।56।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम मार्दव धर्म सहित भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम आर्जव पाने वाले, ऋजुमति को पाए।
सिद्धी पाकर सिद्धशिला पर, भक्तों द्वारा ध्याए।
तीर्थंकर जिन वासुपूज्य की, महिमा विस्मय कारी।
उनके चरणों विशद भाव से, अतिशय ढोक हमारी।।57।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम आर्जव धर्म सहित भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम शौच धर्म पाए हैं, मूर्छा त्याग किए।
निर्मलता अन्तर में पाए, चित् में चित्त दिए।
तीर्थंकर जिन वासुपूज्य की, महिमा विस्मय कारी।
उनके चरणों विशद भाव से, अतिशय ढोक हमारी।।58।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम शौच धर्म सहित भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्य धर्म को पाने वाले, स्वयं सत्व पाए हैं।
तीन लोक में सत्य धर्म की, महिमा जो दिखलाए हैं।
तीर्थंकर जिन वासुपूज्य की, महिमा विस्मय कारी।
उनके चरणों विशद भाव से, अतिशय ढोक हमारी।।59।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम सत्य धर्म सहित भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्ण असंयम तजने वाले, सत् संयम को धारे।
लगे अनादि कर्म क्षणिक में, नाश किए वह सारे।
तीर्थंकर जिन वासुपूज्य की, महिमा विस्मय कारी।
उनके चरणों विशद भाव से, अतिशय ढोक हमारी।।60।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम संयम धर्म सहित भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादश तप के द्वारा अपने, कर्म नाशते सारे।
अविनाशी सुख पाने वाले जिनवर रहे हमारे।
तीर्थंकर जिन वासुपूज्य की, महिमा विस्मय कारी।
उनके चरणों विशद भाव से, अतिशय ढोक हमारी।।61।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम तप धर्म सहित भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्याग धर्म को पाने वाले, त्यागी देव बने हैं।
बाह्याभ्यन्तर परिग्रह त्यागे, सारे कर्म हने हैं।
तीर्थंकर जिन वासुपूज्य की, महिमा विस्मय कारी।
उनके चरणों विशद भाव से, अतिशय ढोक हमारी।।62।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम त्याग धर्म सहित भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रखते नहीं राग किन्चित् भी, आकिन्चन शुभ पाए।
वीतराग सर्वज्ञ जिनेश्वर, अर्हत् जिन कहलाए।
तीर्थंकर जिन वासुपूज्य की, महिमा विस्मय कारी।
उनके चरणों विशद भाव से, अतिशय ढोक हमारी।।63।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम आकिन्चन धर्म सहित भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रह्मचर्यव्रत पाने वाले, परम ब्रह्मव्रतधारी।
निज स्वभाव में लीन रहें नित, जो स्वपर उपकारी।
तीर्थंकर जिन वासुपूज्य की, महिमा विस्मय कारी।
उनके चरणों विशद भाव से, अतिशय ढोक हमारी।।64।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म सहित भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भु छन्द)

निज आत्म सुधारस लीन मुनि, जिन वासुपूज्य के साथ रहे।
द्वादश शत् मुनी पूर्वधारी शुभ, ज्ञान निधि के नाथ कहे।
हे वासुपूज्य ! तुम पूज्य हुए, हम अष्ट द्रव्य कर में लाए।
यह शीष झुका तव चरणों में, हम पूजा करने प्रभु आए।।65।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित द्वादश शत् मुनि सहित भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुधर्म आदि छियासठ मुनि, प्रभु के गणधर रहे महान्।
समवशरण में वासुपूज्य की, वाणी का करते व्याख्यान।
हे वासुपूज्य ! तुम पूज्य हुए, हम अष्ट द्रव्य कर में लाए।
यह शीष झुका तव चरणों में, प्रभु पूजा करने हम आए।।66।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित षट्षष्टि गणधर सहित भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उन्तालीस हजार शतक द्वय, समवशरण में रहे महान्।
शिक्षक पद धारी मुनिवर, ज्ञानामृत की हैं जो खान।
हे वासुपूज्य ! तुम पूज्य हुए, हम अष्ट द्रव्य कर में लाए।
यह शीष झुका तव चरणों में, प्रभु पूजा करने हम आए।।67।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित एकोन चत्वारिंशत् सहस्त्र द्वय शत् शिक्षक पद धारी मुनिवर सहित भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाँच हजार चार सौ मुनिवर, समवशरण के बीच रहे।
अवधिज्ञान के धारी पावन, जैन धर्म की शान कहे।
हे वासुपूज्य ! तुम पूज्य हुए, हम अष्ट द्रव्य कर में लाए।
यह शीष झुका तव चरणों में, प्रभु पूजा करने हम आए।।68।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित पंच सहस्त्र चतु:शत् शिक्षक पद धारी मुनिवर सहित भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छह हजार मुनि केवल ज्ञानी, समवशरण मे रहे महान्।
मुक्ति वधु को पाने वाले, उनका कौन करे गुणगान।
हे वासुपूज्य ! तुम पूज्य हुए, हम अष्ट द्रव्य कर में लाए।
यह शीष झुका तव चरणों में, प्रभु पूजा करने हम आए।।69।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित षट् सहस्त्र अवधिज्ञानी मुनिवर सहित भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परम विक्रिया ऋद्धीधारी, दश हजार मुनि रहे महान्।
तीर्थंकर की दिव्य देशना, का नित करते है रसपान।
हे वासुपूज्य ! तुम पूज्य हुए, हम अष्ट द्रव्य कर में लाए।
यह शीष झुका तव चरणों में, प्रभु पूजा करने हम आए।।70।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित दश सहस्त्र विक्रिया ऋद्धिधारी मुनिवर सहित भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन: पर्यय ज्ञान के धारी, छह हजार मुनि रहे महान्।
पर के मन की बात जानने में, जो कुशल रहे गुणवान।
हे वासुपूज्य ! तुम पूज्य हुए, हम अष्ट द्रव्य कर में लाए।
यह शीष झुका तव चरणों में, प्रभु पूजा करने हम आए।।71।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित षट् सहस्त्र मन: पर्ययज्ञान धारी मुनिवर सहित भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छियालीस सौ मुनिवर थे वादी, समवशरण के बीच महान्।
ऊँकार मय दिव्य देशना, सबको सुना रहे भगवान।
हे वासुपूज्य ! तुम पूज्य हुए, हम अष्ट द्रव्य कर में लाए।
यह शीष झुका तव चरणों में, प्रभु पूजा करने हम आए।।72।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित षट् चत्वारिंशत् वादी मुनिराज सहित भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छियालिस गुण को पाने वाले, विशद धर्म के धारी।
समवशरण में शोभा पाते, श्री जिनवर अविकारी।
तीर्थंकर जिन वासुपूज्य की, महिमा विस्मय कारी।
उनके चरणों विशद भाव से, अतिशय ढोक हमारी।।73।।

ॐ ह्रीं षट् चत्वारिंशत् गुण सहित समवशरण स्थित धर्म धारी भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य:ह्न **ॐ आं क्रों ह्रीं श्रीं क्लीं भौमरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नम: सर्व शांति कुरु कुरु स्वाहा।**

●●●

समुच्चय जयमाला

दोहा– **श्री जिनेन्द्र जग में हुए, अतिशय पूज्य त्रिकाल।**
वासुपूज्य जिनराज की, गाते हैं जयमाल।।

तर्ज:– मधुवन के मंदिरों में...

चम्पापुरी में पाँचों, कल्याण पा गये हैं।
जिन वासुपूज्य स्वामी, मम् उर में छा गये हैं।।
पूरब भवों के तप से, जीवन बनाये पावन।
रत्नों की वृष्टि का शुभ, बरसा वहाँ पे सावन।।
नगरी को देव आकर, सुन्दर सजा गये हैं।
जिन वासुपूज्य स्वामी, मम् उर में छा गये हैं।।1।।
स्वर्गों से चय किये जिन, माँ के गरभ में आए।
सौधर्म इन्द्र ने तब, उत्सव कई मनाए।।
जन–जन के मन में भारी, आनन्द छा गये हैं।
जिन वासुपूज्य स्वामी, मम् उर में छा गये हैं।।2।।
फाल्गुन बदी सु चौदस, को जन्म प्रभु ने पाया।
तीनों ही लोक में यह, शुभ हर्ष का क्षण आया।।
जन्माभिषेक करने, सब इन्द्र आ गये हैं।
जिन वासुपूज्य स्वामी, मम् उर में छा गये हैं।।3।।
संसार विषय भोगों का, राग नहीं पाया।
इसके ही पूर्व मन में, वैराग्य जा समाया।।
संयम के भाव जिनके, अन्तर में आ गये हैं।
जिन वासुपूज्य स्वामी, मम् उर में छा गये हैं।।4।।
हो के विरक्त जग से, रहते हैं जग में न्यारे।
श्री वासुपूज्य स्वामी, जिनराज हैं हमारे।।

आतम का ध्यान करके, निज में समा गये हैं।
जिन वासुपूज्य स्वामी, मम् उर में छा गये हैं।।5।।

चउ घातिया करम का, जो नाश कर चले हैं।
कैवल्यज्ञान के शुभ, दीपक हृदय जले हैं।।
प्रभु दिव्य देशना शुभ, जग को सुना गये हैं।
जिन वासुपूज्य स्वामी, मम् उर में छा गये हैं।।6।।

फिर शुक्ल ध्यान द्वारा, करके करम सफाया।
मुक्तिश्री को पाकर, निर्वाण सुयश पाया।।
सिद्धों में सिद्ध बनकर, जिनवर समा गये हैं।
जिन वासुपूज्य स्वामी, मम् उर में छा गये हैं।।7।।

हम भाव पुष्प अर्पित, चरणों में करने लाए।
सदियों से लग रहा जो, भव रोग हरने आए।।
विषयों में पड़के भव हम, अपने गवाँ रहे हैं।
जिन वासुपूज्य स्वामी, मम् उर में छा गये हैं।।8।।

हे नाथ ! दो सहारा, हम भव से पार पाएँ।
पाकर जनम मरण इस, भव में न अब भ्रमाएँ।।
सब राग त्याग जग से, चरणों में आ गये हैं।
जिन वासुपूज्य स्वामी, मम् उर में छा गये हैं।।9।।

(छन्द घत्तानन्द)

श्री वासुपूज्य हैं जगत पूज्य, जिनके चरणों हम सिर नाते।
महिमा हम गाते, शीष झुकाते, भक्ति करके हर्षाते।।

ॐ ह्रीं भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय महाअर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– भक्त भाव भक्ति करें, चरण शरण में आन।
मोक्ष लक्ष्मी दीजिए, वासुपूज्य भगवान।।

(इत्याशीर्वाद – पुष्पाञ्जलिं)

श्री वासुपूज्य जिन की आरती

(तर्ज:– दूल्हे का सेहरा.....)

वसुपूज्य सुत वासुपूज्य को, करूँ नमन्–करूँ नमन्।
वासुपूज्य जिन के चरणों में, शत् शत् वन्दन।।टेक।।

हे प्रभो ! तव चरणों में, हम भाव से आये।
मंगलमय शुभ दीप जलाकर, आरति को लाये।
तुमने कर्म घातिया, जिनवर नाश किए।
अपने अन्तर में निज, ज्ञान प्रकाश किए।
शीष झुकाकर चरणों में हम, करें नमन्–करें नमन।
वासुपूज्य जिन के चरणों में शत् शत् वन्दन।।1।।

हे प्रभो ! तुम सारे जग का, करते हो कल्याण।
अत: आपके चरणों का हम, करते हैं गुणगान।।
शत् इन्द्रों ने पूजा की, तव चरणों में आकर ।
नृत्यगान कर भक्ति की, जिन गुण गा कर।
तव पद पाने को हम करते हैं अर्चन–हैं अर्चन।
वासुपूज्य जिन के चरणों में शत् शत् वन्दन।।2।।

हे प्रभो ! जनम जनम का, तुमसे है नाता।
सब जीवों के तुमही, जग में हो त्राता।।
हृदय कमल में तुमको प्रभु सजाते हैं।
विशद भाव से चरणों ध्यान लगाते हैं।।
मोक्षमार्ग पर हम भी तो कर सकें गमन–सकें गमन।
वासुपूज्य जिन के चरणों में शत् शत् वन्दन।।टेक।।

●●●

प्रशस्ति

काल अनादि और है, लोकालोक अनन्त। चौदह राजू लोक है, नहीं गगन का अन्त ।।1 ।।
मध्य लोक के मध्य में, जम्बू द्वीप महान्। मन्दर मेरु मध्य है, राजू एक प्रमाण ।।2 ।।
जिसके दक्षिण में रहा, क्षेत्र भरत विख्यात। आर्य खण्ड है मध्य में, होवे सबको ज्ञात ।।3 ।।
कर्म भूमि जिसमें रही, होते हैं छह काल। चौथे में चौबीस जिन, होते रहे त्रिकाल ।।4 ।।
इस चौबीसी में हुए, बारहवें तीर्थेश। वासुपूज्य शुभ नाम है, धरा दिगम्बर भेष ।।5 ।।
चम्पापुर में प्राप्त कर, जो पाँचों कल्याण। अष्ट कर्म का नाश कर, पाए पद निर्वाण ।।6 ।।
भैंसा जिनका चिन्ह है, तन का रंग है लाल। ऊँचाई सत्तर धनुष, माँ विजया के लाल ।।7 ।।
जीवों के कल्याण का, जिनका रहा स्वभाव। उनकी भक्ति के विशद, मन में आए भाव ।।8 ।।
चरण कमल का भक्त यह, भक्ति करता नाथ। हाथ जोड़ विनती करे, चरण झुकाए माथ ।।9 ।।
भक्ति के ही भाव से, जोड़े शब्द अनेक। उनसे मिलकर बन गया, है विधान यह नेक ।।10 ।।
भक्त सभी मिलकर करें, जिनवर का गुणगान। भक्ति पूजा अर्चना, मिलकर करें विधान ।।11 ।।
मार्बल पत्थर की रही, मण्डी देश प्रधान। मदनगंज है किशनगढ़, भक्तों का स्थान ।।12 ।।
पौष कृष्ण की पञ्चमी, सम्वत् चौसठ मान। वासुपूज्य का तब हुआ, लिखकर पूर्ण विधान ।।13 ।।
अन्तिम है यह भावना, और कोई न भाव। सभी भव्य पूजा करें, पावें निज स्वभाव ।।14 ।।
नहीं लोक का अन्त है, ज्ञान अनन्तानन्त। भूल चूक को भूलकर, क्षमा करो हे संत ! ।।15 ।।
'विशद' भावना है यही, और कोई न आस। भव सागर से पार हो, पाऊँ शिवपुर वास ।।16 ।।

●●●

भजन

टेक– आया शरण ठोकरें जग की खाके...

आया शरण में तेरे दर्श पाने, चरणों की रज को माथे चढ़ाने।
दया सिन्धु हम पर, दया दृष्टि कीजे, सेवक को अपनी शरण नाथ लीजे।
भाव सुमन लाया चरणों चढ़ाने.... आया शरण में तेरे.... ।।1 ।।

सुनकर हम आये हैं, महिमा तुम्हारी, विनती है चरणों में इतनी हमारी।
हम भी तो सेवक हैं प्रभुजी पुराने आया शरण में तेरे... ।।2 ।।

प्रभु दर्श करके ये चाहत जगी है, अन्तर में मेरे लगन ये लगी है।
'विशद' मोक्ष मारग, मिले इस बहाने– आया शरण में तेरे... ।।3 ।।

खण्ड - ब

शनि अरिष्ट ग्रह निवारक

श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान

मण्डल

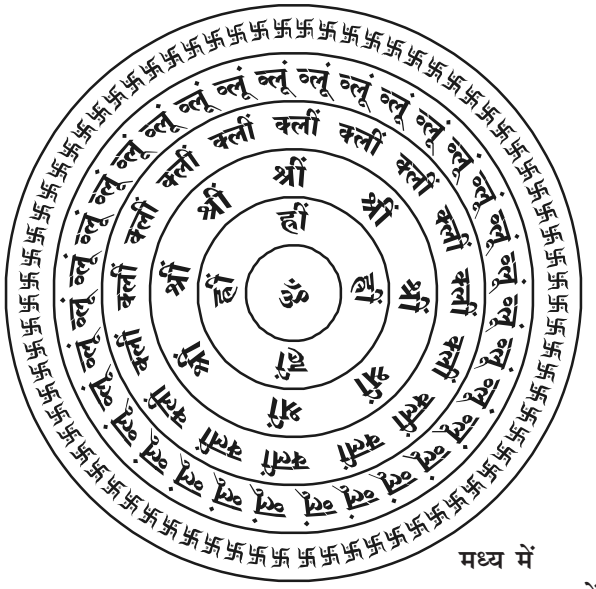

मध्य में - ॐ
प्रथम वलय में - 4
द्वितीय वलय में - 8
तृतीय वलय में - 16
चतुर्थ वलय में - 32
पंचम वलय में - 64

श्री मुनिसुव्रत जिन स्तवनम्

वैतालीय छन्द

अधिगत-मुनि-सुव्रत-स्थितिर्-
मुनि-वृषभो मुनिसुव्रतोऽनघः।
मुनिपरिषदि निर्बभौ भवा-
नुडु-परिषत्परिवीत-सोमवत् ङ्क1ङ्क
परिणत-शिखि-कण्ठ-रागया,
कृत-मद-निग्रह-विग्रहाऽऽभया।
तव जिन ! तपसः प्रसूतया,
ग्रह-परिवेष-रुचेव शोभितम् ङ्क2ङ्क
शशि-रुचि-शुचि-शुक्ल-लोहितं,
सुरभितरं विरजो निजं वपुः।
तव शिवमऽति विस्मयं यते !
यदपि च वाङ्मनसीय मीहितम् ङ्क3ङ्क
स्थिति-जनन-निरोध-लक्षणं,
चरमचरं च जगत् प्रतिक्षणम्।
इति जिन ! सकलज्ञ-लाञ्छनं,
वचन मिदं वदतांवरस्य ते ङ्क4ङ्क
दुरित-मल-कलंकमष्टकं,
निरुपम-योगबलेन निर्दहन्।
अभव-द्भव-सौख्यवान् भवान्,
भवतु ममाऽपि भवोपशान्तये ङ्क5ङ्क

श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः

श्री मुनिसुव्रत जिन स्तोत्र

दोहा- भूमण्डल के ज्योति प्रभु, तीन लोक के नाथ।
वन्दन कर जिनदेव के, चरण झुकाऊँ माथ॥

हे नाथ ! आपने जग बन्धन, तजकर के व्रत को धार लिया।
जो पथ पाया था सिद्धों ने, उसको तुमने स्वीकार किया।
यह तीन लोक में पावन पथ, इसके हम राही बन जावें।
हम शीष झुकाते चरणों में, प्रभु सिद्धों की पदवी पावेंङ्क

शुभ तीर्थंकर सम पुण्य पदक, यह पूर्व पुण्य से पाये हैं।
सब कर्म घातिया नाश किए, अरु केवल ज्ञान जगाये हैं।
शुभ ज्ञान की महिमा अनुपम है, यह द्रव्य चराचर ज्ञाता हैं।
इस ज्ञान को पाने वाला तो, निश्चय मुक्ति को पाता हैङ्क

जिनको यह ज्ञान प्रकट होता, वह अर्हत् पद के धारी हों।
वह सर्व लोक में पूज्य रहे, अरु स्व पर के उपकारी हों।
वह दिव्य देशना के द्वारा, जग जीवों का कल्याण करें।
करते सद् ज्ञान प्रकाश अहा, भवि जीवों का अज्ञान हरेंङ्क

यह प्रभु का पद ऐसा पद है, जग में कोई और समान नहीं।
हम तीन लोक में खोज लिए, पर पाया नहीं है और कहीं।
उस पद का मन में भाव जगा, जिसको तुमने प्रभु पाया है।
यह भक्त जगत की माया तज, प्रभु आप शरण में आया हैङ्क

ये जग दुक्खों से पूरित है, सुख शांति का है लेश नहीं।
तीनों लोकों में भटक लिया, पर सुख पाया है नहीं कहीं।
हम सुख अतिन्द्रिय पाने को, प्रभु तब चरणों में आए हैं।
हम भक्ति भाव से शीष झुकाकर, प्रभु चरणों सिर नाए हैंङ्क

श्री मुनिसुव्रत जिन पूजन विधान

स्थापना

तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत प्रभु, के चरणों में करूँ नमन्।
नृप सुमित्र के राजदुलारे, पद्मावती माँ के नन्दनङ्क
मुनिव्रत धारी हे भवतारी !, योगीश्वर जिनवर वन्दन।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु, करते हैं हम आह्वाननङ्क
हे जिनेन्द्र ! मम् हृदय कमल पर, आना तुम स्वीकार करो।
चरण शरण का भक्त बनालो, इतना सा उपकार करोङ्क

ॐ ह्रीं शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणंङ्क

है अनादि की मिथ्या भ्रांति, समकित जल से नाश करूँ।
नीर सु निर्मल से पूजा कर, मृत्यु आदि विनाश करूँङ्क
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतू, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीष झुकाए हैंङ्क1ङ्क

ॐ ह्रीं शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

द्रव्य भाव नो कर्मों का मैं, रत्नत्रय से नाश करूँ।
शीतल चंदन से पूजा कर, भव आताप विनाश करूँङ्क
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतू, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीष झुकाए हैंङ्क2ङ्क

ॐ ह्रीं शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्व. स्वाहा।

अक्षय अविनश्वर पद पाने, निज स्वभाव का भान करूँ।
अक्षय अक्षत से पूजा कर, आतम का उत्थान करूँङ्क

शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतू, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीष झुकाए हैंङ्क3ङ्क

ॐ ह्रीं शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

संयम तप की शक्ति पाकर, निर्मल आत्म प्रकाश करूँ।
पुष्प सुगधित से पूजा कर, कामबली का नाश करूँङ्क
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतू, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीष झुकाए हैंङ्क4ङ्क

ॐ ह्रीं शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

पंचाचार का पालन करके, शिवनगरी में वास करूँ।
सुरभित चरु से पूजा करके, क्षुधा रोग का ह्रास करूँङ्क
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतू, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीष झुकाए हैंङ्क5ङ्क

ॐ ह्रीं शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

पुण्य पाप आस्त्रव विनाश कर, केवल ज्ञान प्रकाश करूँ।
दिव्य दीप से पूजा करके, मोह महातम नाश करूँङ्क
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतू, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीष झुकाए हैंङ्क6ङ्क

ॐ ह्रीं शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

अष्ट गुणों की सिद्धि करके, अष्टम भू पर वास करूँ।
धूप सुगन्धित से पूजा कर, अष्ट कर्म का नाश करूँङ्क

शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतू, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीष झुकाए हैंङ्क7ङ्क

ॐ ह्रीं शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

मोक्ष महाफल पाकर भगवन्, आतम धर्म प्रकाश करूँ।
विविध फलों से पूजा करके, मोक्ष महल में वास करूँङ्क
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतू, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीष झुकाए हैंङ्क8ङ्क

ॐ ह्रीं शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

भेद ज्ञान का सूर्य उदय कर, अविनाशी पद प्राप्त करूँ।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, उर अनर्घ पद व्याप्त करूँङ्क
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतू, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीष झुकाए हैंङ्क9ङ्क

ॐ ह्रीं शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पंच कल्याणक के अर्घ्य

श्रावण कृष्णा दोज सुजान, देव मनाए गर्भ कल्याण।
पद्मा माता के उर आन, राजगृही नगरी सु महान्ङ्क1ङ्क

ॐ ह्रीं श्रावण कृष्णा द्वितीयायां गर्भमंगल मण्डिताय शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

बारस कृष्ण वैशाख सुजान, सुर नर किए जन्म कल्याण।
नृप सुमित्र के घर में आन, सबको दिए किमिच्छित दानङ्क2ङ्क

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा द्वादशम्यां जन्ममंगल मण्डिताय शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कृष्ण दशम वैशाख महान्, प्रभु ने पाया तप कल्याण।
चंपक तरु तल पहुँचे नाथ, मुनि बनकर प्रभु हुए सनाथ॥3॥

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा दशम्यां तपोमंगल मण्डिताय शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नवमी कृष्ण वैशाख महान्, प्रभु ने पाया केवल ज्ञान।
सुरनर करते प्रभु गुणगान, मंगलकारी और महान्॥4॥

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा नवम्यां ज्ञानमंगल मण्डिताय शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

फाल्गुन कृष्ण द्वादशी महान्, प्रभु ने पाया पद निर्वाण।
मोक्ष पधारे श्री भगवान, नित्य निरंजन हुए महान्॥5॥

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण द्वादश्यां मोक्षमंगल मण्डिताय शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा

मुनिसुव्रत मुनिव्रत धरूँ, त्याग करूँ जगजाल।
शनि अरिष्ट ग्रह शांत हो, करता हूँ जयमाल॥

पद्धरि छंद

जय मुनिसुव्रत जिनवर महान्, जय किए कर्म की प्रभु हान।
जय मोह महामद दलन वीर, दुर्द्धर तप संयम धरण धीर॥
जय हो अनंत आनन्द कंद, जय रहित सर्व जग दंद फंद।
अघ हरन करन मन हरणहार, सुखकरण हरण भवदुःख अपार॥
जय नृप सुमित्र के पुत्र नाथ, पद झुका रहे सुर नर सुमाथ।
जय पद्मावति के गर्भ आय, सावन वदि दुतिया हर्ष दाय॥

जय-जय राजगृही जन्म लीन, वैशाख कृष्ण द्वादशी प्रवीण।
जय जन्म से पाए तीन ज्ञान, जय अतिशय भी पाये महान्॥
तन सहस आठ लक्षण सुपाय, प्रभु जन्म लिए जग के हिताय।
सौधर्म इन्द्र को हुआ भान, राजगृह नगरी कर प्रयाण॥
जाके सुमेरु अभिषेक कीन, चरणों में नत हो ढोक दीन।
वैशाख कृष्ण दशमी सुजान, मन में जागा वैराग्य भान॥
कई वर्ष राज्य कर चले नाथ, इक सहस सु नृप भी चले साथ।
शुभ अशुभ राग की आग त्याग, हो गए स्वयं प्रभु वीतराग॥
नित आतम में हो गए लीन, चारित्र मोह प्रभु किए क्षीण।
प्रभु ध्यानी का हो क्षीण राग, वह भी हो जाए वीतराग॥
तीर्थंकर पहले बने संत, सबने अपनाया यही पंथ।
जिनधर्म का है वश यही सार, प्रभु वीतराग को नमस्कार॥
वैशाख वदी नौमी सुजान, प्रभु ने पाया केवल्य ज्ञान।
सुर समवशरण रचना बनाय, सुर नर पशु सब उपदेश पाय॥
जय-जय छियालिस गुण सहित देव, शत् इन्द्र भक्ति वश करें सेव।
जय फाल्गुन वदि द्वादशी नाथ, प्रभु मुक्ति वधु को किए साथ॥

(छन्द घत्तानन्द)

मुनिसुव्रत स्वामी, अन्तर्यामी, सर्व जहाँ में सुखकारी।
जय भव भय हारी आनंदकारी, रवि सुत ग्रह पीड़ा हारी॥

ॐ ह्रीं शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा

मुनिसुव्रत के चरण का, बना रहूँ मैं दास।
भाव सहित वन्दन करूँ, होवे मोक्ष निवास॥

पुष्पांजलि क्षिपेत्

प्रथम वलय

दोहा- **मुनिसुव्रत के चरण में, चढ़ा रहे हम अर्घ्य।**
चउ संज्ञाएँ नाश हों, पाऊँ सुपद अनर्घङ्क

मण्डलस्योपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्

स्थापना

तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत प्रभु, के चरणों में करूँ नमन्।
नृप सुमित्र के राजदुलारे, पद्मावती मां के नन्दनङ्क
मुनिव्रत धारी हे ! भवतारी, योगीश्वर जिनवर वन्दन।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु, करते हैं हम आह्वाननङ्क

हे जिनेन्द्र ! मम् हृदय कमल पर, आना तुम स्वीकार करो।
चरण शरण का भक्त बनालो, इतना सा उपकार करोङ्क

ॐ ह्रीं शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणंङ्क

4 संज्ञा विनाशक श्री जिन के अर्घ्य

मुनिव्रतों को जिसने धारा, बने कर्म आ करके दास।
तीर्थंकर पद पाया प्रभु ने, भोजन संज्ञा हुई विनाशङ्क
रहे निवारक शनि अरिष्ट के, मुनिसुव्रत है जिनका नाम।
भक्ति-भाव से चरण कमल में, करते बारम्बार प्रणामङ्क १ङ्क

ॐ ह्रीं आहार संज्ञा विनाशक शनि अरिष्ट ग्रहनिवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निःस्वाहाङ्क

निर्भय होकर बीहड़ वन में, निज आतम में कीन्हा वास।
सप्त महामय भारी जग में, क्षण में उनका किया विनाशङ्क

रहे निवारक शनि अरिष्ट के, मुनिसुव्रत है जिनका नाम।
भक्ति-भाव से चरण कमल में, करते बारम्बार प्रणामङ्क २ङ्क

ॐ ह्रीं भय संज्ञा विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहाङ्क

कामबली ने मोह पास में, सारे जग को बाँध लिया।
ब्रह्मभाव से मैथुन संज्ञा, को प्रभु ने निर्मूल कियाङ्क
रहे निवारक शनि अरिष्ट के, मुनिसुव्रत है जिनका नाम।
भक्ति-भाव से चरण कमल में, करते बारम्बार प्रणामङ्क ३ङ्क

ॐ ह्रीं मैथुन संज्ञा विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहाङ्क

बाह्याभ्यन्तर कहा परिग्रह, उसके होते चौबिस भेद।
परिग्रह की संज्ञा के नाशी, नाश किया है जिसने खेदङ्क
रहे निवारक शनि अरिष्ट के, मुनिसुव्रत है जिनका नाम।
भक्ति-भाव से चरण कमल में, करते बारम्बार प्रणामङ्क ४ङ्क

ॐ ह्रीं परिग्रह संज्ञा विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहाङ्क

दोहा- **मुनिसुव्रत भगवान ने, संज्ञाएँ की नाश।**
आत्म ध्यान से कर दिये, घातीकर्म विनाशङ्क

ॐ ह्रीं चतुः संज्ञा विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहाङ्क

द्वितीय वलय

दोहा - **अष्टकर्म ने जीव को, जग में दिया क्लेश।**
पुष्पांजलि करता विशद, नाशूँ कर्म अशेषङ्क

मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

स्थापना

तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत प्रभु, के चरणों में करूँ नमन्।
नृप सुमित्र के राजदुलारे, पद्मावती मां के नन्दनङ्क
मुनिव्रत धारी हे भवतारी !, योगीश्वर जिनवर वन्दन।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु, करते हैं हम आह्वानन्ङ्क
हे जिनेन्द्र ! मम् हृदय कमल पर, आना तुम स्वीकार करो।
चरण शरण का भक्त बनालो, इतना सा उपकार करोङ्क

ॐ ह्रीं शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणंङ्क

अष्ट कर्म विनाशक श्री जिन के अर्घ्य

जो ज्ञान सुगुण को ढक लेता, वह ज्ञानावरणी कर्म कहा।
इस कारण जीव अनादि से, भवसागर में ही भटक रहाङ्क
हो ज्ञानावरणी कर्म शमन, प्रभु शरण आपकी आया हूँ।
चरणों में वन्दन करता हूँ, यह अर्घ्य चढ़ाने लाया हूँङ्क

ॐ ह्रीं ज्ञानावरणी कर्म विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहाङ्क 1ङ्क

जो दर्शन गुण का घात करे, वह दर्शन आवरणी जानो।
यह कर्म महा दुखदायी है, इसको भी तुम कम न मानोङ्क
मैं नाश हेतु इस शत्रु के, प्रभु शरण आपकी आया हूँ।
चरणों में वन्दन करता हूँ, यह अर्घ्य चढ़ाने लाया हूँङ्क

ॐ ह्रीं दर्शनावरणी कर्म विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहाङ्क 2ङ्क

सुख दुःख के वेदन का कारण, यह कर्म वेदनीय होता है।
सुख में तो हँसता है लेकिन, दुःख आने पर नर रोता हैङ्क

मैं कर्म वेदनीय समन हेतु, प्रभु शरण आपकी आया हूँ।
चरणों में वन्दन करता हूँ, यह अर्घ्य चढ़ाने लाया हूँङ्क

ॐ ह्रीं वेदनीय कर्म विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहाङ्क 3ङ्क

यह मोह महा बलशाली है, इसने दो रूप बनाए हैं
दर्शन चारित्र दोनों गुण में, यह अपनी रोक लगाए हैं।
मैं मोह कर्म के नाश हेतु, प्रभु शरण आपकी आया हूँ।
चरणों में वन्दन करता हूँ, यह अर्घ्य चढ़ाने लाया हूँङ्क

ॐ ह्रीं मोहनीय कर्म विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहाङ्क 4ङ्क

है बन्धन आयु कर्म महा, चारों गतियों में कैद करे।
वह उठा पटक करता रहता, प्राणी की शक्ति पूर्ण हरेङ्क
मैं कर्म आयु के नाश हेतु, प्रभु शरण आपकी आया हूँङ्क
चरणों में वन्दन करता हूँ, यह अर्घ्य चढ़ाने लाया हूँङ्क

ॐ ह्रीं आयुकर्म विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहाङ्क 5ङ्क

है शिल्पकार सम नाम कर्म, जो नाना रूप बनाता है।
ज्यों खेल खिलौना पाने को, बालक का मन ललचाता हैङ्क
मैं नामकर्म का नाश करूँ, प्रभु शरण आपकी आया हूँ।
चरणों में वन्दन करता हूँ, यह अर्घ्य चढ़ाने लाया हूँङ्क

ॐ ह्रीं नामकर्म विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहाङ्क 6ङ्क

जो ऊँच नीच का कारण है, जग में कटुता का काम करे।
जो अरति ईर्ष्या का कारण, जीवों को कष्ट प्रदान करेङ्क
मैं गोत्रकर्म का नाश करूँ, प्रभु शरण आपकी आया हूँ।
चरणों में वन्दन करता हूँ, यह अर्घ्य चढ़ाने लाया हूँङ्क

ॐ ह्रीं गोत्रकर्म विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहाङ्क 7ङ्क

जो कदम-कदम पर विघ्न करे, वह अन्तराय दु:खदाई है।
शान्ति को क्षीण करे प्रतिपल, यह कर्म की ही प्रभुताई हैङ्क
हो अन्तराय का नाश प्रभो! मैं शरण आपकी आया हूँ।
चरणों में वन्दन करता हूँ, यह अर्घ्य चढ़ाने लाया हूँङ्क

ॐ ह्रीं अन्तरायकर्म विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहाङ्क 8ङ्क

दोहा - **अष्टकर्म का नाश हो, प्रकट होंय गुण आठ।**
मुक्ति वधु को प्राप्त कर, होवें ऊँचे ठाठङ्क

ॐ ह्रीं अष्टकर्म विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहाङ्क 9ङ्क

तृतीय वलय

दोहा- **कर्म निर्जरा बन्ध का, कारण होता ध्यान।**
अशुभ छोड़ शुभ ध्यान से, होय विशद कल्याणङ्क

(इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

स्थापना

तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत प्रभु, के चरणों में करूँ नमन्।
नृप सुमित्र के राजदुलारे, पद्मावती माँ के नन्दनङ्क
मुनिव्रत धारी हे भवतारी !, योगीश्वर जिनवर वन्दन।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु, करते हैं हम आह्वाननङ्क
हे जिनेन्द्र ! मम् हृदय कमल पर, आना तुम स्वीकार करो।
चरण शरण का भक्त बनालो, इतना सा उपकार करोङ्क

ॐ ह्रीं शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ:ठ: स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणंङ्क

16 ध्यान सम्बन्धी अर्घ्य

आर्त्तध्यान होने लगता है, हो जाये यदि इष्ट वियोग।
जिसके कारण बढ़े जीव को, जन्म जरा मृत्यु का रोगङ्क
आर्त्तध्यान का नहीं रहा जिन, मुनिसुव्रत को नाम निशान।
मुनिसुव्रत सम व्रत पाने को, भाव सहित करता गुणगानङ्क

ॐ ह्रीं इष्ट वियोगज आर्त्तध्यान विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहाङ्क 1ङ्क

हो अनिष्ट संयोग यदि तो, होने लगता आर्त्तध्यान।
जागृत होता है क्लेश फिर, उसको रहे न निज का ज्ञानङ्क
आर्त्तध्यान का नहीं रहा जिन, मुनिसुव्रत को नाम निशान।
मुनिसुव्रत सम व्रत पाने को, भाव सहित करता गुणगानङ्क

ॐ ह्रीं अनिष्ट संयोग आर्त्तध्यान विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. स्वाहाङ्क 2ङ्क

रोगादि के कारण कोई, तन में पीड़ा होय महान्।
पीड़ा चिन्तन ध्यान होय तब, ऐसा कहते हैं भगवानङ्क
आर्त्तध्यान का नहीं रहा जिन, मुनिसुव्रत को नाम निशान।
मुनिसुव्रत सम व्रत पाने को, भाव सहित करता गुणगानङ्क

ॐ ह्रीं पीड़ा चिन्तन आर्त्तध्यान विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहाङ्क 3ङ्क

आगामी भोगों की वाञ्छा, जग में करता जो इंसान।
तप के फल से चाहे यदि तो, जैनागम में कहा निदानङ्क
आर्त्तध्यान का नहीं रहा जिन, मुनिसुव्रत को नाम निशान।
मुनिसुव्रत सम व्रत पाने को, भाव सहित करता गुणगानङ्क

ॐ ह्रीं निदान आर्त्तध्यान विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहाङ्क 4ङ्क

जिनके हैं परिणाम क्रूर अति, हिंसा में माने आनन्द।
रौद्र ध्यान का प्रथम भेद यह, कहलाता है हिंसानन्दङ्क
रौद्र ध्यान का नहीं रहा जिन, मुनिसुव्रत को नाम निशान।
मुनिसुव्रत सम व्रत पाने को, भाव सहित करता गुणगानङ्क

ॐ ह्रीं हिंसानन्द रौद्रध्यान विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहाङ्क 5ङ्क

झूठ बोलकर खुश होता जो, मृषानन्द वह ध्यान रहा।
कर्म बन्ध दुर्गति का कारण, जैनागम में यही कहाङ्क
रौद्र ध्यान का नहीं रहा जिन, मुनिसुव्रत को नाम निशान।
मुनिसुव्रत सम व्रत पाने को, भाव सहित करता गुणगानङ्क

ॐ ह्रीं मृषानन्द रौद्रध्यान विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहाङ्क 6ङ्क

मालिक की आज्ञा बिन वस्तु, लेना चोरी रहा सदैव।
चोरी कर आनन्द मनाना, चौर्यानन्द ध्यान है एवङ्क
रौद्र ध्यान का नहीं रहा जिन, मुनिसुव्रत को नाम निशान।
मुनिसुव्रत सम व्रत पाने को, भाव सहित करता गुणगानङ्क

ॐ ह्रीं चौर्यानन्द रौद्रध्यान विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीतिङ्क 7ङ्क

मूर्छाभाव को कहा परिग्रह, परिग्रह पा खुश हों जो लोग।
परिग्रहानन्द ध्यान का उनको, होता है भाई संयोगङ्क
रौद्र ध्यान का नहीं रहा जिन, मुनिसुव्रत को नाम निशान।
मुनिसुव्रत सम व्रत पाने को, भाव सहित करता गुणगानङ्क

ॐ ह्रीं परिग्रहानन्द रौद्रध्यान विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीतिङ्क 8ङ्क

शिरोधार्य जिन आज्ञा करते, भाव सहित जग में जो लोग।
चिन्तन में जो लीन रहें नित, आज्ञा विचय ध्यान के योगङ्क
धर्मध्यान के द्वारा करते, अपने कर्मों का वह नाश।
भव सागर से मुक्ति पाकर, करते सिद्ध शिला पर वासङ्क

ॐ ह्रीं आज्ञा विचय धर्मध्यान विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहाङ्क 9ङ्क

जो संसार देह भोगों के, चिन्तन में रहते लवलीन।
वह हैं अपाय विचय के धारी, आत्म ध्यान में रहते लीनङ्क
धर्मध्यान के द्वारा करते, अपने कर्मों का वह नाश।
भव सागर से मुक्ति पाकर, करते सिद्ध शिला पर वासङ्क

ॐ ह्रीं अपाय विचय धर्मध्यान विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहाङ्क 1ङ्क

अपने कृत कारित के फल को, स्वयं भोगते कर्म संयोग।
ऐसा चिन्तन ध्यान करें जो, विपाक विचयधारी वह लोगङ्क
धर्मध्यान के द्वारा करते, अपने कर्मों का वह नाश।
भवसागर से मुक्ति पाकर, करते सिद्ध शिला पर वास।

ॐ ह्रीं विपाक विचय धर्मध्यान विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहाङ्क 11ङ्क

तीन लोक का क्या स्वरूप है, उसमें जो भी है आकार।
होता है संस्थान विचय से, ध्यान लोक का कई प्रकारङ्क
धर्मध्यान के द्वारा करते, अपने कर्मों का वह नाश।
भवसागर से मुक्ति पाकर, करते सिद्ध शिला पर वास।

ॐ ह्रीं संस्थान विचय धर्मध्यान विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहाङ्क 12ङ्क

पृथक द्रव्य गुण पर्यायों का, शब्दों का जो करते ध्यान।
पृथक्त्व वितर्क वीचार ध्यान है, ऐसा कहते हैं भगवान॥
शुक्ल ध्यान के द्वारा करते, अपने कर्मों का वह नाश।
भवसागर से मुक्ति पाकर, करते सिद्ध शिला पर वास॥

ॐ ह्रीं पृथक्त्ववितर्कवीचार शुक्लध्यान विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा॥ 13॥

श्रुतज्ञान के अवलम्बन से, चिन्तन करते हैं जो लोग।
एक द्रव्य पर्याय योग का, एकत्व वितर्क ध्यान के योग॥
शुक्ल ध्यान के द्वारा करते, अपने कर्मों का वह नाश।
भवसागर से मुक्ति पाकर, करते सिद्ध शिला पर वास॥

ॐ ह्रीं एकत्व वितर्क शुक्लध्यान विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 14॥

क्रिया सूक्ष्म हो जाती तन की, प्रकट होय जब केवल ज्ञान।
निज आतम में होय लीनता, सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाती ध्यान॥
शुक्ल ध्यान के द्वारा करते, अपने कर्मों का वह नाश।
भवसागर से मुक्ति पाकर, करते सिद्ध शिला पर वास॥

ॐ ह्रीं सूक्ष्मक्रिया प्रतिपाती शुक्लध्यान सहित शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 15॥

क्रिया योग तन की रुकते ही, होते आतम में लवलीन।
व्युपरत क्रिया निवृत्ति ध्यानी, रहते निज चेतन में लीन॥
शुक्ल ध्यान के द्वारा करते, अपने कर्मों का वह नाश।
भवसागर से मुक्ति पाकर, करते सिद्ध शिला पर वास॥

ॐ ह्रीं व्युपरत क्रिया निवृत्ति शुक्लध्यान सहित शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा॥16॥

दोहा – **अशुभ ध्यान से बंध हो, बढ़े नित्य संसार।**
मुक्ति हो शुभ ध्यान से, मिले मुक्ति का सार॥

ॐ ह्रीं षोडश प्रकार शुभाशुभ ध्यान रहित शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थ वलय

दोहा – **अविरत योग प्रमाद अरु, मिथ्या तथा कषाय।**
आस्त्रव के हैं द्वार यह, बत्तिस कहे जिनाय॥

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

स्थापना

तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत प्रभु, के चरणों में करूँ नमन्।
नृप सुमित्र के राजदुलारे, पद्मावती माँ के नन्दन॥
मुनिव्रत धारी हे भवतारी !, योगीश्वर जिनवर वन्दन।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु, करते हैं हम आह्वानन्॥
हे जिनेन्द्र ! मम् हृदय कमल पर, आना तुम स्वीकार करो।
चरण शरण का भक्त बनालो, इतना सा उपकार करो॥

ॐ ह्रीं शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं

32 प्रकार आस्त्रव विनाशक जिन के अर्घ्य

जो विपरीत मार्ग में श्रद्धा, प्राणी जग के धारे।
मिथ्यादृष्टि प्राणी जग में, होते हैं वह सारे॥
सम्यक्श्रद्धा के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशे॥

ॐ ह्रीं विपरीत मिथ्यात्व विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 1॥

अनेकान्तिक वस्तु को जो, ऐकान्तिक ही माने।
मिथ्यामतवादी इस जग में, एक रूप पहचानेङ्क
सम्यक्श्रद्धा के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशेङ्क

ॐ ह्रीं एकान्त मिथ्यात्व विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहाङ्क 2ङ्क

जो सराग अरु वीतराग जिन, देव शास्त्र गुरु पावें।
विनय मिथ्वात्व धारने वाले, एक समान बतावेंङ्क
सम्यक्श्रद्धा के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशेङ्क

ॐ ह्रीं विनय मिथ्यात्व विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहाङ्क 3ङ्क

देवशास्त्र गुरुवर तत्वों में, जो संशय को धारे।
संशय मिथ्यावादी हैं वह, जग के प्राणी सारेङ्क
सम्यक्श्रद्धा के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशेङ्क

ॐ ह्रीं संशय मिथ्यात्व विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहाङ्क 4ङ्क

हित अरु अहित को जान सके न, ज्ञान हीन संसारी।
मिथ्याज्ञानी कहे जगत में, तीनों लोक दुखारीङ्क
सम्यक्श्रद्धा के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशेङ्क

ॐ ह्रीं अज्ञान मिथ्यात्व विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहाङ्क 5ङ्क

दयाहीन हिंसा करते जो, अविरत हिंसा कारी।
दीन हीन अज्ञानी हैं वह, भ्रमत फिरे संसारीङ्क
सम्यक् चारित के द्वारा, प्रभु आठों कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशेङ्क

ॐ ह्रीं हिंसाविरति विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहाङ्क 6ङ्क

सत्य वचन को छोड़ जगत में, असत् वचन को धारे।
हैं असत्य अविरत के धारी, जग के प्राणी सारेङ्क
सम्यक्श्रद्धा के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशेङ्क

ॐ ह्रीं असत्याविरति विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहाङ्क 7ङ्क

भूली विसरी पड़ी गिरी जो, वस्तु लेवे कोई।
अविरत चौर्य धारने वाला, कहलावे वह सोईङ्क
सम्यक्श्रद्धा के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशेङ्क

ॐ ह्रीं चौर्याविरति विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहाङ्क 8ङ्क

जो चित्राम देव नर पशु की, नारी लख ललचावे।
वह कुशील अविरत का धारी, भोगी बहु दुःख पावेङ्क
सम्यक्श्रद्धा के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशेङ्क

ॐ ह्रीं कुशीलाविरति विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहाङ्क 9ङ्क

बाह्याभ्यन्तर कहा परिग्रह, उसमें प्रीति लगावें।
परिग्रह अविरति का धारी वह, दुर्गति के दुःख पावेंङ्क
सम्यक्श्रद्धा के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशेङ्क

ॐ ह्रीं परिग्रहाविरति विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहाङ्क 1ङ्क

स्पर्शन के अष्ट विषय हैं, उनमें प्रीति लगावें।
अविरति के द्वारा कर्मों का, आश्रव करते जावेंङ्क
सम्यक्श्रद्धा के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशेङ्क

ॐ ह्रीं स्पर्शन इन्द्रिय विषय विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहाङ्क 11ङ्क

विषय पंच रसना इन्द्रिय के, उनमें प्रीति लगावें।
अविरत रहकर के कर्मों का, आश्रव करते जावेंङ्क
सम्यक्श्रद्धा के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशेङ्क

ॐ ह्रीं रसना इन्द्रिय विषय विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहाङ्क 12ङ्क

घ्राणेन्द्रिय के विषय कहे दो उनमें प्रीति लगावें।
अविरत रहकर के कर्मों का, आश्रव करते जावेंङ्क
सम्यक्श्रद्धा के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशेङ्क

ॐ ह्रीं घ्राणेन्द्रिय विषय विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहाङ्क 13ङ्क

विषय पंच चक्षु इन्द्रिय के, उनमें प्रीति लगावें।
कर्मास्त्रव करते हैं भारी, वह अव्रति कहलावेंङ्क
सम्यक्श्रद्धा के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशेङ्क

ॐ ह्रीं चक्षु इन्द्रिय विषय विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहाङ्क 14ङ्क

कर्णेन्द्रिय के विषय सात हैं, उनमें प्रीति लगावें।
कर्मास्त्रव करते हैं भारी, वह अव्रति कहलावेंङ्क
सम्यक्श्रद्धा के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशेङ्क

ॐ ह्रीं कर्णेन्द्रिय विषय विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहाङ्क 15ङ्क

कषाय अनंतानुबंधी से, मिथ्याभाव बनावें।
काल अनन्त भ्रमण जग में कर, दुःख अनेकों पावेंङ्क
सम्यक्श्रद्धा के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशेङ्क

ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धी कषाय विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहाङ्क 16ङ्क

अप्रत्याख्यान कषायोदय में, अणुव्रत न धर पावें।
अविरत रहकर के कर्मों का आस्त्रव करते जावेंङ्क
सम्यक्श्रद्धा के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशेङ्क

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यान कषाय विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहाङ्क 17ङ्क

प्रत्याख्यान कषायोदय से, देशव्रती रह जावें।
महाव्रतों के भाव कभी न, उनके मन में आवेंङ्क
सम्यक्श्रद्धा के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशेङ्क

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान कषाय विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहाङ्क 18ङ्क

उदय संज्वलन का होवे तो, यथाख्यात न पावें।
कर्म निर्जरा पूर्ण होय, न केवल ज्ञान जगावेंङ्क
सम्यक्श्रद्धा के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशेङ्क

ॐ ह्रीं संज्वलन कषाय विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहाङ्क 19ङ्क

स्त्री की चर्चा में कोई, मन को यदि लगावे।
वह प्रमाद के द्वारा नित प्रति, आस्त्रव करता जावेङ्क
सम्यक्श्रद्धा के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशेङ्क

ॐ ह्रीं स्त्री कथा विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. स्वाहाङ्क 2ङ्क

कोई चोर चोरी की चर्चा, करके मन बहलावे।
धन की वाञ्छा करने वाला, कर्मास्त्रव को पावेङ्क
सम्यक्श्रद्धा के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशेङ्क

ॐ ह्रीं चोर कथा विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहाङ्क 21ङ्क

भोजन की चर्चा से मन में, रति भाव जो आवें।
भोज्य कथा करने वाले नित, पापास्त्रव को पावेंङ्क
सम्यक्श्रद्धा के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशेङ्क

ॐ ह्रीं भोजन कथा विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहाङ्क 22ङ्क

राजनीति राजा की चर्चा, करके जो सुख पावें।
आत्मध्यान को तजने वाले, खोटे कर्म कमावेंङ्क
सम्यक्श्रद्धा के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशेङ्क

ॐ ह्रीं राज कथा विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहाङ्क 23ङ्क

जो प्रमाद करके निद्रा में, अपना समय गमावें।
कर्म का आश्रव करने वाले, दुर्गति में ही जावेंङ्क
सम्यक्श्रद्धा के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशेङ्क

ॐ ह्रीं निद्रा प्रमाद विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहाङ्क 24ङ्क

स्त्री, पुत्र, मित्र आदि से, जो स्नेह लगावें।
कर्माश्रव करने वाले वह, परभव कष्ट उठावेंङ्क
सम्यक्श्रद्धा के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशेङ्क

ॐ ह्रीं प्रणय (स्नेह) विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहाङ्क 25ङ्क

क्रोध करें औरों को मारें, ईर्ष्या भाव जगावें।
आत्मघात कर लेय स्वयं ही, नरकों में वह जावेंङ्क
सम्यक् श्रद्धा के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशेङ्क

ॐ ह्रीं क्रोध कषाय विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहाङ्क 26ङ्क

मानी मान करें जीवों में, खोटे कर्म कमावें।
नीचा माने औरों को वह, निज को उच्च बतावेंङ्क
सम्यक्श्रद्धा के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशेङ्क

ॐ ह्रीं मान कषाय विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहाङ्क 27ङ्क

ठगें और को छल छद्रम से, मायाचारी प्राणी।
पशुगति के दु:ख भोगें वह, कहती यह जिनवाणीङ्क
सम्यक्श्रद्धा के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशेङ्क

ॐ ह्रीं माया कषाय विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहाङ्क 28ङ्क

लुब्ध दत्त सम लोभ करें कई, जग में लोभी प्राणी।
जोड़-जोड़ धन कर्म बाँधते, कहती है जिनवाणीङ्क
सम्यक्श्रद्धा के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशेङ्क

ॐ ह्रीं लोभ कषाय विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहाङ्क 29ङ्क

मन चंचल चित् चोर कहा है, सब जग में भटकावे।
विषयों की अभिलाषा करके, उनमें ही अटकावेङ्क

सम्यक्श्रद्धा के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशेङ्क

ॐ ह्रीं मन योग विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहाङ्क 3ङ्क

वचन बड़े अनमोल कहे हैं, उर में घाव बनावें।
हितमित प्रिय वाणी जीवों को, मल्हम सी बन जावेंङ्क
सम्यक्श्रद्धा के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशेङ्क

ॐ ह्रीं वचन योग विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहाङ्क 31ङ्क

काया की माया विचित्र है, जग में नाच नचावे।
कर्मास्त्रव का कारण है, जो नाना रूप बनावेङ्क
सम्यक्श्रद्धा के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशेङ्क

ॐ ह्रीं काय योग विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहाङ्क 32ङ्क

दोहा- **जिनवर ने बत्तिस कहे, आश्रव के यह द्वार।**
कर्मास्त्रव को रोध कर, पाऊँ भव से पारङ्क

ॐ ह्रीं द्वात्रिंशत् आश्रव द्वार विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहाङ्क 33ङ्क

पञ्चम वलय

दोहा- **छियालिस गुण जिन देव के, समवशरण सुखकार।**
क्षायिक पाये लब्धियां, जग में मंगलकारङ्क

(इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

स्थापना

तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत प्रभु, के चरणों में करूँ नमन्।
नृप सुमित्र के राजदुलारे, पद्मावती माँ के नन्दनङ्क
मुनिव्रत धारी हे भवतारी !, योगीश्वर जिनवर वन्दन।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु, करते हैं हम आह्वाननङ्क
हे जिनेन्द्र ! मम् हृदय कमल पर, आना तुम स्वीकार करो।
चरण शरण का भक्त बनालो, इतना सा उपकार करोङ्क

ॐ ह्रीं शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणंङ्क

1 जन्म के अतिशय

(ताटंक-छंद)

जन्म से अतिशय पाते जिनवर, उनके गुण को गाता हूँ।
स्वेद रहित निर्मल तन पाए, तिन पद अर्घ्य चढ़ाता हूँङ्क
जन्म समय से ही तीर्थंकर, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
उनके गुण को पाने हेतु, सादर शीष झुकाते हैंङ्क1ङ्क

ॐ ह्रीं स्वेद रहित सहजातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

रहित मूत्र मल से तन सुन्दर, अतिशयकारी पाते हैं।
तीर्थंकर के पुण्य का फल यह, तिन पद अर्घ्य चढ़ाते हैंङ्क
जन्म समय से ही तीर्थंकर, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
उनके गुण को पाने हेतु, सादर शीष झुकाते हैंङ्क2ङ्क

ॐ ह्रीं नीहार रहित सहजातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

समचतुस्त्र संस्थान प्रभु का, हीनाधिक नहिं पाते हैं।
आंगोपांग रहें ज्यों के त्यों, तिन पद अर्घ्य चढ़ाते हैंङ्क

जन्म समय से ही तीर्थंकर, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
उनके गुण को पाने हेतु, सादर शीष झुकाते हैंङ्क3ङ्क

ॐ ह्रीं समचतुष्क संस्थान सहजातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

वज्रवृषभ नाराच संहनन, सर्वोत्तम प्रभु पाते हैं।
प्रबल पुण्य से तीर्थंकर के, इन्द्र चरण झुक जाते हैंङ्क
जन्म समय से ही तीर्थंकर, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
उनके गुण को पाने हेतु, सादर शीष झुकाते हैंङ्क4ङ्क

ॐ ह्रीं वज्रवृषभ नाराचसंहनन सहजातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहाङ्क।

प्रभु का सुरभित और सुगंधित, उज्जवल पावन तन पाते।
सर्व लोक के प्राणी फीके, प्रभु के आगे पड़ जातेङ्क
जन्म समय से ही तीर्थंकर, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
उनके गुण को पाने हेतु, सादर शीष झुकाते हैंङ्क5ङ्क

ॐ ह्रीं सुगंधित तन सहजातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

रूप महा अतिशय सुंदर है, सौम्य रूपता पाते हैं।
सुंदरता में कामदेव, चक्री फीके पड़ जाते हैंङ्क
जन्म समय से ही तीर्थंकर, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
उनके गुण को पाने हेतु, सादर शीष झुकाते हैंङ्क6ङ्क

ॐ ह्रीं अतिशय रूप सहजातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

एक हजार आठ लक्षण शुभ, प्रभु के तन में होते हैं।
दर्शन करने वाले प्राणी, अपनी जड़ता खोते हैंङ्क
जन्म समय से ही तीर्थंकर, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
उनके गुण को पाने हेतु, सादर शीष झुकाते हैंङ्क7ङ्क

ॐ ह्रीं 18 लक्षण सहजातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

रक्त सुउज्ज्वल धवल देह में, तीर्थंकर जिन पाते हैं।
प्रभु की प्रभुता सुनकर प्राणी, अति विस्मय कर जाते हैंॐ
जन्म समय से ही तीर्थंकर, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
उनके गुण को पाने हेतु, सादर शीष झुकाते हैंॐ8ॐ

ॐ ह्रीं श्वेत रहित सहजातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हित-मित प्रिय मनहर वाणी शुभ, श्री जिनेन्द्र की खिरती है।
भव्य जीव जो सुनने वाले, उनके मन को हरती हैॐ
जन्म समय से ही तीर्थंकर, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
उनके गुण को पाने हेतु, सादर शीष झुकाते हैंॐ9ॐ

ॐ ह्रीं हितमित प्रियवचन सहजातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

बलशाली अतिशय अनंत शुभ, देह सुसुंदर पाते हैं।
सुर नर जिन के प्रबल पुण्य से, चरणों में झुक जाते हैंॐ
जन्म समय से ही तीर्थंकर, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
उनके गुण को पाने हेतु, सादर शीष झुकाते हैंॐ1ॐ

ॐ ह्रीं अतुल्य बल सहजातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

केवल ज्ञान के 1 अतिशय

सौ योजन दुर्भिक्ष न होवे, जहां प्रभु का आसन हो।
पापी कामी चोर न बहरे, जहां प्रभु का शासन होॐ
केवलज्ञान प्रकट होते ही, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
प्रभु के गुण को पाने हेतु, पद में शीष झुकाते हैंॐ11ॐ

ॐ ह्रीं गव्यूति शत् चतुष्टय सुभिक्षत्व घातिक्षय जातिशय धारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

होय गमन आकाश प्रभु का, यह अतिशय दिखलाते हैं।
नृत्यगान करते हैं सुर नर, मन में अति हर्षाते हैंॐ
केवलज्ञान प्रकट होते ही, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
प्रभु के गुण को पाने हेतु, पद में शीष झुकाते हैंॐ12ॐ

ॐ ह्रीं आकाश गमन घातिक्षय जातिशय धारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सर्व प्राणियों के मन में शुभ, दया भाव आ जाता है।
प्रभु के आने से अदया का, नाम स्वयं खो जाता है ॐ
केवलज्ञान प्रकट होते ही, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
प्रभु के गुण को पाने हेतु, पद में शीष झुकाते हैंॐ13ॐ

ॐ ह्रीं अदयाभाव घातिक्षय जातिशय धारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सुर नर पशु कृत और अचेतन, कोई उपसर्ग नहीं होवें।
महिमा है तीर्थंकर पद की, आप स्वयं सारे खोवेंॐ
केवलज्ञान प्रकट होते ही, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
प्रभु के गुण को पाने हेतु, पद में शीष झुकाते हैंॐ14ॐ

ॐ ह्रीं उपसर्गाभाव घातिक्षय जातिशय धारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

क्षुधा रोग से पीड़ित है जग, बिन आहार नहीं रहते।
क्षुधा वेदना को जीते प्रभु, कवलाहार नहीं करतेॐ
केवलज्ञान प्रकट होते ही, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
प्रभु के गुण को पाने हेतु, पद में शीष झुकाते हैंॐ15ॐ

ॐ ह्रीं कवलाहाराभाव घातिक्षय जातिशय धारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

समवशरण के बीच विराजे, पूर्व दिशा सम्मुख होवें।
चतुर्दिशा में दर्शन हो शुभ, भव्य जीव जड़ता खोवेंॐ

केवलज्ञान प्रकट होते ही, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
प्रभु के गुण को पाने हेतु, पद में शीष झुकाते हैंॐ16ॐ

ॐ ह्रीं चर्तुमुखत्व घातिक्षय जातिशय धारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सब विद्या के ईश्वर हैं प्रभु, सर्व लोक के अधीपती।
सुर नरेन्द्र चरणों आ झुकते, गणधर मुनिवर और यतीॐ
केवलज्ञान प्रकट होते ही, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
प्रभु के गुण को पाने हेतु, पद में शीष झुकाते हैंॐ17ॐ

ॐ ह्रीं सर्व विद्येश्वरत्व घातिक्षय जातिशय धारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

छाया रहित प्रभु का तन है, कैसा विस्मयकारी है।
मूर्त पुद्गलों से निर्मित है, सुन्दर अरू मनहारी हैॐ
केवलज्ञान प्रकट होते ही, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
प्रभु के गुण को पाने हेतु, पद में शीष झुकाते हैंॐ18ॐ

ॐ ह्रीं छाया रहित घातिक्षय जातिशय धारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा

बढ़े नहीं नख केश प्रभु के, ज्यों के त्यों ही रहते हैं।
तीर्थंकर जिन जिनवाणी में, तीन काल यह कहते हैंॐ
केवलज्ञान प्रकट होते ही, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
प्रभु के गुण को पाने हेतु, पद में शीष झुकाते हैंॐ19ॐ

ॐ ह्रीं समान नख केशत्व घातिक्षय जातिशय धारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

निर्निमेष दृग रहते जिनके, नहीं झपकते पलक कभी।
नाशादृष्टी रहे सदा ही, ऐसा कहते देव सभीॐ

केवलज्ञान प्रकट होते ही, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
प्रभु के गुण को पाने हेतु, पद में शीष झुकाते हैंॐ20ॐ

ॐ ह्रीं अक्षस्पंद रहित घातिक्षय जातिशय धारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

14 केवलज्ञान के अतिशय

अर्धमागधी भाषा प्रभु की, सब जीवों को सुखकारी।
ऊंकार युत जिनवाणी है, मंगलमय मंगलकारीॐ
समवशरण में तीर्थंकर जिन, चौदह अतिशय पाते हैं।
श्री जिन के गुण पाने को हम, सादर शीष झुकाते हैंॐ 21ॐ

ॐ ह्रीं सर्वार्धमागधी भाषा देवोपनीतातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मैत्रीभाव सभी जीवों में, प्रभु के आने से होवें।
रोष तोष क्रोधादि कषाएँ, आपो आप स्वयं खोवेंॐ
समवशरण में तीर्थंकर जिन, चौदह अतिशय पाते हैं।
श्री जिन के गुण पाने को हम, सादर शीष झुकाते हैंॐ22ॐ

ॐ ह्रीं सर्व मैत्रीभाव देवोपनीतातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

छहों ऋतु के फूल खिलें अरु, सर्वऋतु के फल लगते।
होय आगमन जहाँ प्रभु का, भाग्य सभी के भी जगतेॐ
समवशरण में तीर्थंकर जिन, चौदह अतिशय पाते हैं।
श्री जिन के गुण पाने को हम, सादर शीष झुकाते हैंॐ23ॐ

ॐ ह्रीं सर्वर्तुफलादि तरु परिणाम देवोपनीतातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

भूमि चमकती है दर्पण सम, जहाँ प्रभु का होय गमन।
श्री जिनवर प्रभुता दिखलाएँ, जग के प्राणी करें नमनॐ

समवशरण में तीर्थंकर जिन, चौदह अतिशय पाते हैं।
श्री जिन के गुण पाने को हम, सादर शीष झुकाते हैंङ्क24ङ्क

ॐ ह्रीं आदर्शतल प्रतिमारत्नमही देवोपनीतातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सुरभित मंद पवन हितकारी, सब जीवों के मन को भाय।
यह अतिशय जिनवर का पावन, जैनागम में कहा जिनायङ्क
समवशरण में तीर्थंकर जिन, चौदह अतिशय पाते हैं।
श्री जिन के गुण पाने को हम, सादर शीष झुकाते हैंङ्क25ङ्क

ॐ ह्रीं सुगंधित विहरण मनुगत वायुत्व देवोपनीतातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सर्व दिशाओं के प्राणी सब, आनंदित हो जाते हैं।
समवशरण से सहित प्रभु के, चरण कमल पड़ जाते हैंङ्क
समवशरण में तीर्थंकर जिन, चौदह अतिशय पाते हैं।
श्री जिन के गुण पाने को हम, सादर शीष झुकाते हैंङ्क26ङ्क

ॐ ह्रीं सर्वानंदकारक देवोपनीतातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कंटक रहित भूमि हो जावे, जहां प्रभु के चरण पड़ें।
प्रभु की भक्ति करने वाले, के मन में आनंद बढ़ेंङ्क
समवशरण में तीर्थंकर जिन, चौदह अतिशय पाते हैं।
श्री जिन के गुण पाने को हम, सादर शीष झुकाते हैंङ्क27ङ्क

ॐ ह्रीं वायुकुमारोपशमित घूलि कंटकादि देवोपनीतातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

होवे जय जयकार गगन में, सभी जीव हों सुखकारी।
नर सुरेन्द्र अति हर्ष मनाएँ, नृत्य करें मंगलकारीङ्क

समवशरण में तीर्थंकर जिन, चौदह अतिशय पाते हैं।
श्री जिन के गुण पाने को हम, सादर शीष झुकाते हैंङ्क28ङ्क

ॐ ह्रीं आकाशे जय-जयकार देवोपनीतातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गंधोदक की वृष्टि पावन, देव करें अतिशयकारी।
दर्शन करके श्री जिनवर का, खुश हों सारे नर नारीङ्क
समवशरण में तीर्थंकर जिन, चौदह अतिशय पाते हैं।
श्री जिन के गुण पाने को हम, सादर शीष झुकाते हैंङ्क29ङ्क

ॐ ह्रीं मेघ कुमार कृत गंधोदकवृष्टि देवोपनीतातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गगन गमन के समय देवगण, पद तल कमल रचाते हैं।
तीर्थंकर के समवशरण में, यह अतिशय दिखलाते हैंङ्क
समवशरण में तीर्थंकर जिन, चौदह अतिशय पाते हैं।
श्री जिन के गुण पाने को हम, सादर शीष झुकाते हैंङ्क3ङ्क

ॐ ह्रीं चरण कमलतल रचित स्वर्णकमल देवोपनीतातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रभु आगमन हो जाने से, निर्मल हो जावे आकाश।
धर्म भावना का लोगों के, मन में होवे पूर्ण विकासङ्क
समवशरण में तीर्थंकर जिन, चौदह अतिशय पाते हैं।
श्री जिन के गुण पाने को हम, सादर शीष झुकाते हैंङ्क31ङ्क

ॐ ह्रीं शरदकाल वन्निर्मल गमन देवोपनीतातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सर्व दिशाएँ धूम रहित हों, श्री जिनवर के आने से।
कर्म कटें जो लगे पुराने, भाव सहित गुण गाने सेङ्क

समवशरण में तीर्थंकर जिन, चौदह अतिशय पाते हैं।
श्री जिन के गुण पाने को हम, सादर शीष झुकाते हैंॐ32ॐ

ॐ ह्रीं सर्वानंदकारक देवोपनीतातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

धर्मचक्र आगे चलता है, जिन महिमा को दिखलाए।
रहे मूक फिर भी इस जग में, श्री जिनेन्द्र के गुण गाएॐ
समवशरण में तीर्थंकर जिन, चौदह अतिशय पाते हैं।
श्री जिन के गुण पाने को हम, सादर शीष झुकाते हैंॐ33ॐ

ॐ ह्रीं धर्मचक्र चतुष्टय देवोपनीतातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मंगल द्रव्य अष्ट लेकर के, प्रभु चरणों में आते हैं।
भक्ति वश हो नृत्य गानकर, प्रभु के गुण वह गाते हैंॐ
समवशरण में तीर्थंकर जिन, चौदह अतिशय पाते हैं।
श्री जिन के गुण पाने को हम, सादर शीष झुकाते हैंॐ34ॐ

ॐ ह्रीं अष्ट मंगल द्रव्य देवोपनीतातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

8 प्रातिहार्य

(गीतिका-छंद)

प्रातिहार्य अशोक तरु शुभ, पाए तीर्थंकर प्रभो!।
मोक्ष मंजिल के किनारे, पर खड़े रहते विभो! ॐ
कर्म नाशे घातिया प्रभु, प्रातिहार्य प्रगटाए हैं।
विशद ज्ञानी प्रभु के गुण, जगत् मंगल गाए हैंॐ35ॐ

ॐ ह्रीं अशोक तरु सत्प्रातिहार्य सहित शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

रत्न से मण्डित सिंहासन, आपका शुभ है प्रभो!।
हे त्रिलोकीनाथ! मंगल, आप हो जग में विभो! ॐ

कर्म नाशे घातिया प्रभु, प्रातिहार्य प्रगटाए हैं।
विशद ज्ञानी प्रभु के गुण, जगत् मंगल गाए हैंॐ36ॐ

ॐ ह्रीं सिंहासन सत्प्रातिहार्य सहित शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रातिहार्य त्रय छत्र शुभ भी, पाए तीर्थंकर प्रभो!।
हे त्रिलोकीनाथ ! मंगल, आप हो जग में विभो!ॐ
कर्म नाशे घातिया प्रभु, प्रातिहार्य प्रगटाए हैं।
विशद ज्ञानी प्रभु के गुण, जगत् मंगल गाए हैंॐ37ॐ

ॐ ह्रीं छत्र त्रय सत्प्रातिहार्य सहित शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रभा मण्डल युक्त भामण्डल, सहित हो हे प्रभो!।
सूर्य फीका पड़ रहा है, आपके आगे विभो!ॐ
कर्म नाशे घातिया प्रभु, प्रातिहार्य प्रगटाए हैं।
विशद ज्ञानी प्रभु के गुण, जगत् मंगल गाए हैंॐ38ॐ

ॐ ह्रीं भामण्डल सत्प्रातिहार्य सहित शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दिव्य ध्वनि प्रतिहार्य पावन, पाए तीर्थंकर प्रभो!।
भव्य प्राणी श्रवण करके, ज्ञान पाते हे विभो!ॐ
कर्म नाशे घातिया प्रभु, प्रातिहार्य प्रगटाए हैं।
विशद ज्ञानी प्रभु के गुण, जगत् मंगल गाए हैंॐ39ॐ

ॐ ह्रीं दिव्यध्वनि सत्प्रातिहार्य सहित शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पुष्पवृष्टि देव करते, गगन में खुश हो प्रभो!।
वंदना करते चरण की, हर्षमय होकर विभो!ॐ
कर्म नाशे घातिया प्रभु, प्रातिहार्य प्रगटाए हैं।
विशद ज्ञानी प्रभु के गुण, जगत् मंगल गाए हैंॐ4ॐ

ॐ ह्रीं सुरपुष्पवृष्टि सत्प्रातिहार्य सहित शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दुंदुभि बाजे सुमंगल, ध्वनि से बजते प्रभो!।
जगत् में महिमा दिखाते, आपकी जिनवर विभो!॥
कर्म नाशे घातिया प्रभु, प्रातिहार्य प्रगटाए हैं।
विशद ज्ञानी प्रभु के गुण, जगत् मंगल गाए हैं॥41॥

ॐ ह्रीं देव दुंदुभि सत्प्रातिहार्य सहित शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

चंवर चौसठ यक्ष ढौरें, भक्तियुत होकर विभो!।
शिखर से झरना गिरे ज्यों, दिखे मनहर हे प्रभो! ॥
कर्म नाशे घातिया प्रभु, प्रातिहार्य प्रगटाए हैं।
विशद ज्ञानी प्रभु के गुण, जगत् मंगल गाए हैं॥42॥

ॐ ह्रीं चतु:षष्ठि चामर सत्प्रातिहार्य सहित शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

4 अनंत चतुष्टय

दर्श गुण के आवरण का, नाश करके हे विभो!।
दर्श पाए अनंत पावन, सर्व दृष्टा हे प्रभो!॥
कर्मघाती नाशकर प्रभु, अनंत चतुष्टय पाए हैं।
विशद ज्ञानी प्रभु के गुण, जगत मंगल गाए हैं॥43॥

ॐ ह्रीं अनंत दर्शन गुण प्राप्त शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

ज्ञानावरणी कर्म नाशा, आपने हे जिन प्रभो!।
हो गये सर्वज्ञ जिनवर, अनंत ज्ञानी हे विभो!॥
कर्मघाती नाशकर प्रभु, अनंत चतुष्टय पाए हैं।
विशद ज्ञानी प्रभु के गुण, जगत मंगल गाए हैं॥44॥

ॐ ह्रीं अनंत ज्ञान गुण प्राप्त शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कर्मनाशी मोह के, सम्यक्त्व गुण पाए विभो!।
सुख अनंतानंत पाए, तब जिनेश्वर हो प्रभो!॥
कर्मघाती नाशकर प्रभु, अनंत चतुष्टय पाए हैं।
विशद ज्ञानी प्रभु के गुण, जगत मंगल गाए हैं॥45॥

ॐ ह्रीं अनंत सुख गुण प्राप्त शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अंतराय विनाश करके, वीर्य प्रगटाए प्रभो!।
बल अनंतानंत पाए, तब जिनेश्वर हो विभो!॥
कर्मघाती नाशकर प्रभु, अनंत चतुष्टय पाए हैं।
विशद ज्ञानी प्रभु के गुण, जगत मंगल गाए हैं॥46॥

ॐ ह्रीं अनंत वीर्य गुण प्राप्त शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

समोशरण के अर्घ्य

समवशरण की चारों दिश में, मानस्तम्भ बनें हैं चार।
चतुर्दिशा जिनबिम्ब विराजित, शोभित होते अपरम्पार॥
जिन दर्शन कर श्रद्धा जागे, जीवों का होवे कल्याण।
दर्श आपका होय निरन्तर, हमको दो ऐसा वरदान॥47॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित चतुर्दिग मानस्तंभ सहित शनि अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

चैत्य प्रसाद भूमि के मंदिर, का हम करते हैं गुणगान।
रोग शोक दारिद्र कलह के, नाशक जग में रहे महान्॥
समवशरण में प्रभु विराजे, मंगलमय जिनका दर्शन।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, करते हैं शत्-शत् वन्दन॥48॥

ॐ ह्रीं चैत्य प्रासाद भूमि स्थित जिनबिम्ब सहित शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

द्वितिय भूमि रही खातिका, समवशरण में मंगलकार।
जलचर जीवों से पूरित है, पुष्प पुञ्ज हैं अपरम्पार॥
समवशरण में प्रभु विराजे, मंगलमय जिनका दर्शन।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, करते हैं शत्-शत् वन्दन॥49॥

ॐ ह्रीं खातिका भूमि स्थित जिनबिम्ब सहित शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

लता भूमि अतिशय कारी शुभ, पुष्प जलाशय शुभ मनहार।
चारों ओर लताऐं फैलीं, सुन्दर मनहर कई प्रकार॥
समवशरण में प्रभु विराजे, मंगलमय जिनका दर्शन।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, करते हैं शत्-शत् वन्दन॥50॥

ॐ ह्रीं लता भूमि स्थित जिनबिम्ब सहित शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

चैत्यवृक्ष शोभित होते हैं, उपवन भूमि में सुखकार।
तरु अशोक लख चतुर्दिशा में, प्रमुदित होते हैं नर-नार॥
समवशरण में प्रभु विराजे, मंगलमय जिनका दर्शन।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, करते हैं शत्-शत् वन्दन॥51॥

ॐ ह्रीं उपवन भूमि स्थित जिनबिम्ब सहित शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दश प्रकार चिन्हों से चिन्हित, ध्वज फहराएँ चारों ओर।
भवि जीवों के मन मधुकर को, कर देती हैं भाव विभोर॥
समवशरण में प्रभु विराजे, मंगलमय जिनका दर्शन।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, करते हैं शत्-शत् वन्दन॥52॥

ॐ ह्रीं ध्वज भूमि स्थित जिनबिम्ब सहित शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कल्पवृक्ष भूमि है षष्ठी, तरु सिद्धार्थ रहे चउँ ओर।
सिद्ध बिम्ब शोभित हैं उन पर, करते सबको भाव विभोर॥
समवशरण में प्रभु विराजे, मंगलमय जिनका दर्शन।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, करते हैं शत्-शत् वन्दन॥53॥

ॐ ह्रीं कल्पवृक्ष भूमि स्थित जिनबिम्ब सहित शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

भवन भूमि सुन्दर सुर परिकर, सहित मनोहर मंगलकार।
नवस्तूप सहित चऊदिश में, क्रीड़ा में रत हैं सुखकार।
समवशरण में प्रभु विराजे, मंगलमय जिनका दर्शन।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, करते हैं शत्-शत् वन्दन॥54॥

ॐ ह्रीं भवन भूमि स्थित जिनबिम्ब सहित शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

श्रीमण्डप भूमि है अनुपम, द्वादश कोठे सहित महान्।
दिव्य ध्वनि सुनते जिनवर की, बैठ सभी अपने स्थान॥
समवशरण में प्रभु विराजे, मंगलमय जिनका दर्शन।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, करते हैं शत्-शत् वन्दन॥55॥

ॐ ह्रीं श्रीमण्डप भूमि स्थित जिनबिम्ब सहित शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गंध कुटी के ऊपर श्रीजिन, कमलासन पर अधर रहे।
दिव्यदेशना की शुभ गंगा, प्रभु के द्वारा नित्य बहे॥
समवशरण में प्रभु विराजे, मंगलमय जिनका दर्शन।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, करते हैं शत्-शत् वन्दन॥56॥

ॐ ह्रीं समवशरण गंधकुटि ऊपर स्थित शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मुनिसुव्रत के समवशरण में, गणधर अष्टादश गुणवान।
चौंसठ ऋद्धी के धारी शुभ, मल्लि गणधर रहे प्रधान॥
समवशरण में प्रभु विराजे, मंगलमय जिनका दर्शन।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, करते हैं शत्-शत् वन्दन॥57॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित अष्टादश गणधर सहित शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पंच शतक मुनिराज पूर्वधर, मुनिसुव्रत के चरण शरण।
वन्दन करके भक्तिभाव से, करते जो नित कर्म शमन॥
समवशरण में प्रभु विराजे, मंगलमय जिनका दर्शन।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, करते हैं शत्-शत् वन्दन॥58॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित पंच शतक मुनिवर सहित शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

थे इक्कीस हजार मुनीश्वर, शिक्षक पद के अधिकारी।
रत्नात्रय को पाने वाले, निर्विकारमय अविकारी॥
समवशरण में प्रभु विराजे, मंगलमय जिनका दर्शन।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, करते हैं शत्-शत् वन्दन॥59॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित एकविंशति शिक्षक पद धारीमुनिवर सहित शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

एक सहस्त्र आठ सौ मुनिवर, केवल ज्ञान के अधिकारी।
कर्म घातिया नाश किए हैं, सर्व जगत मंगलकारी॥
समवशरण में प्रभु विराजे, मंगलमय जिनका दर्शन।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, करते हैं शत्-शत् वन्दन॥6॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित अष्टादश शतक केवलज्ञानी मुनिवर सहित शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

एक सहस्त्र आठ सौ मुनिवर, अवधिज्ञान के अधिकारी।
दर्शन ज्ञान चरित तप साधक, शोभित थे मगंलकारी॥
समवशरण में प्रभु विराजे, मंगलमय जिनका दर्शन।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, करते हैं शत्-शत् वन्दन॥61॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित अष्टादश शतक अवधिज्ञानी मुनिवर सहित शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

द्वय सहस्त्र द्वय शतक मुनीश्वर, विक्रिया ऋद्धि के धारी।
ज्ञानी ध्यानी हित उपदेशी, मोक्ष महल के अधिकारी॥
समवशरण में प्रभु विराजे, मंगलमय जिनका दर्शन।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, करते हैं शत्-शत् वन्दन॥62॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित द्वाविंशतिशत विक्रिया ऋद्धिधारी मुनिवर सहित शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पन्द्रह सौ मनः पर्यय ज्ञानी, विपुल मति को धार रहे।
वीतराग मय जैन धर्म ध्वज, अपने हाथ सम्हार रहे॥
समवशरण में प्रभु विराजे, मंगलमय जिनका दर्शन।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, करते हैं शत्-शत् वन्दन॥63॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित पंचादश शत विपुलमति मनः पर्ययज्ञान धारी मुनिवर सहित शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

द्वादश शत् वादी मुनिवर शुभ, वाद कुशल जग हितकारी।
जैन धर्म के हित सम्पादक, करुणाकर करुणाधारी॥
समवशरण में प्रभु विराजे, मंगलमय जिनका दर्शन।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, करते हैं शत्-शत् वन्दन॥64॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित द्वादशशत वादी मुनिवर सहित शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चौतिस अतिशय प्रातिहार्य शुभ, अनन्त चतुष्टय मंगलकार।
पावन समवशरण की रचना, अष्ट विधि मुनिवर अविकार॥
समवशरण में प्रभु विराजे, मंगलमय जिनका दर्शन।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, करते हैं शत्-शत् वन्दन॥65॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित षट्चत्वारिंशत मूलगुण सहित शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा- **मुनिसुव्रत जग में हुये, तीन लोक के नाथ।**
पूजा करके भाव से, विशद झुकाते माथ॥

इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य : **ॐ ह्रीं क्रों ह्राः श्रीं शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः सर्व शान्ति कुरु कुरु स्वाहा।**

समुच्चय जयमाला

दोहा- **तीन लोक में श्रेष्ठ हैं, मुनिसुव्रत जिनराज।**
जयमाला कर पूजते, प्रभु द्वय पद हम आज॥
मुनिसुव्रत भगवान का, जपूँ निरन्तर नाम।
शनि अरिष्ट ग्रह शांत हो, चरणों विशद प्रणाम॥

(चौपाई छन्द)

तीर्थंकर पदवी जो धारे, वे ही जिनवर रहे हमारे।
जिनने कर्म घतिया नाशे, आतम ज्ञान ध्यान जो भासे॥
वे ही जग मंगल कहलाए, इन्द्रों ने जिन के गुण गाए।
उत्तम सर्व लोक में गाए, जिनके पद वन्दन को आए॥
चार शरण जग में कहलाई, प्रथम शरण जिनवर की भाई।
पूर्व पुण्य का फल यह गाया, तीर्थंकर पदवी को पाया॥

देव रत्न वृष्टि करते हैं, जिन भक्ति में रत रहते हैं।
जन्म समय ऐरावत लाते, पाण्डुक शिला पे न्हवन कराते॥
आनन्दोत्सव खूब मनाते, भक्ति में वह नचते गाते।
बालक की परिचर्या करते, सब बाधाएँ उनकी हरते॥
जब प्रभु जी संयम को धरते, लौकान्तिक अनुमोदन करते।
लेकर देव पालकी आते, उस पर प्रभु जी को बैठाते॥
मानव प्रभु को लेकर जाते, वन्दन हेतु शीष झुकाते।
देव पालकी ले उड़ जाते, प्रभु को जंगल में पहुँचाते॥
केश लुंच करते हैं जाकर, पंच मुष्ठि की सीमा पाकर।
निज आतम का ध्यान लगाते, प्रभु जी केवल ज्ञान जगाते॥
समोशरण की रचना होती, भवि जीवों के कल्मष खोती।
देवों की बलिहारी जानो, भक्ति में तत्पर पहिचानो॥
योग निरोध प्रभु ने कीन्हा, निज की आतम में चित् दीन्हा।
प्रभु सभी कर्मों को नाशे, सिद्ध शिला पर किए निवासे॥
श्री जिनेन्द्र हो गये अविकारी, महिमा गाते हैं नर नारी।
जिस पदवी को प्रभु ने पाया, वह पाने का भाव बनाया॥
चरण शरण में सेवक आयो, श्रद्धा सुमन साथ में लायो।
''विशद'' भावना हम यह भावें, भव सागर से मुक्ति पावें॥

दोहा- **मोक्ष महल में वास हो, यही भावना एक।**
चरण वन्दना मैं करूँ, अपना माथा टेक॥

ॐ ह्रीं शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **ब्रह्मा तुम विष्णु तुम्हीं, तुम ही शिव के नाथ।**
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, जोड़ रहे द्वय हाथ॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् इत्याशीर्वाद

मुनिसुव्रत जिनराज की आरती

तर्ज:- तेरी पूजन को भगवान.....

श्री मुनिसुव्रत भगवान, आज हम द्वारे आये हैं।
आरती करने को हे नाथ !, जलाकर दीपक लाए हैंङ्क

मुनिव्रतों को तुमने पाया, वीतरागमय भेष बनाया।
कीन्हा आतम ध्यान, आपके द्वारे आए हैंङ्क
आरती करने को हे नाथ !, जलाकर दीपक लाए है।
श्री मुनिसुव्रत ....ङ्क

तुमने कर्म घातिया नाशे, निज में केवलज्ञान प्रकाशे।
प्रभु किया जगत् कल्याण, आपके दर्शन पाए हैंङ्क
आरती करने को हे नाथ !, जलाकर दीपक लाए हैं।
श्री मुनिसुव्रत ....ङ्क

मुक्ति वधु के तुम भरतारी, सर्व जगत में मंगलकारी।
तुम हो कृपा सिन्धु भगवान, चरण हम शीष झुकाए हैंङ्क
आरती करने को हे नाथ !, जलाकर दीपक लाए हैं।
श्री मुनिसुव्रत ....ङ्क

तव चरणों में जो भी आया, उसने ही सौभाग्य जगाया।
जग में केवल आप महान्, दर्श कर हम हर्षाए हैंङ्क
आरती करने को हे नाथ !, जलाकर दीपक लाए हैं।
श्री मुनिसुव्रत ....ङ्क

हम भी शरण तुम्हारी आए, भक्ति भाव से प्रभु गुण गाए।
हो 'विशद' सर्व कल्याण, चरण में हम सिरनाए हैंङ्क
आरती करने को हे नाथ !, जलाकर दीपक लाए हैं।
श्री मुनिसुव्रत ....ङ्क

मुनिसुव्रत चालीसा

AahßVm| H$mo Z_Z² H$a, {gÕm| H$m Ya Ü`mZŸ&
CnmÜ`m` AmMm`© Aé, gd© gmYw JwUdmZŸ&&
O¡Z Y_© AmJ_ "{deX', M¡Ë`mb` {OZXodŸ&
_w{Zgwd«V {OZamO H$mo, dßXZ H$ê±$ gX¡dŸ&&

_w{Zgwd«V {OZamO h_mao, OZ-OZ Ho$ h¢ VmaU hmaoŸ&
à^w h¢ drVamJVm Ymar, VrZ bmoH$ _| H$éUm H$marŸ&&
^md g{hV CZHo$ JwU JmVo, MaU H$_b _| erf PwH$mVoŸ&
O`O`O` {N>`m{bg JwUYmar, ^{dOZ Ho$ Vw_ hmo {hVH$marŸ&&
Xodm| Ho$ ^r Xod H$hmVo, gwaZa new Vw_ao JwU JmVoŸ&
Vw_ hmo gd© MamMa kmVm, gmao OJ Ho$ Amn {h ÌmVmŸ&&
à^w Vw_ ^of {XJå~a Ymao, Vw_ go H$_© eÌw ^r hmaoŸ&
Hk$moY _mZ _m`m Ho$ Zmer, Vw_ hmo Ho$dbkmZ àH$merŸ&&
à^w H$s à{V_m {H$VZr gwßXa, Ñ{ï> gwIX O_t Zmem naŸ&
IS²>JmgZ go Ü`mZ bJm`m, Vw_Zo Ho$dbkmZ OJm`mŸ&&
_Ü`bmoH$ n¥Ïdr H$m _mZmo, Cg_| Oå~yÛrn gwhmZmoŸ&
A§J Xoe Cg_| H$hbmE, amOJ¥{h ZJar _Z ^mEŸ&&
^yn{V dhm± gw{_Ì H$hmE, _mVm nX_m Ho$ Ca AmEŸ&
`mXd d§e AmnZo nm`m, H$í`n JmoÌ dra Zo Jm`mŸ&&
àmUV ñdJ© go M`H$a Am`o, J^© XmoO gmdZ ew{X nmEŸ&
dhm± no gwa ~mbmE± AmB©, _m± H$s godm H$a| gw^mB©Ÿ&&
d¡emI dXr Xe_r {XZ Am`m, OÝ_ amOJ¥h ZJar nm`mŸ&
BÝÐ g^r _Z _| hfm©E, EoamdV bo Ûmao Am`oŸ&&
nm§Sw>H$ {ebm A{^fo H$ H$am`m, OZ-OZ H$m Vd _Z hfm©`mŸ&
nJ _| H$N>wAm {M• {XIm`m, _w{Zgwd«V Or Zm_ H$hm`mŸ&&
OÝ_ go VrZ kmZ Ho$ Ymar, Hk$s‹S>m H$aVo gwI_` ^marŸ&
~b {dHk$_ d¡^d H$mo nmE, OJ _| XrZmZmW H$hmEŸ&&

~rg YZwf VZ H$s D±$MnB©, VZ H$m a§J H¥$îU Wm ^mB©Ÿ&&
H$B© dfm] VH$ amÁ` Mbm`m, gd© àOm H$mo gwIr ~Zm`mŸ&&
CëH$m nVZ à^y Zo XoIm, q‡MVZ {H$E Ûm¡Xe AZwàojmŸ&&
gwa bm¡H$ mpÝV H$ ñdJ© go AmE, à^w Ho$ _Z d¡am½` OJmEŸ&&
Xod mmbH$s Anam{OV bmE, Cg_| à^w Or H$mo nYamEŸ&&
^yn{V H$B© à^w H$mo bo Mmbo, Xodm| Zo H$s ñd`§ hdm boŸ&&
d¡emI dXr Xe_r {XZ Am`m, Zrb gw dZ M§n H$ Vém m`mŸ&&
_w{Zd«Vm| H$mo Vw_Zo mm`m, à^w Zo gmW© H$ Zm_ ~Zm`mŸ&&
n§M _w{ï> go Ho$e CIm‹S>o, AmH$a Xod gm_Zo R>m‹S>oŸ&&
Ho$e jra gmJa bo Mmbo, ^{º$^md go Cg_| S>mboŸ&&
dbm Ho$ Ondmg Omo Ymao, VrOo {XZ amOJ¥hr nYmaoŸ&&
d¥f^gZ n‹S>Jmh Z H$s Ým, Ira H$m ew^ Anhma Omo XrÝmŸ&&
d¡emI H$¥îU Zm¡_r {XZ Am`m, à^w Zo Ho$dbkmZ OJm`mŸ&&
Xod g^r Xe©Z H$mo AmE, g_deaU gw§Xa ~ZdmEŸ&&
JUYa à^w AR>mah mmE, CZ_| à_wI gwà^ H$hbmEŸ&&
Vrg hOma _w{Z g§J AmE, g_deaU _| emo^m mmEŸ&&
BH$bI lmdH$ ^r AmE ^mB©, VrZ bmI lm{dH$ mE± AmBªŸ&&
g§» `mV H$ new dhm± AmE, Ag§» `mV gwa JU ^r Am`oŸ&&
à^w gå_oX {eIa H$mo AmE, I‹S²>Jmg Z go Ü`mZ bJmEŸ&&
nyd© {Xem _| Ñ{ï> mmE, {ZO©a Hy$Q> go _moj {gYmEŸ&&
\$mëJwZ dXr dmag {XZ OmZmo, ldU Zj Ì _moj H$m _mZmoŸ&&
àXmof H$mb _| _moj {gYm`o, _w{Z AZoH$ gh _w{º$ mm`oŸ&&
e{Z A[aï> JMh {OÝh| gVmE, _w{Zgwd«V Or em§{V {XbmE±Ÿ&&
Bhna ^d Ho$ gwI h_mE±, _w{º$ dYw H$mo h_ mmOmE±Ÿ&&

Xmoh- mmR> H$a| Mmbrg {XZ, {ZV Mmbrg mm| ~maŸ&&
_w{Zgwd«V Ho$ MaU _|, Io`o gwJ§Y Anmam Ÿ&&
{_Ìñd Z AZwHy$b hm|, `mo½` hmo `g§VmZŸ&&
XrZ X[aÐ hmo`Omo, "{deX' hmo` YZdmZŸ&&

प्रशस्ति

मध्यलोक के मध्य है, जम्बूद्वीप महान्।
भारत देश का प्रान्त है, सुन्दर राजस्थानङ्क
जिला एक अजमेर है, जग में है विख्यात।
नगर अयोध्या की शुभम्, रचना होवे ज्ञातङ्क
सोनी जी परिवार ने, किया अनोखा काम।
अद्वितीय रचना बनी, हुआ विश्व में नामङ्क
दो हजार सन् सात का, हुआ है वर्षायोग।
इस अवसर पर ही बना, लिखने का संयोगङ्क
मुनिसुव्रत भगवान की, भक्ति फले अविराम।
पर्यूषण के पूर्व ही, पूर्ण हुआ यह कामङ्क
भादव शुक्ला पञ्चमी, उत्तम क्षमा महान्।
मुनिसुव्रत की भक्ति में, लिक्खा विशद विधानङ्क
शुभ भावों के हेतु यह, किया प्रभु गुणगान।
भव्य जीव पढ़कर इसे, पावें सम्यक् ज्ञानङ्क
पूजा करके भाव से, करें कर्म का नाश।
रत्नत्रय को प्राप्त कर, पावें ज्ञान प्रकाशङ्क
शनि अरिष्ट नाशक लिखा, मंगलमयी विधान।
भूल चूक को टाल कर, पढ़ें सभी श्रीमानङ्क
कवि नहीं वक्ता नहीं, मैं हूँ लघु आचार्य।
'विशद' धर्म युत आचरण, करें जगत् जन आर्यङ्क
पूजा के फल से सभी, होते कर्म विनाश।
सर्व कर्म का नाश हो, होवे आत्म प्रकाशङ्क

●●●

खण्ड - स

सर्वमंगल दायक

श्री नेमिनाथ पूजन विधान

मण्डल

मध्य में	- ह्रीं
प्रथम वलय श्रीं	- 9
द्वितीय वलय क्लीं	- 18
तृतीय वलय व्लूं	- 36
चतुर्थ वलय	- 72

रचयिता :

परम पूज्य क्षमामूर्ति, साहित्य रत्नाकर

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

श्री नेमिनाथ स्तुति

नेमिनाथ जिन के चरणों में, झुकता है यह जग सारा।
काम बली पर विजय प्राप्त की, जिससे सारा जग हारा।।
हे प्रभु ! आप करुणा कर हो, हमको करुणा का दान करो।
यह भक्त पड़ा है चरणों में, हम पर भी कृपा प्रदान करो।।1।।

तुम पार हुए भव सागर से, मैं भव सागर में भटक रहा।
तुमने मुक्ति को पाया है, मैं जग वैभव में अटक रहा।।
हे नेमिनाथ करुणा नन्दन, करुणा की धारा बरसाओ।
जो भूले भटके राही हैं, उनको सद् मार्ग दिखा जाओ।।2।।

सद्धर्म आत्मा का भूषण, जो धारण उसको करता है।
वह जगत लक्ष्मी को तजकर, शुभ मुक्ति वधु को वरता है ।।
तुमने राजुल का त्याग किया, तो शिव रमणी को पाया है।
यह जान प्रभु मेरे मन में, शुभ भाव उमड़ कर आया है।।3।।

रिस्ते नाते सब धोखा हैं, बस नाता सत्य तुम्हारा है।
तुमसे अब मेरा नाता हो, यह पावन लक्ष्य हमारा है।।
संसार असार रहा प्रभु यह, हम क्या जाने तुम हो ज्ञाता।
भव पार करो हमको भगवन्, हे नाथ आप जग के त्राता।।4।।

तुम शिवादेवि के हो नन्दन, तुम तो शिवपुर के वासी हो।
तुम विश्व विभव को पाये हो, प्रभु सर्व कर्म के नाशी हो।।
प्रभु शांति सुधामृत के स्वामी, तुमने शांति को पाया है।
अब 'विशद' शांति को पाने का, मैंने शुभ भाव बनाया है।।5।।

●●●

श्री नेमिनाथ जिनपूजा

स्थापना

नेमिनाथ के श्रीचरणों में, भव्य जीव आ पाते हैं।
तीर्थंकर जिन के दर्शन से, सर्व कर्म कट जाते हैं।।
गिरि गिरनार के ऊपर श्रीजिन, को हम शीष झुकाते हैं।
हृदय कमल के सिंहासन पर, आह्वानन् कर तिष्ठाते हैं।।
राहु अरिष्ट ग्रह शांत करो, प्रभु हमने तुम्हें पुकारा है।
हमको प्रभु भव से पार करो, तुम बिन न कोई हमारा है।।

ॐ ह्रीं सर्वमंगल दायक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र ! अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्। अत्र-तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

विषयों के विष की प्याला को, पीकर के जन्म गँवाया है।
नहिं जन्म मरण के दुःखों से, हमको छुटकारा मिल पाया है।।
हम मिथ्या मल धोने प्रभुजी, शुभ कलश में जल भर लाए हैं।
राहु अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, चरणों में शीष झुकाए हैं।।

ॐ ह्रीं सर्वमंगल दायक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोधादि कषायों के कारण, संताप हृदय में छाया है।
मन शांत रहे मेरा भगवन, यह भक्त चरण में आया है।।
संसार ताप के नाश हेतु, हम शीतल चंदन लाए हैं।
राहु अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, चरणों में शीष झुकाए हैं।।

ॐ ह्रीं सर्वमंगल दायक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षणभंगुर वैभव जान प्रभु, तुमने सब राग नशाया है।
व्रत संयम तेज तपस्या से, अभिनव अक्षय पद पाया है।।

हो अक्षय पद प्राप्त हमें भगवन्, हम अक्षय अक्षत लाए हैं।
राहु अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, चरणों में शीष झुकाए हैं।।

ॐ ह्रीं सर्वमंगल दायक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

है प्रबल काम शत्रु जग में, तुमने उसको ठुकराया है।
यह भक्त समर्पित चरणों में, तुमसा बनने को आया है।।
प्रभु कामवाण के नाश हेतु, यह प्रमुदित पुष्प चढ़ाए हैं।
राहु अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, चरणों में शीष झुकाए हैं।।

ॐ ह्रीं सर्वमंगल दायक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! भोग की तृष्णा ने, अरु क्षुधा ने हमें सताया है।
मन मर्कट सब पदार्थ खाकर, भी तृप्त नहीं हो पाया है।।
प्रभु क्षुधा रोग के शमन हेतु, यह व्यंजन सरस ले आए हैं।।
राहु अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, चरणों में शीष झुकाए हैं।।

ॐ ह्रीं सर्वमंगल दायक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहांध महा अज्ञानी हूँ, जीवन में घोर तिमिर छाया।
मैं रागी द्वेषी बना रहा, निज के स्वभाव से बिसराया।।
मोहांधकार का नाश करूँ, यह दीप जलाने लाए हैं।
राहु अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, चरणों में शीष झुकाए हैं।।

ॐ ह्रीं सर्वमंगल दायक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की सेना ने कैसा, यह चक्र व्यूह रचवाया है।
मुझ भोले-भाले प्राणी को, क्यों उसके बीच फँसाया है।।

अब अष्ट कर्म की धूप जले, यह धूप जलाने लाए हैं।
राहु अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, चरणों में शीष झुकाए हैं।।

ॐ ह्रीं सर्वमंगल दायक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने चित् चेतन का चिंतन, अरु मनन नहीं कर पाया है।
सद्दर्शन ज्ञान चरित का फल, शुभ फल निर्वाण न पाया है।।
अब मोक्ष महाफल दो स्वामी, हम श्रीफल लेकर आए हैं।
राहु अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, चरणों में शीष झुकाए हैं।।

ॐ ह्रीं सर्वमंगल दायक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अविचल अनर्घ पद पाने का प्रभु, हमने अब भाव जगाया है।
अतएव प्रभु वसु द्रव्यों का, अनुपम यह अर्घ्य बनाया है।।
दो पद अनर्घ हमको स्वामी, यह अर्घ्य संजोकर लाए है।
राहु अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, चरणों में शीष झुकाए हैं।।

ॐ ह्रीं सर्वमंगल दायक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक के अर्घ्य

नेमिनाथ भगवान, कार्तिक शुक्ला षष्ठमी।
पाए गर्भ कल्याण, शिवा देवी उर आ बसे।।

ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्लाषष्ठभ्यां गर्भ मंगलमण्डिताय राहुग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हुआ जन्म कल्याण, श्रावण शुक्ला षष्ठमी।
शौर्य पुरी नगरी शुभम्, समुद्र विजय हर्षित हुए।।

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्लाषष्ठभ्यां जन्म मंगलमण्डिताय राहुग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सहस्र आम्रवन बीच, श्रावण शुक्ला षष्ठमी।
पशु आक्रंदन देख, तप धारे गिरनार पर।।

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्लाषष्ठभ्यां तप कल्याणक मण्डिताय राहुग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हुआ ज्ञान कल्याण, आश्विन शुक्ल प्रतिपदा।
स्वपर प्रकाशी ज्ञान, नेमिनाथ जिन पा लिए।।

ॐ ह्रीं आश्विन शुक्ला प्रतिपदायां केवलज्ञान मण्डिताय राहुग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाए पद निर्वाण, आठें शुक्ल अषाढ़ की।
हुआ मोक्ष कल्याण, ऊर्जयन्त के शीर्ष से।।

ॐ ह्रीं आषाढ़ शुक्ला अष्टम्यां मोक्षमंगल प्राप्त राहुग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– **समुद्र विजय के लाड़ले, शिवादेवी के लाल।**
नेमिनाथ जिनराज की, गाते हैं जयमाल।।

सुरेन्द्र नरेन्द्र मुनीन्द्र गणीन्द्र, शतेन्द्र सुध्यान लगाते हैं।
जिनराज की जय जयकार करें, उनका यश मंगल गाते हैं।।
जो ध्यान प्रभु का करते हैं, दुःख उनके सारे हरते हैं।
जो चरण शरण में आ जाते, वह भवसागर से तरते हैं।।
तुम धर्ममई हो कर्मजई, तुममें जिनधर्म समाया है।
तुम जैसा बनने हेतु नाथ !, यह भक्त चरण में आया है।।
प्रभु द्रव्य भाव नोकर्म सभी, अरु राग द्वेष भी हारे हैं।
प्रभु तन में रहते हुए विशद, रहते उससे अति न्यारे हैं।।
जिसको भव सुख की चाह नहीं, वह दुःख से क्या भय खाते हैं।
वह महावली जिन धीर वीर, भवसागर से तिर जाते हैं।।

जो दयावान करुणाधारी, वात्सल्यमयी गुणसागर हैं।
वह सर्वसिद्धियों के नायक, शुभ रत्नों के रत्नाकर हैं।।
शुभ नित्य निरंजन शिव स्वरूप, चैतन्य रूप तुमने पाया।
उस मंगलमय पावन पवित्र, पद पाने को मन ललचाया।।
कर्मों के कारण जीव सभी, भव सागर में गोते खाते ।
जो शरण आपकी आते हैं, वह उनके पास नहीं आते ।।
तुम हो त्रिकालदर्शी प्रभुवर, तुमने तीर्थंकर पद पाया है।
तुमने सर्वज्ञता को पाया, अरु केवलज्ञान जगाया है।।
तुम हो महान अतिशय धारी, तुम विधि के स्वयं विधाता हो।
सुर नर नरेन्द्र की बात कहाँ, तुम तो जन-जन के त्राता हो।।
तुम हो अनन्त ज्ञाता दृष्टा, चिन्मूरत हो प्रभु अविकारी।
जो शरण आपकी आ जाए, वह बने स्वयं मंगलकारी।।
जो मोह महामद मदन काम, इत्यादि तुमसे हारे हैं।
जो रहे असाता के कारण, चरणों झुक जाते सारे हैं।।
ज्यों तरुवर के नीचे आने से, राही शीतल छाया पाता।
प्रभु के शरणागत आने से, स्वमेव आनन्द समा जाता।।
तुमने पशुओं का आक्रन्दन, लख कर संसार असार कहा।
यह तो अनादि से है असार, इसका ऐसा स्वरूप रहा।।
हे जगत पिता ! करुणा निधान, यह सब तो एक बहाना था।
शायद कुछ इसी बहाने से, राजुल को पार लगाना था।।
राजुल का तुमने साथ दिया, उससे नव भव की प्रीति रही।
पर हमसे प्रीति निभाई न, वह खता तो हमसे कहो सही।।
अब शरण खड़ा है शरणागत, इसका भी बेड़ा पार करो।
कर रहा भक्ति के वशीभूत, हे ! दयासिंधु स्वीकार करो।।
जो शरण आपकी आ जाए, वह भव में कैसे भटकेगा।
जो भक्ति भाव से गुण गाए, वह जग में कैसे अटकेगा।।

तुम तीर्थंकर बाइसवें प्रभु, तुम बाईस परीषह को जीते।
तुमने अनन्त बल सुख पाया, तुम निजानन्द रस को पीते।।
जैसे प्रभु भव से पार हुए, वैसे मुझको भी पार करो।
हमको आलम्बन दे करके, प्रभु इस जग से उद्धार करो।
जो भाव सहित पूजा करते, वह पूजा का फल पाते हैं।।
पूजा के फल से भक्तों के, सारे संकट कट जाते हैं।
हम जन्म-जरा-मृत्यु के संकट से, घबड़ाकर चरणों आये हैं।
अब उभय रूप प्रभु मोक्ष महापद, पाने को शीश झुकाये हैं।।

(छन्द घत्तानन्द)

जय नेमि जिनेशं हितउपदेशं, शुद्ध बुद्ध चिद्रूपयति।
जय परमानन्दं आनन्दकंद, दयानिकंदं ब्रह्मपति।।

ॐ ह्रीं सर्व मंगल दायक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- नेमिनाथ के द्वार पर, पूरी होती आश।
मुक्ति हो संसार से, पूरा है विश्वास।।

इत्याशीर्वाद (पुष्पांजलि क्षिपेत्)

क्षायिक नव लब्धियों के अर्घ्य

दोहा- क्षायिक लब्धि प्राप्त कर, हुए प्रभु अरहन्त।
पुष्पाञ्जलि से पूजकर, करूँ कर्म का अन्त।।

मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(प्रथम वलय पर पुष्पाञ्जलि क्षेपण करें)

स्थापना

नेमिनाथ के श्री चरणों में, भव्य जीव आ पावे हैं।
तीर्थंकर जिन के दर्शन से, सर्व कर्म कट जावे हैं।।

गिरि गिरनार के ऊपर श्रीजिन, को हम शीष झुकाते हैं।
हृदय कमल के सिंहासन पर, आह्वानन कर तिष्ठाते हैं।।
राहु अरिष्ट ग्रह शांत करो प्रभु, हमने तुम्हें पुकारा है।
हमको प्रभु भव से पार करो, तुम बिन न कोई हमारा है।।

ॐ ह्रीं सर्व सर्वमंगलदायक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् इति आह्वानन्। अत्र-तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।।

अनन्त अनुबन्धी कषाएँ, कर्म दर्शन मोहनी।
सप्त प्रकृतियाँ विनाशे, कर्म वर्धक सोहनी।।
प्रकटकर सम्यक्त्व क्षायिक, कर रहे जीवन चमन।
अर्घ्य मैं करता समर्पित, कर्म हों मेरे शमन।।1।।

ॐ ह्रीं क्षायिक सम्यक्त्व लब्धि प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व...स्वाहा।

सप्त प्रकृति के अलावा, मोहनी की शेष सब।
नाश कीन्हे ध्यान तप से, कोई भी न रही अब।।
प्रकट कर चारित्र क्षायिक, कर रहे जीवन चमन।
अर्घ्य मैं करता समर्पित, कर्म हों मेरे शमन।।2।।

ॐ ह्रीं क्षायिक चारित्र लब्धि प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानावरणी कर्म नाशे, ज्ञान केवल पाए हैं।
अर्घ्य लेकर चरण में प्रभु, भाव से हम आए हैं।।
अनन्त चतुष्टय प्रभु पाए, चरण में उनके नमन्।
अर्घ्य मैं करता समर्पित, कर्म हों मेरे शमन।।3।।

ॐ ह्रीं क्षायिक ज्ञान लब्धि प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्श गुण पर आवरण को, नाश करते जिन प्रभो।
प्रकट करते ऽनन्त दर्शन, मोक्षगामी हो विभो।।

अनन्त चतुष्टय प्रभु पाए, चरण में उनके नमन्।
अर्घ्य मैं करता समर्पित, कर्म हों मेरे शमन।।4।।

ॐ ह्रीं क्षायिक दर्शन लब्धि प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाश करके कर्म बाधक, दान में जो भी रहा।
विघ्न करता है सदा ही, जैन आगम में कहा।।
दान क्षायिक प्राप्त करके, कर रहे जीवन चमन।
अर्घ्य मैं करता समर्पित, कर्म हों मेरे शमन।।5।।

ॐ ह्रीं क्षायिक दान लब्धि प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म बाधक लाभ में जो, नाश उसको कर दिए।
चाह न रखते कभी जो, लाभ पाने के लिए।।
लाभ क्षायिक प्राप्त करके, कर रहे जीवन चमन।
अर्घ्य मैं करता समर्पित, कर्म हों मेरे शमन।।6।।

ॐ ह्रीं क्षायिक लाभ लब्धि प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

योग में बाधक रहा, जो कर्म का करते शमन।
इन्द्रिय मन की विकलता, को किया जिसने दमन।।
भोग क्षायिक प्राप्त करके, कर रहे जीवन चमन।
अर्घ्य मैं करता समर्पित, कर्म हों मेरे शमन।।7।।

ॐ ह्रीं क्षायिक भोग लब्धि प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो सदा उपभोग करने, में विघन करता रहा।
वह कर्म घाती विघ्न कारक, जैन आगम में कहा।।
प्रकट कर उपभोग क्षायिक, कर रहे जीवन चमन।
अर्घ्य मैं करता समर्पित, कर्म हों मेरे शमन ।।8।।

ॐ ह्रीं क्षायिक उपभोग सम्यक्त्व लब्धि प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विघ्न सारे नाश करके, बल अनन्त प्रकटाए हैं।
सुर असुर चरणों में आके, भक्ति से सिर नाए हैं।।

अनन्त चतुष्टय प्रभु पाए, चरण में उनके नमन।
अर्घ्य मैं करता समर्पित, कर्म हों मेरे शमन।।9।।

ॐ ह्रीं क्षायिक वीर्य लब्धि प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **जिन साधु निर्ग्रन्थ हैं, रत्नत्रय के कोष।**
उनका गुण गाकर मिले, विशद आत्म सन्तोष।।10।।

ॐ ह्रीं क्षायिक नव लब्धि प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टादश दोष रहित जिन के अर्घ्य

दोहा– **दोष अठारह से रहित, होते हैं जिनदेव।**
पुष्पाञ्जलि से पूजकर, करूँ चरण की सेव।।

मण्डलस्योपरि– पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(द्वितीय वलय पर पुष्पाञ्जलि क्षेपण करें)

स्थापना

नेमिनाथ के श्री चरणों में, भव्य जीव आ पाते हैं।
तीर्थंकर जिन के दर्शन से, सर्व कर्म कट जाते हैं।।
गिरि गिरनार के ऊपर श्रीजिन, को हम शीष झुकाते हैं।
हृदय कमल के सिंहासन पर, आह्वानन कर तिष्ठाते हैं।।
राहु अरिष्ट ग्रह शांत करो प्रभु, हमने तुम्हें पुकारा है।
हमको प्रभु भव से पार करो, तुम बिन न कोई हमारा है।।

ॐ ह्रीं सर्व सर्वमंगलदायक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् इति आह्वानन्। अत्र-तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।।

(चाल छन्द)

जो कर्म घातिया नाशे, अरु केवलज्ञान प्रकाशे।
वो क्षुधा व्याधि को खोवे, न कवलाहारी होवे।।

हे जिनवर ! जग हितकारी, जन जन के करुणाकारी।
जो वीतरागता धारे, वे ही आराध्य हमारे।।1।।

ॐ ह्रीं क्षुधा दोष विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु घाती कर्म नशावें, अरु केवलज्ञान जगावें।
वह तृषा वेदना खोवें, वे व्याकुल कभी न होवें।।
हे जिनवर ! जग हितकारी, जन जन के करुणाकारी।
जो वीतरागता धारे, वे ही आराध्य हमारे।।2।।

ॐ ह्रीं तृषा दोष विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो भव बाधाएँ जीते, नित आत्म सरस को पीते।
प्रभु अन्तिम जन्म को पाए, उनके गुण हमने गाए।।
हे जिनवर ! जग हितकारी, जन जन के करुणाकारी।
जो वीतरागता धारे, वे ही आराध्य हमारे।।3।।

ॐ ह्रीं जन्म दोष विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु जरा रोग को नाशा, न रही कोई भी आशा।
उनकी हम महिमा गाते, चरणों में शीश झुकाते।।
हे जिनवर ! जग हितकारी, जन जन के करुणाकारी।
जो वीतरागता धारे, वे ही आराध्य हमारे।।4।।

ॐ ह्रीं जरा दोष विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन मोहक द्रव्य घनेरे, अध्रुव सब कोई न मेरे।
प्रभु विस्मय कभी न करते, न आह कभी भी भरते।।
हे जिनवर ! जग हितकारी, जन जन के करुणाकारी।
जो वीतरागता धारे, वे ही आराध्य हमारे।।5।।

ॐ ह्रीं विस्मय दोष विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

न शत्रु कोई हमारे, हम है इस जग से न्यारे।
यह जान अरति न करते, जन जन में समता धरते।।

हे जिनवर ! जग हितकारी, जन जन के करुणाकारी।
जो वीतरागता धारे, वे ही आराध्य हमारे ।।6 ।।

ॐ ह्रीं अरति दोष विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षण भंगुर है जग सारा, इसमें न कोई हमारा।
यह जान खेद न करते, समता में सदा विचरते।।
हे जिनवर ! जग हितकारी, जन जन के करुणाकारी।
जो वीतरागता धारे, वे ही आराध्य हमारे ।।7 ।।

ॐ ह्रीं खेद दोष विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन में कई दोष भरे हैं, चेतन तो पूर्ण परे हैं।
प्रभु रोग दोष के नाशी, हैं आतम ज्ञान प्रकाशी।।
हे जिनवर ! जग हितकारी, जन जन के करुणाकारी।
जो वीतरागता धारे, वे ही आराध्य हमारे ।।8 ।।

ॐ ह्रीं रोग दोष विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनको न वियोग सतावे, नित शांत भाव को पावें।
प्रभु शोक दोष के नाशी, हैं आतम ज्ञान प्रकाशी।।
हे जिनवर ! जग हितकारी, जन जन के करुणाकारी।
जो वीतरागता धारे, वे ही आराध्य हमारे ।।9 ।।

ॐ ह्रीं क्षुधा दोष विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानादि आठ महामद, जो नाश पाए उत्तम पद।
प्रभुम से हीन रहे हैं, उनके न दोष रहे हैं।।
हे जिनवर ! जग हितकारी, जन जन के करुणाकारी।
जो वीतरागता धारे, वे ही आराध्य हमारे 10 ।।

ॐ ह्रीं मद दोष विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है मोह महाबलशाली, जिसकी है कथा निराली।
प्रभु मोह महामद नाशी, हैं सम्यक्ज्ञान प्रकाशी।।
जिनवर हैं जग उपकारी, इस जग में मंगलकारी।
हम जिनवर के गुण गाते, अरु सादर शीश झुकाते ।।11 ।।

ॐ ह्रीं मोह दोष विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं सात महाभय भारी, जिससे है जीव दुखारी।
प्रभु ने भय सभी भगाए, अरु निर्भयता को पाए ।।
जिनवर हैं जग उपकारी, इस जग में मंगलकारी।
हम जिनवर के गुण गाते, अरु सादर शीश झुकाते ।।12 ।।

ॐ ह्रीं भय दोष विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूले निद्रा में प्राणी, यह कहती है जिनवाणी।
प्रभु हैं निद्रा से खाली, जो हैं अति–महिमाशाली।।
जिनवर हैं जग उपकारी, इस जग में मंगलकारी।
हम जिनवर के गुण गाते, अरु सादर शीश झुकाते ।।13 ।।

ॐ ह्रीं निद्रा दोष विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिन्ता तो चिता कही है, प्राणी को सता रही है।
प्रभु चिन्ता कभी न करते, औरों की चिंता हरते।।
जिनवर हैं जग उपकारी, इस जग में मंगलकारी।
हम जिनवर के गुण गाते, अरु सादर शीश झुकाते ।।14 ।।

ॐ ह्रीं चिन्ता दोष विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन परमौदारिक पाये, उससे न स्वेद बहाए।
प्रभु स्वेद दोष से खाली, जग में अति महिमाशाली ।।
जिनवर हैं जग उपकारी, इस जग में मंगलकारी।
हम जिनवर के गुण गाते, अरु सादर शीश झुकाते ।।15 ।।

ॐ ह्रीं स्वेद दोष विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु वीतरागता धारे, हैं जग में जग से न्यारे।
जो राग-दोष को छोड़े, जग जन से मुख भी मोड़े।।
जिनवर हैं जग उपकारी, इस जग में मंगलकारी।
हम जिनवर के गुण गाते, अरु सादर शीश झुकाते ।।16।।

ॐ ह्रीं राग-दोष विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो क्रोध कषाय के नाशी, प्रभु निज आतम के वासी।
प्रभु द्वोष भाव निवारे, सब कर्म शत्रु भी हारे।।
जिनवर हैं जग उपकारी, इस जग में मंगलकारी।
हम जिनवर के गुण गाते, अरु सादर शीश झुकाते ।।17।।

ॐ ह्रीं द्वेष दोष विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु दश प्राणों के नाशी, हैं अजर अमर अविनाशी।
जो मरण रोग परिहारे, प्रभु नाशें कर्म हैं सारे।।
जिनवर हैं जग उपकारी, इस जग में मंगलकारी।
हम जिनवर के गुण गाते, अरु सादर शीश झुकाते ।।18।।

ॐ ह्रीं मरण दोष विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **दोष अठारह रहित हैं, नेमिनाथ भगवान।**
पूजा करके भाव से, करते हैं गुणगान।।

ॐ ह्रीं अष्टादश दोष रहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौंतिस अतिशय के अर्घ्य

दोहा- **चौंतिस अतिशय प्राप्त कर, हुए धर्म के नाथ।**
विशद भाव से झुकाते, प्रभु चरणों में माथ।।

तृतिय बलयोपरि- पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्
(तीसरे वलय पर पुष्पाञ्जलि क्षेपण करें)

स्थापना

नेमिनाथ के श्री चरणों में, भव्य जीव आ पाते हैं।
तीर्थंकर जिन के दर्शन से, सर्व कर्म कट जाते हैं।।
गिरि गिरनार के ऊपर श्रीजिन, को हम शीष झुकाते हैं।
हृदय कमल के सिंहासन पर, आह्वानन कर तिष्ठाते हैं।।
राहु अरिष्ट ग्रह शांत करो प्रभु, हमने तुम्हें पुकारा है।
हमको प्रभु भव से पार करो, तुम बिन न कोई हमारा है।।

ॐ ह्रीं सर्व सर्वमंगलदायक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् इति आह्वानन्। अत्र-तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।।

जन्म के 10 अतिशय

तन रहित है स्वद से, अतिशय प्रभु प्रगटाए हैं।
देवेन्द्र आदि इन्द्र शत, चरणों में शीश झुकाए हैं।।
जन्म के अतिशय जिनेश्वर, स्वयं ही दस पाए हैं।
प्रभु चरणों में 'विशद' हम, भाव से सिरनाए हैं।।1।।

ॐ ह्रीं स्वेद रहित सहजातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मल रहित तन है प्रभु का, अमल अति सुखकार है।
अतिशय स्वयं होता प्रभु का, धर्म का आधार है।।
जन्म के अतिशय जिनेश्वर, स्वयं ही दस पाए हैं।
प्रभु चरणों में 'विशद' हम, भाव से सिरनाए हैं।।2।।

ॐ ह्रीं मल रहित सहजातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समचतुस्र संस्थान प्रभु जी, जन्म से पाते महा।
नहीं घट बढ़ अंग कोई, प्रभु का अतिशय रहा।।

जन्म के अतिशय जिनेश्वर, स्वयं ही दस पाए हैं।
प्रभु चरणों में 'विशद' हम, भाव से सिरनाए हैं।।3।।

ॐ ह्रीं समचतुस्त्र संस्थान सहजातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वज्र वृषभ नाराच संहनन, जन्म से उपाजाए हैं।
हड्डियों का जोड़ अतिशय, श्रेष्ठ प्रभु प्रगटाए हैं।।
जन्म के अतिशय जिनेश्वर, स्वयं ही दस पाए हैं।
प्रभु चरणों में 'विशद' हम, भाव से सिरनाए हैं।।4।।

ॐ ह्रीं ब्रज वृषभ नाराच संहनन सहजातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन सुगन्धित और सुरभित, प्रभुजी शुभ पाए हैं।
सुर असुर चरणों में आकर, गीत मंगल गाए हैं।।
जन्म के अतिशय जिनेश्वर, स्वयं ही दस पाए हैं।
प्रभु चरणों में 'विशद' हम, भाव से सिरनाए हैं।।5।।

ॐ ह्रीं सुगन्धित तन सहजातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रूप अतिशय महा मनहर, प्राप्त कर सुख पाए हैं।
कामदेव अरु चक्रवर्ति, देखकर शरमाए हैं।।
जन्म के अतिशय जिनेश्वर, स्वयं ही दस पाए हैं।
प्रभु चरणों में 'विशद' हम, भाव से सिरनाए हैं।।6।।

ॐ ह्रीं अतिशय रूप सहजातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन में सहस्र इक आठ लक्षण, प्रभु जी प्रगटाए हैं।
सहस्त्राष्ट प्रभु नामधारी, लोक में कहलाए हैं।।
जन्म के अतिशय जिनेश्वर स्वयं ही दस पाए हैं।
प्रभु चरणों में 'विशद' हम, भाव से सिरनाए हैं।।7।।

ॐ ह्रीं सहस्र अष्ट लक्षण सहजातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रक्त तन का श्वेत सुन्दर, प्रभुजी शुभ पाए हैं।
महत महिमा वात्सल्य की, प्रभुजी प्रगटाए हैं।।
जन्म के अतिशय जिनेश्वर स्वयं ही दस पाए हैं।
प्रभु चरणों में 'विशद' हम, भाव से सिरनाए हैं।।8।।

ॐ ह्रीं स्वेत रुधिर सहजातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रिय हित-मित वचन प्रभु के, जगत में सुखकार हैं।
धर्म के आधार हैं शुभ, जगत मंगलकार हैं।।
जन्म के अतिशय जिनेश्वर स्वयं ही दस पाए हैं।
प्रभु चरणों में 'विशद' हम, भाव से सिरनाए हैं।।9।।

ॐ ह्रीं हित मित प्रिय बचन सहजातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बल अनंतानंत पाए, नहीं कोई पार है।
पुण्य का फल सुयश जग में, रहा अपरंपार है।।
जन्म के अतिशय जिनेश्वर स्वयं ही दस पाए हैं।
प्रभु चरणों में 'विशद' हम, भाव से सिरनाए हैं।।10।।

ॐ ह्रीं अनन्त बल सहजातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञान के 10 अतिशय

शतक योजन दूर तक, प्रभु का जहाँ आसन रहा।
हो नहीं दुर्भिक्षता शुभ, क्षेत्र अति निर्मल कहा।।
ज्ञान केवल प्रकट होते, स्वयं दश अतिशय जगें।
दर्श करके भव्य प्राणी, मोक्ष मारग में लगें।।11।।

ॐ ह्रीं योजन शत् चतुष्टय सुभिक्षत्व घातिक्षयजातिशय धारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गगन में ही गमन होता, विशद यह अतिशय रहा।
पूर्व के शुभ पुण्य का फल, जैन आगम में कहा।।
ज्ञान केवल प्रकट होते, स्वयं दश अतिशय जगें।
दर्श करके भव्य प्राणी, मोक्ष मारग में लगें।।12।।

ॐ ह्रीं आकाश गमन घातिक्षयजातिशय धारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो नहीं उपसर्ग कोई, ज्ञान केवल होय तब।
सुर पशु नर अरु अचेतन, नाश होवे आप सब।।
ज्ञान केवल प्रकट होते, स्वयं दश अतिशय जगें।
दर्श करके भव्य प्राणी, मोक्ष मारग में लगें।।13।।

ॐ ह्रीं उपसर्गाभाव घातिक्षयजातिशय धारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो नहीं अदया वहां पर, प्रभू का आसन जहाँ।
धर्म का शुभ फल परस्पर, मित्रता होवे वहाँ।।
ज्ञान केवल प्रकट होते, स्वयं दश अतिशय जगें।
दर्श करके भव्य प्राणी, मोक्ष मारग में लगें।।14।।

ॐ ह्रीं उदयाभाव घातिक्षयजातिशय धारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा से पीड़ित दिखाई, दे रहा संसार है।
नाश की है क्षुधा पीड़ा, नहीं कवलाहार है।।
ज्ञान केवल प्रकट होते, स्वयं दश अतिशय जगें।
दर्श करके भव्य प्राणी, मोक्ष मारग में लगें।।15।।

ॐ ह्रीं कवलाहार घातिक्षयजातिशय धारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शोभते हैं जिन प्रभु जी, समवशरण के बीच में।
दे रहे दर्शन चतुर्दिक, रहें न भव कीच में।।

ज्ञान केवल प्रकट होते, स्वयं दश अतिशय जगें।
दर्श करके भव्य प्राणी, मोक्ष मारग में लगें।।16।।

ॐ ह्रीं चतुर्मुख घातिक्षयजातिशय धारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सकल विद्या के अधीपति, प्रभुजी ईश्वर कहे।
कर्म के नाशक प्रकाशक, प्रभू परमेश्वर रहे।।
ज्ञान केवल प्रकट होते, स्वयं दश अतिशय जगें।
दर्श करके भव्य प्राणी, मोक्ष मारग में लगें।।17।।

ॐ ह्रीं सर्व विद्येश्वरत्व घातिक्षयजातिशय धारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहीं छाया पड़े तन की, परमौदारिक तन रहा।
रहा विस्मय एक यह भी, ज्ञान का अतिशय कहा।।
ज्ञान केवल प्रकट होते, स्वयं दश अतिशय जगें।
दर्श करके भव्य प्राणी, मोक्ष मारग में लगें।।18।।

ॐ ह्रीं छायारहित घातिक्षयजातिशय धारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केश अरु नख नहीं बढ़ते, ज्ञान की महिमा कही।
रहें ज्यों के त्यों सदा ही, धर्म की गरिमा रही।।
ज्ञान केवल प्रकट होते, स्वयं दश अतिशय जगें।
दर्श करके भव्य प्राणी, मोक्ष मारग में लगें।।19।।

ॐ ह्रीं समान नख केशत्व घातिक्षयजातिशय धारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

14 देवकृत अतिशय

रही भाषा अर्द्धमागध, सभी को सुखकार है।
वाणी है ऊँकारमय शुभ, धर्म की आधार है।।

देवकृत अतिशय हैं चौदह, महिमा प्रभु की गा रहे।
भाव से चरणों प्रभु के, शीष विशद झुका रहे।।21।।

ॐ ह्रीं सर्वार्धमागधी भाषा देवोपनीतातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगत के सब प्राणियों में, भाव मैत्री के जगे।
धर्म के दीपक जहाँ में, आप ही शुभ जग-मगे।।
देवकृत अतिशय हैं चौदह, महिमा प्रभु की गा रहे।
भाव से चरणों प्रभु के, शीष विशद झुका रहे।।22।।

ॐ ह्रीं सर्व मैत्री भाव देवोपनीतातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षट् ऋतु के फूल फल शुभ, स्वयं ही खिलते वहाँ।
विशद ज्ञानी जिनवरों का, आगमन होवे जहाँ।।
देवकृत अतिशय हैं चौदह, महिमा प्रभु की गा रहे।
भाव से चरणों प्रभु के, शीष विशद झुका रहे।।23।।

ॐ ह्रीं सर्वर्तुफलादि देवोपनीतातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूमि दर्पण वत् चमकती, पद पड़े प्रभु के जहाँ।
विशद ज्ञानी जिनवरों का, गमन होता है वहाँ।।
देवकृत अतिशय हैं चौदह, महिमा प्रभु की गा रहे।
भाव से चरणों प्रभु के, शीष विशद झुका रहे।।24।।

ॐ ह्रीं आदर्शतल प्रतिमा रत्नमही देवोपनीतातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पवन सुरभित शुभ सुगन्धित, वहे अति मन मोहनी।
भव्य जीवों की सुभाषित, रहे अति शुभ सोहनी।।

देवकृत अतिशय हैं चौदह, महिमा प्रभु की गा रहे।
भाव से चरणों प्रभु के, शीष विशद झुका रहे।।25।।

ॐ ह्रीं सुगन्धित विरहण मनुगत वायुत्व देवोपनीतातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगत में आनन्द कारण, है प्रभु का आगमन।
भव्य प्राणी भाव से, करते चरण शत्-शत् नमन।।
देवकृत अतिशय हैं चौदह, महिमा प्रभु की गा रहे।
भाव से चरणों प्रभु के, शीष विशद झुका रहे।।26।।

ॐ ह्रीं सर्वानंदकारक देवोपनीतातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूमि कंटक रहित हो शुभ, जहाँ प्रभु करते गमन।
भव्यप्राणी भाव से, करते चरण शत्-शत् नमन।।
देवकृत अतिशय हैं चौदह, महिमा प्रभु की गा रहे।
भाव से चरणों प्रभु के, शीष विशद झुका रहे।।27।।

ॐ ह्रीं वायुकुमारोपशमित धूलि कंटकादि देवोपनीतातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नभ में जय जयकार होता, जीव सुखमय हों सभी।
धर्म की शुभ भावना से, दुःखमय न हों कभी।।
देवकृत अतिशय हैं चौदह, महिमा प्रभु की गा रहे।
भाव से चरणों प्रभु के, शीष विशद झुका रहे।।28।।

ॐ ह्रीं आकाशे जय-जयकार देवोपनीतातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गंधोदक की वृष्टि करते, देव मिलकर के सभी।
झूमकर के नृत्य करते, भाव से सुर नर सभी।।

देवकृत अतिशय हैं चौदह, महिमा प्रभु की गा रहे।
भाव से चरणों प्रभु के, शीष विशद झुका रहे।।29।।

ॐ ह्रीं मेघकुमारकृतगंधोदक वृष्टि देवोपनीतातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के पद तल कमल की, देवगण रचना करें।
हों जगत जन सुखी सारे, और की बाधा हरें।।
देवकृत अतिशय हैं चौदह, महिमा प्रभु की गा रहे।
भाव से चरणों प्रभु के, शीष विशद झुका रहे।।30।।

ॐ ह्रीं चरण कमल तल रचित स्वर्ण कमल देवोपनीतातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गगन शुभ हो जाए निर्मल, जहाँ प्रभु का हो गमन।
सब दिशाओं को स्वयं ही, देव कर देते चमन।।
देवकृत अतिशय हैं चौदह, महिमा प्रभु की गा रहे।
भाव से चरणों प्रभु के, शीष विशद झुका रहे।।31।।

ॐ ह्रीं शरदकालवन्निर्मल गगन देवोपनीतातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब दिशाएँ धूम से हों, रहित निर्मल अति विमल।
आगमन हो जहाँ प्रभु का, जगत् हो जाए अमल।।
देवकृत अतिशय हैं चौदह, महिमा प्रभु की गा रहे।
भाव से चरणों प्रभु के, शीष विशद झुका रहे।।32।।

ॐ ह्रीं सर्वानंद कारक देवोपनीतातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मचक्र चलता है आगे, प्रभु का जब हो गमन।
भव्य जन भक्ति से आकर, करें चरणों में नमन।।

देवकृत अतिशय हैं चौदह, महिमा प्रभु की गा रहे।
भाव से चरणों प्रभु के, शीष विशद झुका रहे।।33।।

ॐ ह्रीं अग्रे धर्मचक्र देवोपनीतातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट मंगल द्रव्य लेकर, देव भक्ति भाव से।
कर रहे अर्चा प्रभु की, मिल सभी सुर चाव से।।
देवकृत अतिशय हैं चौदह, महिमा प्रभु की गा रहे।
भाव से चरणों प्रभु के, शीष विशद झुका रहे।।34।।

ॐ ह्रीं अष्टमंगलद्रव्य देवोपनीतातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाह्य लक्ष्मी प्राप्त कर प्रभु, समवशरण विराजते।
रत्नकई निधियाँ जो पाके, अधर में ही राजते।।
लोकवर्ती इन्द्र सब, भक्ति में आकर झूमते।
भाव से पूजा करें अरु, चरण रज को चूमते।।35।।

ॐ ह्रीं बाह्य लक्ष्मी समवशरणादि विभूति प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंत चतुष्टय आदि लक्ष्मी, पाए अन्तर की निधि।
भव्य गुण पाए अनेकों, प्रभु पाए सन्निधि।।
लोकवर्ती इन्द्र सब, भक्ति में आकर झूमते।
भाव से पूजा करें अरु, चरण रज को चूमते।।36।।

ॐ ह्रीं अभ्यंतर लक्ष्मी अनंत चतुष्टयादि विभूति प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **चौंतिस अतिशय प्राप्त कर, उभयलक्ष्मी पाय।**
समवशरण में राजते, तीर्थंकर जिनराय।।

ॐ ह्रीं चौंतिस अतिशय उभय लक्ष्मी प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चौसठ ऋद्धि के अर्घ्य

दोहा– **चौसठ ऋद्धि के शुभम, प्रातिहार्य के अर्घ्य।**
चढ़ा रहे हम भाव से, पाने सुपद अनर्घ।।

मण्डलस्योपरि– पुष्पाञ्जलि क्षिपेत

(चौथे वलय पर पुष्पाञ्जलि क्षेपण करें)

स्थापना

नेमिनाथ के श्री चरणों में भव्य जीव आ पाते हैं।
तीर्थंकर जिन के दर्शन से सर्व कर्म कट जाते हैं।।
गिरि गिरनार के ऊपर श्रीजिन, को हम शीष झुकाते हैं।
हृदय कमल के सिंहासन पर, आह्वानन कर तिष्ठाते हैं।।
राहु अरिष्ट ग्रह शांत करो प्रभु, हमने तुम्हें पुकारा है।
हमको प्रभु भव से पार करो, तुम बिन न कोई हमारा है।।

ॐ ह्रीं सर्व सर्वमंगलदायक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् इति आह्वानन्। अत्र–तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।।

(ताटंक छंद)

द्वादश तप जो तपते मुनिवर, ऋद्धि पाते कई प्रकार।
अवधि ज्ञान षट् भेद युक्त शुभ, जिनका गुण प्रत्यय आधार।।
देशावधि परमा सर्वावधि, रूपी द्रव्य दिखाते हैं।
संयम तप अरु त्याग द्वारा मुनिवर, यह ऋद्धि पाते है।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अवधि बुद्धि ऋद्धी धारक, सर्व ऋषिश्वर पूजित, नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कैसा चिंतन करे कोई भी, मनःपर्यय से होवे ज्ञान।
ऋजु–मति अरु विपुलमति द्वय, भेद रूप जग में विख्यात।।
अवधि ज्ञान से सूक्ष्म विषय भी, मनःपर्यय हमें दिखाते है।
संयम तप त्याग द्वारा मुनिवर, यह ऋद्धि पाते है।।2।।

ॐ ह्रीं श्री मनःपर्यय बुद्धि ऋद्धी धारक, सर्व ऋषिश्वर पूजित, नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चऊ कर्म घातिया क्षय होते, शुभ केवलज्ञान प्रकट होता।
दर्पण वह लोकालोक दिखे, सर्व कर्म कालिमा को खोता।।
ऋद्धि शुभ केवलज्ञान जगे, तब अर्हत पद को पाते है।
संयम तप त्याग द्वारा मुनिवर, यह ऋद्धि पाते है।।3।।

ॐ ह्रीं श्री केवल बुद्धि ऋद्धी धारक, सर्व ऋषिश्वर पूजित, नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ शब्द श्रृंखला के द्वारा, जब एक शब्द का ज्ञान किए।
हो प्रतिभाषित सारा आगम, जागे तब श्रुत सम्पूर्ण हिये।।
है कल्पवृक्ष सम बुद्धि बीज, पाने का भाव बनाते है।।
संयम तप त्याग द्वारा मुनिवर, यह ऋद्धि पाते है।।4।।

ॐ ह्रीं श्री बीज बुद्धि ऋद्धी धारक, सर्व ऋषिश्वर पूजित, नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्यों धान्य भरे कोठे में कई, फिर भी वह भिन्न भिन्न रहते।
मिश्रण बिन बुद्धि से आगम वह पृथक–पृथक ही कहते।।
उन कोष्ठ बुद्धि ऋद्धि धारि मुनिवर को शीष झुकाते है।
संयम तप त्याग द्वारा मुनिवर, यह ऋद्धि पाते है।।5।।

ॐ ह्रीं श्री कोष्ठ बुद्धि ऋद्धी धारक, सर्व ऋषिश्वर पूजित, नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन ग्रन्थों में है अनेक, मुनि मात्र एक पद का ज्ञान करें।
सम्पूर्ण ग्रन्थ का सार प्राप्त, करके जग का अज्ञान हरें।।
है श्रेष्ठ ऋद्धि पादानुसारिणी, जिनवर महिमा बतलाते है।
संयम तप त्याग द्वारा मुनिवर, यह ऋद्धि पाते है।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पादानुसारिणी ऋद्धी धारक, सर्व ऋषिश्वर पूजित, नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह श्रवण का विस्मय है विशेष, समझे नर पशु की भाषा को।
वह नौ योजवन की जान रहे, त्यागे सब मन की आशा को।।

जो अक्षर और अनक्षर मय, द्वय भाषा में समझाते है।
संयम तप त्याग द्वारा मुनिवर, यह ऋद्धि पाते है।।7।।

ॐ ह्रीं श्री संभिन्न-श्रोतृ ऋद्धी धारक, सर्व ऋषिश्वर पूजित, नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रसना इन्द्रिय की दीवानी, दिखती यह सारि जगती है।
गुरु निरस व्रत उपवास करे, शायद उन्हें भूख न लगती है।।
नौ योजन दूर की वस्तु का, गुरु रसस्वाद पा जाते है।
संयम तप त्याग द्वारा मुनिवर, यह ऋद्धि पाते है।।8।।

ॐ ह्रीं श्री दूरास्वादन ऋद्धी धारक, सर्व ऋषिश्वर पूजित, नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है विषय अष्ट स्पर्शन के, जग के प्राणी सब पाते हैं।
जो अशुभ और शुभ रूप रहे, छूने से ज्ञान कराते हैं।।
नौ योजन दूर की वस्तु का, स्पर्श गुरु पा जाते हैं।
संयम तप त्याग द्वारा मुनिवर, यह ऋद्धि पाते है।।9।।

ॐ ह्रीं श्री दूरस्पर्शन बुद्धि ऋद्धी धारक, सर्व ऋषिश्वर पूजित, नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुर्गन्ध और सुगन्ध घ्राण के द्वय, प्रभु ने यह विषय बताए है।
जग के प्राणी उनको पाकर, दुःख सुख पाकर अकुलाए है।।
नव योजन दूर कि वस्तु का, गुरु गंध ज्ञान पा जाते है।
संयम तप त्याग द्वारा मुनिवर, यह ऋद्धि पाते है।।10।।

ॐ ह्रीं श्री दूरगन्ध ऋद्धी धारक, सर्व ऋषिश्वर पूजित, नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतापन आदि तप करने, मुनिवर गिरि ऊपर जाते है।
फिर आतम रस में लीन हुए, अरु आत्म सरस रस पाते है।।
उत्कृष्ट विषय कर्णेन्द्रिय का, उसकी शक्ति उपजाते है।
संयम तप त्याग द्वारा मुनिवर, यह ऋद्धि पाते है।।11।।

ॐ ह्रीं श्री दूर श्रवण ऋद्धी धारक, सर्व ऋषिश्वर पूजित, नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेत्रेन्द्रिय का उत्कृष्ट विषय, तप करके जो प्रकटाते है।
नेत्रों की शक्ति से ज्यादा, वह आतम शक्ति बढ़ाते है।।
यह श्रेष्ठ ऋद्धियाँ पाकर भी मुनि, हर्ष खेद न पाते है।
संयम तप त्याग द्वारा मुनिवर, यह ऋद्धि पाते है।।12।।

ॐ ह्रीं श्री दूरावलोकन ऋद्धी धारक, सर्व ऋषिश्वर पूजित, नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अविराम ज्ञान उपयोग करें, विश्राम कभी न करते है।
प्रज्ञा को स्वयं विकसित कर, अज्ञान तिमिर को हरते हैं।।
होते महान प्रज्ञा धारी, गुरु प्रज्ञा श्रमण कहाते है।
संयम तप त्याग द्वारा मुनिवर, यह ऋद्धि पाते है।।13।।

ॐ ह्रीं श्री प्रज्ञाश्रमण ऋद्धी धारक, सर्व ऋषिश्वर पूजित, नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुत ज्ञान का विषय अनन्तक है, जो लोकालोक दिखाता है।
अष्टांग निमित्तक है महान, शुभ अशुभ का ज्ञान कराता है।।
स्वर-अंग भौम व्यंजन आदि, इनसे पहिचाने जाते है।
संयम तप त्याग द्वारा मुनिवर, यह ऋद्धि पाते है।।14।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टांग निमित्त बुद्धि ऋद्धी धारक, सर्व ऋषिश्वर पूजित, नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोई कितना ज्ञानी आ जाए, पर उनसे जीत न पाता है।
है वाद-विवाद कुशल मुनिवर, उनके आगे झुक जाता है।।
जिन धर्म दिवाकर वे मुनिवर, जिन धर्म ध्वजा फहराते हैं।
संयम तप त्याग द्वारा मुनिवर, यह ऋद्धि पाते है।।15।।

ॐ ह्रीं श्री वादित्य बुद्धि ऋद्धी धारक, सर्व ऋषिश्वर पूजित, नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो चिंतन ध्यान मनन करते, नित स्वाध्याय में लीन रहे।
वह ग्यारह अंग पूर्व चौदह के ज्ञान में सदा प्रवीण रहे।।

हम द्वादशांग का ज्ञान करें, यह विशद भावना भाते है।
संयम तप त्याग द्वारा मुनिवर, यह ऋद्धि पाते है।।16।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्दश पूर्व ऋद्धी धारक, सर्व ऋषिश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशम पूर्व पूरा होते ही, महा विद्याये आ जावें।
कार्य हेतु वह आज्ञा मांगे, मुनि के मन वह न भावें।।
श्रुत का चिंतन करते करते, श्रुत केवलि बन जाते है।
संयम तप त्याग द्वारा मुनिवर, यह ऋद्धि पाते है।।17।।

ॐ ह्रीं श्री दशम पूर्व ऋद्धी धारक, सर्व ऋषिश्वर पूजित, नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन अरु चेतन का भेद जानकर, लखते है आतम का रुप।
जानें ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय को, निज आतम का सत्य स्वरूप।।
प्रत्येक बुद्धि ऋद्धि के धारि भेद विज्ञान जगाते हैं।
संयम तप त्याग द्वारा मुनिवर, यह ऋद्धि पाते है।।18।।

ॐ ह्रीं श्री प्रत्येक बुद्धि ऋद्धी धारक, सर्व ऋषिश्वर पूजित, नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तपधारी मुनिवर के आगे, ऋद्धि शीष झुकाती है।
लेते जहां आहार मुनिश्वर जनता सब जिम जाती है।।
अक्षिण संवास ऋद्धि धारी मुनिवर अतिशय कारी है।
पूजा करते भक्ति भाव से, चरणों ढोक हमारी है।।19।।

ॐ ह्रीं श्री अक्षीण संवास ऋद्धी धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

थोड़ी सी भूमि पर बैठें, जीव अनेकों कष्ट विहीन।
दर्श करें मुनिवर के आकर, भक्ति में होकर लवलीन।।
अक्षीण महानस ऋद्धि धारी, मुनिवर अतिशय कारी हैं।
पूजा करते भक्ति भाव से, चरणों ढोक हमारी हैं।।20।।

ॐ ह्रीं श्री अक्षीण महानस ऋद्धी धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौबोला छन्द)

नभ चारण ऋद्धि धारी मुनि, नभ में पग–पग गमन करें।
सौ यौजन तक दूर क्षेत्र की, सभी आपदाशमन करें।।
नभ चारण ऋद्धिधर मुनि की, पूजा करते भाव विभोर।
सुखमय होवे जीव सभी, अरु मंगल होवे चारों ओर।।21।।

ॐ ह्रीं श्री नभ चारण ऋद्धी धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चारण ऋद्धि धारी मुनि, जल के ऊपर गमन करें।
जल जन्तु न मरे कोई भी, उनकी बाधा शमन करें।।
जल चारण ऋद्धिधर मुनि की, पूजा करते भाव विभोर।
सुखमय होवे जीव सभी, अरु मंगल होवे चारों ओर।।22।।

ॐ ह्रीं श्री जल चारण ऋद्धी धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नभ में चलते हुए मुनि के, घुटने मुड़ते नहीं कभी।
चऊ अंगुल पृथ्वी से ऊपर, धर्म भाव युत रहें सभी।।
जंघा चारण ऋद्धिधर मुनि की, पूजा करते भाव विभोर।
सुखमय होवे जीव सभी, अरु मंगल होवे चारों ओर।।23।।

ॐ ह्रीं श्री जंघा चारण ऋद्धी धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प फलों पत्रों पर चलते, उनके जीव न दुःख पाते।
चारण ऋद्धि धारी मुनिवर, आगे बढ़ते ही जाते।।
पुष्प पत्र चारण ऋद्धिधर मुनि की, पूजा करते भाव विभोर।
सुखमय होवे जीव सभी, अरु मंगल होवे चारों ओर।।24।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्प पत्र चारण ऋद्धी धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि चारण ऋद्धिधर मुनि, अग्नि के ऊपर चलते।
अग्नि जीव को कष्ट न होता, मुनि के पैर नहीं जलते।।

अग्नि चारण ऋद्धिधर की, पूजा करते भाव विभोर।
सुखमय होवे जीव सभी अरु, मंगल होवे चारों ओर।।25।।

ॐ ह्रीं श्री अग्नि चारण ऋद्धी धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेघों के ऊपर चलते पर, कोई जीव न मरते हैं।
शुभ मेघ चारिणी ऋद्धिधर से, जीव खेद न करते हैं।।
मेघ चारिणी ऋद्धिधर की, पूजा करते भाव विभोर।
सुखमय होवे जीव सभी, अरु मंगल होवे चारों ओर।।26।।

ॐ ह्रीं श्री मेघ चारण ऋद्धी धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोमल तन्तु के ऊपर मुनि, निर्भय चलते जाते हैं।
फिर भी तन्तु नहीं टूटता, उनको सब सिर नाते हैं।।
तन्तु चारण ऋद्धिधर की, पूजा करते भाव विभोर।
सुखमय होवे जीव सभी, अरु मंगल होवे चारों ओर।।27।।

ॐ ह्रीं श्री तन्तु चारण ऋद्धी धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रवि चन्द्र नक्षत्रों द्वारा, ज्योर्तिमय है सारा लोक।
काल देखकर गमन करें शुभ, जिनके चरणों देता ढोक।।
ज्योतिष चारण ऋद्धिधर की, पूजा करते भाव विभोर।
सुखमय होवे जीव सभी, अरु मंगल होवे चारों ओर।।28।।

ॐ ह्रीं श्री ज्योतिष चारण ऋद्धी धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गमन करें वायु पंक्ति में, चलते हैं जो गगन मंझार।
ज्ञान ध्यान में लीन रहें नित, महिमा जिनकी अपरम्पार।।
वायु चारण ऋद्धिधर की, पूजा करते भाव विभोर।
सुखमय होवे जीव सभी, अरु मंगल होवे चारों ओर।।29।।

ॐ ह्रीं श्री वायु चारण ऋद्धी धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अणु बराबर छेद में, घुस जावें मुनिराज।
अणिमा ऋद्धी धारते, तारण तरण जहाज।।30।।

ॐ ह्रीं श्री अणिमा ऋद्धी धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो सुमेरु सम देह को, बढ़ा लेते मुनिराज।
महिमा ऋद्धी धारते, तारण तरण जहाज।।31।।

ॐ ह्रीं श्री महिमा ऋद्धी धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्क तूल सम लघू हों, तप बल से मुनिराज।
लघिमा ऋद्धी धारते, तारण तरण जहाज।।32।।

ॐ ह्रीं श्री लघिमा ऋद्धी धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भारी होवे लोह सम, जिनका तन तत्काल।
गरिमा ऋद्धी धारते, मुनिवर दीन दयाल।।33।।

ॐ ह्रीं श्री गरिमा ऋद्धी धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूमि पर रहते खड़े, छूवें सूरज चंद।
प्राप्ति ऋद्धी के धनी, मुनि रहें निर्द्वन्द।।34।।

ॐ ह्रीं श्री प्राप्ति ऋद्धी धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जल में मुनि यों पग धरें, ज्यों थल में चल जाएँ।
ऋद्धीधर प्राकाम्य के, ऐसी महिमा पाए।।35।।

ॐ ह्रीं श्री प्राकाम्य ऋद्धी धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग की प्रभुता प्राप्त कर, बनते ईश समान।
ऋद्धीधर ईशत्व के, जग में सर्व महान।।36।।

ॐ ह्रीं श्री ईशत्व ऋद्धी धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दृष्टि पड़ते मुनी की, वश में हों सब लोग।
महिमा होती यह सदा, वशित्व ऋद्धि के योग।।37।।

ॐ ह्रीं श्री वशित्व ऋद्धी धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घुसे छेद बिन शैल में, बाधा कोई न होय।
अप्रतिघाति ऋद्धिधर, सम न जग में कोय।।38।।

ॐ ह्रीं श्री अप्रतिघाति ऋद्धी धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिखते दिखते लोप हों, न हो मुनि का भान।
ऋद्धि तप से प्रकट हो, मुनि के अन्तर्धान।।39।।

ॐ ह्रीं श्री अन्तर्धान ऋद्धी धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इच्छित फल पाते मुनी, इच्छित रूप बनाय।
काम रूपिणी ऋद्धिधर, जग में पूजे जाँय।।40।।

ॐ ह्रीं श्री काम रूपिणी ऋद्धी धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप में लीन रहे तपती नित, उग्र उग्र तप तपते रोज।
दीक्षा दिन से मरण काल तक, कर उपवास बढ़े शुभ ओज।।
कर्म शत्रु तप के द्वारा ही, भाई हो पाते निर्जीण।
पूजनीय वह धन्य मुनीश्वर, जिनने कर्म किये हैं क्षीण।।41।।

ॐ ह्रीं श्री उग्र तपोतिशय ऋद्धी धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनशन आदि तप करने से, क्षीण होय मुनिवर कि देह।
दीप्ति तपो ऋद्धि से तन की, दीप्ति बढ़े तव नि:सन्देह।।
कर्म शत्रु तप के द्वारा ही, भाई हो पाते निर्जीण।
पूजनीय वह धन्य मुनीश्वर, जिनने कर्म किये हैं क्षीण।।42।।

ॐ ह्रीं श्री दीप्त तपोतिशय ऋद्धी धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप से तप ऋद्धि की वृद्धि, करते हैं करते आहार।
तन मन बल बढ़ता है लेकिन, मल धातु न होय निहार।।
कर्म शत्रु तप के द्वारा ही, भाई हो पाते निर्जीण।
पूजनीय वह धन्य मुनीश्वर, जिनने कर्म किये हैं क्षीण।।43।।

ॐ ह्रीं श्री तप्त तपोतिशय ऋद्धी धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिंह निष्क्रीडन आदि व्रत धर, व्रत पाले जो कई प्रकार।
त्याग करें उत्तम से उत्तम, महा तपों अतिशय को धार।।
कर्म शत्रु तप के द्वारा ही, भाई हो पाते निर्जीण।
पूजनीय वह धन्य मुनीश्वर, जिनने कर्म किये हैं क्षीण।।44।।

ॐ ह्रीं श्री महातपोतिशय ऋद्धी धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादश तप तपते हैं मुनिवर, आतापन आदि धर योग।
घोर तपो अतिशय ऋद्धिधर, हो उपसर्ग तथा कोई रोग।।
कर्म शत्रु तप के द्वारा ही, भाई हो पाते निर्जीण।
पूजनीय वह धन्य मुनीश्वर, जिनने कर्म किये हैं क्षीण।।45।।

ॐ ह्रीं श्री घोर तपोतिशय ऋद्धी धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोक जयी सागर शोषण की, शक्ति पावे कई प्रकार।
घोर पराक्रम ऋद्धि धारी, पाते तप विध के आधार।।
कर्म शत्रु तप के द्वारा ही, भाई हो पाते निर्जीण।
पूजनीय वह धन्य मुनीश्वर, जिनने कर्म किये हैं क्षीण।।46।।

ॐ ह्रीं श्री घोर पराक्रम तपोतिशय ऋद्धी धारक सहित सर्व ऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच महाव्रत तिय गुप्ति धर, ब्रह्मचर्य व्रत से भरपूर।
अधोर ब्रह्मचर्य ऋद्धी धार से, कलह आदि भागें सब दूर।।

कर्म शत्रु तप के द्वारा ही, भाई हो पाते निर्जीण।
पूजनीय वह धन्य मुनीश्वर, जिनने कर्म किये हैं क्षीण।।47।।

ॐ ह्रीं श्री अघोर ब्रह्मचर्य तपोतिशय ऋद्धी धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(त्रिभंगी छंद)

मन बल की ऋद्धि, रही प्रसिद्धी, श्रुत का चिन्तन होय विशेष।
चिन्तन की शक्ति प्रभु की भक्ति, से मुहूर्त में होय अशेष।।
संयम से पावे ध्यान लगावे, आतम की शुद्धि पावे।
ऋद्धि हम पावे ज्ञान जगावे, मुनिवर के शुभ गुण गावे।।48।।

ॐ ह्रीं श्री मनोबल ऋद्धी धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचनों की शक्ति प्रभु की भक्ति, करते श्रुत का उच्चारण।
हो वचन अनोखे जग में चोखे, ऋद्धि सिद्धि का हो कारण।।
मुनिवर की वाणी जग कल्याणी, कर्ण सुने तृप्ति पावे।
ऋद्धि हम पावे ज्ञान जगावे, मुनिवर के शुभ गुण गावे।।49।।

ॐ ह्रीं श्री वचनबल ऋद्धी धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

खड्गासन ठाड़े गर्मी-जाडे, कष्ठ नहीं कोई पावे।
तप की यह शक्ति देवे मुक्ति, अतिशय ऋद्धि दिखलावे।।
है ऋद्धि पावन जन मन भावन, मुनिवर ही इसको पावे।
ऋद्धि हम पावें ज्ञान जगावे, मुनिवर के शुभ गुण गावे।।50।।

ॐ ह्रीं श्री कायबल ऋद्धी धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल छन्द)

मुनि तप की अग्नि जलावें, फिर सारे कर्म नशावें।
आमर्षोषधि ऋद्धि धारी, हैं सारे रोग निवारी।।

हम पूजा करने आये, चरणों में शीष झुकावे।
सब रोग शोक मिट जावे, आशीष आपका पावे।।51।।

ॐ ह्रीं श्री आर्मोषधि ऋद्धी धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कफ लार थूक आ जावे, जो सारे रोग नशावे।
क्ष्वेलौषधि ऋद्धिधारी है, सारे रोग निवारी।।
हम पूजा करने आये, चरणों में शीष झुकावे।
सब रोग शोक मिट जावे, आशीष आपका पावे।।52।।

ॐ ह्रीं श्री क्ष्वेलौषधि ऋद्धी धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन में जल्ल स्वेद बनावे, वह शुभ औषधि बन जावे।
जल्लौषधि ऋद्धिधारी, है सारे रोग निवारी।।
हम पूजा करने आये, चरणों में शीष झुकावे।
सब रोग शोक मिट जावे, आशीष आपका पावे।।53।।

ॐ ह्रीं श्री जल्लौषधि ऋद्धी धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्णादि जिह्वा का मल, बन जाए औषधि मंगल।
मल्लौषधि ऋद्धिधारी, है सारे दोष निवारी।।
हम पूजा करने आये, चरणों में शीष झुकावे।
सब रोग शोक मिट जावे, आशीष आपका पावे।।54।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लौषधि ऋद्धी धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बन जाए मूत्र मल औषधि, हर लेवे पर की व्याधि।
विद्रौषधि ऋद्धिधारी, होते जग मंगलकारी।।
हम पूजा करने आये, चरणों में शीष झुकावे।
सब रोग शोक मिट जावे, आशीष आपका पावे।।55।।

ॐ ह्रीं श्री विप्रौषधि ऋद्धी धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि तन जो छूवे वायु, नश रोग बढ़ावे आयु।
सर्वौषधि ऋद्धिधारी, हर लेते व्याधि सारी।।
हम पूजा करने आये, चरणों में शीष झुकावे।
सब रोग शोक मिट जावे, आशीष आपका पावे।।56।।

ॐ ह्रीं श्री सर्वोषधि ऋद्धी धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्नादि में विष होवे, कहते मुनि के सब खोवे।
मुखनिर्विष ऋद्धिधारी हर, लेते व्याधि सारी।।
हम पूजा करने आये, चरणों में शीष झुकावे।
सब रोग शोक मिट जावे, आशीष आपका पावे।।57।।

ॐ ह्रीं श्री मुखनिर्विषौषधि ऋद्धी धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दृष्टि में औषधि आवे, देखत ही जहर बिलावे।
दृष्टि निर्विष औषध धारी, हर लेते व्याधि सारी।।
हम पूजा करने आये, चरणों में शीष झुकावे।
सब रोग शोक मिट जावे, आशीष आपका पावे।।58।।

ॐ ह्रीं श्री दृष्टि निर्विषौषधि ऋद्धी धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(तांटक छंद)

उत्तम तप करने से मुनिवर, ऐसी ऋद्धि पाते हैं।
मानव से कह दें मरने को, शीघ्र वहीं मर जाते है।।
करुणा के धारी मुनिवर शुभ, कभी न ऐसा करते है।
देते है वरदान सभी को, औरों के दुःख हरते है।।59।।

ॐ ह्रीं श्री दृष्टि आशीर्विष रस ऋद्धी धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोई गल्ती हो जाने पर, क्रोध यदि मुनि को आवे।
दृष्टि पड़ जावे यदि उस पर, शीघ्र मृत्यु को वह पावे।।

करुणा के धारी मुनिवर शुभ, कभी न ऐसा करते है।
देते है वरदान सभी को, औरों के दुःख हरते है।।60।।

ॐ ह्रीं श्री दृष्टिविष रस ऋद्धी धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रुक्ष आहार मुनि के कर में हो, जाता है क्षीर समान।
त्याग करें वह नित्य प्रति कुछ, मुनिवर हैं सद्गुण की खान।।
करुणा के धारी मुनिवर शुभ, कभी न ऐसा करते है।
देते है वरदान सभी को, औरों के दुःख हरते है।।61।।

ॐ ह्रीं श्री क्षीरस्रावी रस ऋद्धी धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देवे रुक्ष आहार यदि कोई, हाथों में हो मधु समान।
त्याग त्याग कर भोजन करते, मुनिवर है सद्गुण की खान।।
करुणा के धारी मुनिवर शुभ, कभी न ऐसा करते है।
देते है वरदान सभी को, औरों के दुःख हरते है।।62।।

ॐ ह्रीं श्री मधुस्रावि रस ऋद्धी धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विष मिश्रित भोजन हाथों में, अमृत मय हो जाता है।
अमृतस्रावी ऋद्धिधर की, महिमा को बतलाता है।।
करुणा के धारी मुनिवर शुभ, कभी न ऐसा करते है।
देते है वरदान सभी को, औरों के दुःख हरते है।।63।।

ॐ ह्रीं श्री अमृतस्रावि रस ऋद्धी धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रूक्ष आहार मुनि के कर में, घृत समान हो मधुर महान।
सर्विस्रावि ऋद्धिधर की, होती है इससे पहिचान।।
करुणा के धारी मुनिवर शुभ, कभी न ऐसा करते है।
देते है वरदान सभी को, औरों के दुःख हरते है।।64।।

ॐ ह्रीं श्री सर्पिस्रावि रस ऋद्धी धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट प्रातिहार्य

सुखद सुन्दर सुर तरु है, अशोक जिसका नाम है।
सौख्यकारी जगत जन का, शोक हरना काम है।।
प्रातिहार्य जिनेन्द्र पाए, चरण में उनके नमन।
यह अर्घ अर्पित मैं करूँ प्रभु, कर्म हों मेरे शमन।।65।।

ॐ ह्रीं तरु अशोक सत् प्रातिहार्य सहित सर्व मंगलदायक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर पुष्प वृष्टि कर रहे हैं, नृत्य करते भाव से।
हम पूजते हैं जिन प्रभु को, सभी मिलकर चाव से।।
प्रातिहार्य जिनेन्द्र पाए, चरण में उनके नमन।
यह अर्घ अर्पित मैं करूँ प्रभु, कर्म हों मेरे शमन।।66।।

ॐ ह्रीं तरु अशोक सत् प्रातिहार्य सहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्य ध्वनि खिरती प्रभु की, जगत में सुखकार है।
जो भव्य जीवों के लिए, शुभ धर्म की आधार है।।
प्रातिहार्य जिनेन्द्र पाए, चरण में उनके नमन।
यह अर्घ अर्पित मैं करूँ प्रभु, कर्म हों मेरे शमन।।67।।

ॐ ह्रीं दिव्यध्वनि सत् प्रातिहार्य सहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतु: षष्टि देवगण शुभ, चंवर ढौरें भाव से।
भक्ति करते नृत्य करके, सिर झुकाते चाव से।।
प्रातिहार्य जिनेन्द्र पाए, चरण में उनके नमन।
यह अर्घ अर्पित मैं करूँ प्रभु, कर्म हों मेरे शमन।।68।।

ॐ ह्रीं चतुषष्ठि चँवर सत् प्रातिहार्य सहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिंहासन है रत्न मण्डित, समवशरण के बीच में।
करें भक्ति भाव से जो, फँसें नहिं जग कीच में।।
प्रातिहार्य जिनेन्द्र पाए, चरण में उनके नमन।
यह अर्घ अर्पित मैं करूँ प्रभु, कर्म हों मेरे शमन।।69।।

ॐ ह्रीं सिंहासन सत् प्रातिहार्य सहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अति प्रभा मण्डित भामण्डल, सूर्य को लज्जित करे।
जो सप्त भव दर्शाय भवि के, हर्ष से मन को भरे।।
प्रातिहार्य जिनेन्द्र पाए, चरण में उनके नमन।
यह अर्घ अर्पित मैं करूँ प्रभु, कर्म हों मेरे शमन।।70।।

ॐ ह्रीं भामण्डल सत् प्रातिहार्य सहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर दुंदुभि बजती सुहावन, प्रभु के गुण गा रही।
देखकर जनता नगर की, गा रही हर्षा रही।।
प्रातिहार्य जिनेन्द्र पाए, चरण में उनके नमन।
यह अर्घ अर्पित मैं करूँ प्रभु, कर्म हों मेरे शमन।।71।।

ॐ ह्रीं देवदुंदुभि सत् प्रातिहार्य सहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीश पर प्रभु के मनोहर, क्षत्र त्रय शुभ झूमते।
कर रहे हैं भक्ति आकर, देव पद को चूमते।।
प्रातिहार्य जिनेन्द्र पाए, चरण में उनके नमन।
यह अर्घ अर्पित मैं करूँ प्रभु, कर्म हों मेरे शमन।।72।।

ॐ ह्रीं छत्रत्रय सत् प्रातिहार्य सहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठाह्न **चौंसठ ऋद्धि पाय, प्रातिहार्य वसु पाए हैं।**
विशद मोक्ष को जाय, पूजा कर जिन देव की।।73।।

ॐ ह्रीं चौसठ ऋद्धि अष्ट प्रातिहार्य सहिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप:- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐ अर्हं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नम:।

समुच्चय जयमाला

दोहा– नेमिनाथ के चरण में, झुका रहे हम माथ।
गाते हैं जयमालिका, भक्तिभाव के साथ।।

(चौपाई छन्द)

नेमीनाथ दया के सागर, करुणाकर हे ज्ञान ! उजागर।
प्रभु हैं जन–जन के हितकारी, ज्ञानी ध्यानी जग उपकारी।।
तीन काल तिय जग के ज्ञाता, जन–जन का प्रभु तुमसे नाता।
तुमने मोक्ष मार्ग दर्शाया, नर जीवन का सार बताया।
सुर नर जिनको वन्दन करते, ऐसे प्रभु जग के दुःख हरते।।
कार्तिक शुक्ला षष्ठी प्यारी, प्रभु जी आप हुए अवतारी।
राजा समुद्र विजय के घर में, रानी शिवादेवी के उर में।।
अपराजित से च्युत हो आये, शौरीपुर नगरी को पाए।
श्रावण शुक्ला षष्ठी आई, शैरीपुर में जन्में भाई।।
अनहद बाजे देव बजाए, सुर–नर पशु मन में हर्षाए।
इन्द्र तभी ऐरावत लाया, सची ने प्रभु को गोद बिठाया।।
माया मय शिशु वहाँ लिटाया, माता ने कुछ जान न पाया।
क्षीर सिंधु से जल भर लाये, वसु योजन के कलश भराये।
पाण्डुक वन अभिषेक कराये, इन्द्रों ने तव चँवर ढुराये।
शंख चिन्ह दाएँ पग पाया, नेमिनाथ सुर नाम सुनाया।।
आयु सहस्त्र वर्ष की पाई, चालीस हाथ रही ऊँचाई।
श्याम वर्ण प्रभु तन का पाया, जग को अतिशय खूब दिखाया।।
नारायण बलदेव से भाई, आन मिले जो हैं अधिकाई।
कौतूहल वश बात ये आई, शक्ति किसमें अधिक है भाई।।

कोई वीर बलदेव को कहते, कोई कृष्ण की हामी भरते।
कोई शम्भू नाम पुकारें, कोइ अनिरुद्ध के देते नारे।।
नेमीनाथ का नाम भी आया, कुछ लोगों को नहीं ये भाया।
ऊँगली कनिष्ठ मोड़ दिखलाई, सीधी करे जो वीर है भाई।।
सब अपनी शक्ति अजमाए, कोई सीधी न कर पाए।
हार मान योद्धा सिरनाये, श्री कृष्ण मन में घबड़ाए।।
राज्य छीन न लेवे भाई, कृष्ण ने युक्ति एक लगाई।
जल क्रीड़ा की राह दिखाई, पटरानी कई साथ लगाई।।
नेमी जामवती से बोले, भाभी मेरी धोती धो ले।
भाभी ने तब रौब जमाया, मैंने पटरानी पद पाया।।
तुम भी अपना ब्याह रचाओ, रानी पा धोती धुलवाओ।
मेरे पति चक्र के धारी, शंख बजाते विस्मयकारी।।
तुमको जरा लाज नहिं आई, हमसे छोटी बात सुनाई।
रोम–रोम प्रभु का थर्राया, उनको सहन नहीं हो पाया।।
आयुधशाला पहुँचे भाई, शैया नाग की प्रभु बनाई।
पैर की ऊँगली को फैलाया, उस पर रख कर चक्र चलाया।
पीछे हाथ में शंख उठाया, नाक के स्वर से उसे बजाया।।
उससे तीन लोक थर्राया, श्री कृष्ण का मन घबड़ाया।
जाकर भाई को समझाया, उनके मन को धैर्य दिलाया।।
शादी की तब बात चलाई, जूनागढ़ पहुंचे फिर भाई।
उग्रसेन से कृष्ण सुनाए, राजुल नेमि से परणाएँ।।
उग्रसेन हर्षित हुए भारी, शीघ्र ब्याह की की तैयारी।
कृष्ण ने तब की मायाचारी, नृप बुलवाए मांसाहारी।।

नेमि दूल्हा बनकर आए, बाड़े में कई पशु रंभाए।
करुणा से नेमि भर आए, पूछा क्यों यह पशु बंधाए।।
इन पशुओं का मांस बनेगा, इन लोगों में हर्ष मनेगा।
सुनते ही वैराग्य समाया, पशुओं का बन्धन खुलबाया।।
कंगन तोड़े वस्त्र उतारे, गिरनारी जा दीक्षा धारे।
राजुल सुनकर के घबड़ाई, दौड़ प्रभु के चरणों आई।।
प्रभु को राजुल ने समझाया, नहिं माने तो साथ निभाया।
केशलुंच कर दीक्षा धारी, बनी आर्यिका राजुल नारी।
श्रावण शुक्ला षष्ठी पाए, पद्मासन से ध्यान लगाए।।
सहस एक नृप दीक्षा धारे, द्वारावति में लिए आहारे।
श्रावण सुदि नौमी दिन पाया ! वरदत्त ने यह पुण्य कमाया।।
अश्विन सुदि एकम् दिन आया, प्रभु ने केवलज्ञान जगाया।
सवशरण मिल देव बनाए, दिव्य देशना प्रभु सुनाए।।
ग्यारह गणधर प्रभु ने पाए, वरदत्त उनमें प्रथम कहाए।
आषाढ़ शुक्ल आठें दिन भाई, ऊर्जयंत से मुक्ति पाई।।
सौख्य अनन्त प्रभु ने पाया, नर जीवन का सार बताया।
हम भी उस पदवी को पाएँ, कर्म नाश कर मुक्ति पाएँ।।

ॐ ह्रीं सर्व मंगलदायक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

शांति मिले विशेष, रोग शोक चिंता मिटे।
पाप शाप हो नाश, विशद मोक्ष पदवी मिले।।

(पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्)

श्री नेमिनाथ की आरती

तर्ज– भक्ति बे करार है....

नेमिनाथ दरबार है, प्रभु की जय जयकार है।
आरति करने आये स्वामी, आज तुम्हारे द्वार हैं।।
सौरीपुर में जन्म लिए प्रभु, घर–घर मंगल छाया जी।
इन्द्र सुरेन्द्र महेन्द्र सभी ने, प्रभु का न्हवन कराया जी।।
नेमिनाथ दरबार है, प्रभु की जय जयकार है।
आरति करने आये स्वामी, आज तुम्हारे द्वार हैं।।1।।
नेमिकुंवर जी ब्याह रचाने, जूनागढ़ को आये जी।
पशुओं का आक्रन्दन लखकर, उनको तुरत छुड़ाए जी।।
नेमिनाथ दरबार है, प्रभु की जय जयकार है।
आरति करने आये स्वामी, आज तुम्हारे द्वार हैं।।2।।
मन में तब वैराग्य समाया, देख दशा संसार की।
राह पकड़ ली तभी प्रभु ने, महाशैल गिरनार की।।
नेमिनाथ दरबार है, प्रभु की जय जयकार है।
आरति करने आये स्वामी, आज तुम्हारे द्वार हैं।।3।।
पञ्च मुष्टि से केशलुंच कर, भेष दिगम्बर धारे जी।
कठिन तपस्या के आगे सब, कर्म शत्रु भी हारे जी।।
नेमिनाथ दरबार है, प्रभु की जय जयकार है।
आरति करने आये स्वामी, आज तुम्हारे द्वार हैं।।4।।
केवलज्ञान जगाकर प्रभु ने, जग को राह दिखाई जी।
भवसागर का पार करूँ, यह 'विशद' भावना भाई जी।।
नेमिनाथ दरबार है, प्रभु की जय जयकार है।
आरति करने आये स्वामी, आज तुम्हारे द्वार हैं।।5।।

●●●

श्री नेमिनाथजी की आरती

म्हारे नेमिनाथजी की सुन्दर प्रतिमा, मंगलकारी जी।
मंगलकारीजी जगमें, संकट हारी जी।।
म्हारे नेमिनाथ...।।1।।

गिरि गिरनार शिखर के ऊपर, प्रभु सम्यक् तप धारे जी।
होकर के निर्ग्रन्थ दिगम्बर अपने वस्त्र उतारे जी।।
म्हारे नेमिनाथ...।।2।।

समुद्र विजय गृह सौरीपुर में, आप लिये अवतारे जी।
शिवा देवी को धन्य किया है, जागे भाग्य हमारे जी।।
म्हारे नेमिनाथ...।।3।।

पशुओं का आक्रन्दन सुनकर, जागा शुभ वैराग्य जी।
प्रभु दर्शन का अवसर पाया, जागा मम् सौभाग्य जी।।
म्हारे नेमिनाथ...।।4।।

होकर के निर्विक्त जहाँ से, आतम ध्यान लगाया जी।
कर्म घातिया नाश किये प्रभु, केवलज्ञान जगाया जी।।
म्हारे नेमिनाथ...।।5।।

दिव्य देशना आप सुनाए, किया जगत् कल्याण जी।
सर्व कर्म का नाश किए तव, पाये पद निर्वाण जी।।
म्हारे नेमिनाथ...।।6।।

मोक्ष महल में जाने का शुभ, हमने भाव बनाया जी।
'विशद' मुक्ति को पाने हेतु, चरण शरण में आया जी।।
म्हारे नेमिनाथ...।।7।।

●●●

प्रशस्ति

दोहा- भरत क्षेत्र के मध्य है, भारत देश महान।
वृषभादि चौबीस शुभ, जहाँ हुए भगवान।।

भारत में कई प्रान्त हैं, एक रहा गुजरात।
गरिमा से करता कई, देशों को भी मात।।
ऊर्जयन्त गिरनार गिरि, जग में रहा महान।
नेमिनाथ भगवान ने, पाया पद निर्वाण।।
वन्दन करके तीर्थ पर, मिलता है सुख चैन।
दर्शन करने को सभी, जाते जैन अजैन।।
काल दोष से या कहें, हुई है कोई भूल।
लोग धर्म से च्युत हुए, चले नहीं अनुकूल।।
वैष्णव मत के सन्त भी, पहुँचे दर्शन हेत।
जनता भी पहुँची वहाँ, निज परिवार समेत।।
संतों में लालच बढ़ा, काफी पाया दान।
बना लिया फिर वहीं पर, अपना निज स्थान।।
दत्तत्रय के नाम का, माने तीरथ धाम।
कब्जा जबरन कर लिया, चला न कोई पैगाम।।
साधु कई रहते वहाँ, लेकर के त्रिशूल।
नेमिनाथ के नाम से, हो जाते प्रतिकूल।।
उन प्रभु के गुणगान को, लिक्खा एक विधान।
पच्चिस सौ चौंतिस रहा, महावीर निर्वाण।।
जिला एक अजमेर है, प्रान्त है राजस्थान।
पावन वर्षा योग में, श्रावण मास महान।।
सोलह दिन के पक्ष में, सोलह हुए विधान।
भक्ति भाव से मिल किए, जिनवर का गुणगान।
नेमिनाथ विधान से, पूजा करके लोग।
बल बुद्धि वैभव सभी, का पावें संयोग।।
भूल चूक को भूलकर, पढ़े भाव के साथ।
कर्म नाश कर वह बने, शिवनगरी के नाथ।।

सोरठा- विशद भाव के साथ, नेमिनाथ पूजा करें।
पावें मुक्ति बास, अजर अमर पद को लहें।।

●●●